अगहन मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 310 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज गुरूवार 25 नवम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

परम बीर सिंह ने बता दिया अपने ठिकाने का पता, बोले- चंडीगढ़ में हू, जल्द जांच में शामिल होऊंगा

मुंबई। मुंबई के पूर्व पुलिस आयुक्त परम बीर सिंह ने कहा कि वह चंडीगढ़ में हैं और जल्द ही मुंबई में उनके खिलाफ चल रहे मामलों की जांच में शामिल होंगे। उन्होंने इंडिया टुडे टीवी के साथ बातचीत में अपने ठिकाने का खुलासा किया है। आपको बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में सुरक्षा देने संबंधित मांग वाली याचिका पर सुनवाई के दौरान उनसे उनका ठिकाना बताने के लिए कहा था। परम बीर सिंह के खिलाफ मुंबई और ठाणे में पांच मामले दर्ज हैं। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को परम बीर सिंह को कथित जबरन वसूली के एक मामले में गिरफ्तारी से सुरक्षा प्रदान की थी। कोर्ट ने इसे मंजूर करते हुए परम बीर सिंह को जांच में शामिल होने का निर्देश दिया था। सुनवाई के दौरान परम बीर सिंह के वकील ने कहा था कि वह देश में ही हैं। उनके वकील ने कहा था, ₹वह फरार नहीं होना चाहते हैं। वह भागना नहीं चाहते हैं। हालांकि, मुद्दा यह है कि जैसे ही वह महाराष्ट्र में प्रवेश करेंगे, उनके जीवन के लिए एक बहुत ही वास्तविक खतरा है। मार्च 2021 में बर्खास्त किए गए पुलिस अधिकारी सचिन वाझे की गिरफ्तारी के बाद परम बीर सिंह को मुंबई पुलिस आयुक्त के पद से हटा दिया गया था। वाझे को मुंबई में उद्योगपति मुकेश अंबानी के आवास के पास विस्फोटकों से लदी एक गाड़ी के मामले में गिरफ्तार किया गया था। मुंबई पुलिस प्रमुख के पद से हटाए जाने के बाद, परम बीर सिंह ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे को लिखे एक पत्र में राज्य के तत्कालीन गृह मंत्री अनिल देशमुख के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगाए थे।

राकेश टिकैत का ऐलान

60 ट्रैक्टर और 1 हजार लोगों के साथ संसद तक जाएंगे किसान

नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र मोदी की ओर से तीन नए कृषि कानूनों की वापसी के ऐलान के बाद भी किसान संगठन आंदोलन जारी रखने पर अड़े हैं। इस बीच किसान नेता राकेश टिकैत ने संसद के शीत सत्र के पहले दिन ट्रैक्टर रैली निकालने का ऐलान किया है। भाकियू के प्रवक्ता राकेश टिकैत ने कहा कि 29 नवंबर को शीत सत्र के पहले दिन 1000 लोग 60 ट्रैक्टर लेकर संसद की ओर कूच करेंगे। राकेश टिकैत ने एएनआई से कहा, 'जो सड़के सरकार द्वारा खोली गई हैं। उन सड़कों से ट्रैक्टर गुजरेंगे। हम पर पहले सड़कों को ब्लॉक करने का आरोप लगाया गया था। हमने सड़क को अवरुद्ध नहीं किया था।

सड़कों को ब्लॉक करना करना हमारे आंदोलन का हिस्सा नहीं है। हमारा आंदोलन सरकार से बात करना है। हम सीधे संसद जाएंगे। राकेश टिकैत का बयान ऐसे समय में आया है, जब केंद्रीय कैबिनेट की बुधवार को ही मीटिंग होने वाली है, जिसमें कृषि कानूनों की वापसी के लिए बिल पेश करने पर मुहर लगेगी। इसे संसद के शीतकालीन सत्र की शुरूआत में ही पेश किया जा सकता है।

कृषि कानूनों की वापसी का पहला कदम, कैबिनेट से मंजूरी, अब संसद में आएगा विधेयक

नई दिल्ली। तीन नए कृषि कानूनों की वापसी की संवैधानिक प्रक्रिया का पहला कदम सरकार ने आगे बढ़ा दिया है। बुधवार को मोदी सरकार की कैबिनेट ने इन कानूनों का वापसी वाले बिल को मंजूरी दे दी है और अब इसे संसद में पेश किया जाएगा। पीएम नरेंद्र मोदी ने बीते शुक्रवार को ही इन कानूनों का वापसी का ऐलान किया था। अब इस पर कैबिनेट की मुहर लगने के बाद बिल को संसद के

शीत सत्र में पेश किया जाएगा। संसद का सत्र 29 नवंबर से शुरू हो रहा है और पहले ही दिन यह बिल पेश होने वाला है। हालांकि अब भी संयुक्त किसान मोर्चा से जुड़े 40 संगठन दिल्ली की सीमाओं पर डटे हुए हैं और उनका कहना है कि एमएसपी समेत 6 मांगों के पूरा होने पर ही घर वापसी करेंगे।

इस बीच किसान संगठनों ने ऐलान किया है कि 29 नवंबर को 60 ट्रैक्टरों के साथ 1,000 किसान संसद की ओर कूच करेंगे। यही नहीं 26 नवंबर को किसानों ने एक बार फिर से दिल्ली की सीमाओं पर आंदोलन का फैसला लिया है।

जम्मू-कश्मीर में जारी है आतंकवाद पर प्रहार, मुठभेड़ में 3 दहशतगर्द ढेर

नई दिल्ली। जम्मू और कश्मीर में सुरक्षा बलों तथा पुलिस को अहम कामयाबी हाथ लगी है। यहां सुरक्षा बलों और पुलिस ने तीन आतंकवादियों को ढेर किया है। जानकारी के मुताबिक तीनों आतंकवादियों को श्रीनगर के रामबाग इलाके में मार गिराया गया है। मारे गये आतंकवादियों की पहचान की कोशिश की जा रही है। पूरे इलाके में सुरक्षा बलों ने घेराबंदी की है। जम्मू और कश्मीर में पिछले कुछ महीनों से आतंकियों का दलन जारी है। हाल ही में खूंखार आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़े तीन आतंकवादियों को गिरफ्तार किया गया था। बताया गया था कि श्रीनगर में एक कश्मीरी पंडित व्यवसायी की दुकान पर काम करने वाले सेल्समैन की हत्या के आरोप में इन्हें गिरफ्तार किया गया था।

अखिलेश यादव का बड़ा चुनावी दांव

किसान आंदोलन में मरे किसानों के परिवारों को 25-25 लाख देने का वादा

लखनऊ। तीनों कृषि कानून वापसी की घोषणा के बाद भी यूपी विधानसभा चुनाव में इसे मुद्दा बनाने की तैयारी समाजवादी पार्टी ने कर ली है। छोटे दलों के साथ गठबंधन को अंतिम रूप देने में जुटे समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बुधवार को बड़ा ऐलान किया। अखिलेश यादव ने कहा कि यूपी में सरकार बनते ही किसान आंदोलन के दौरान मरे किसानों के परिवारों को 25-25 लाख रुपये दिये जाएंगे। अखिलेश ने ट्वीट करके इसकी जानकार दी। अखिलेश ने लिखा कि किसान का जीवन अनमोल होता है क्योंकि वो ह्यअन्यह्ल के जीवन के लिए ह्यअन्नह्ल उगाता है। हम वचन देते हैं कि 2022 में समाजवादी पार्टी की सरकार आते ही किसान आंदोलन के शहीदों को 25 लाख की ह्यकिसान शहादत सम्मान राशिह्ल दी जाएगी।

किसानों को लेकर अखिलेश लगातार बीजेपी पर हमले कर रहे हैं। इससे पहले अखिलेश यादव ने कहा था कि अमीरों की भाजपा ने भूमिअधिग्रहण व काले कानूनों से गरीबों-किसानों को ठगना चाहा। कील लगाई, बाल खींचते कार्टून बनाए, जीप चढ़ाई लेकिन सपा की पूर्वांचल की विजय यात्रा के जन समर्थन से डरकर काले-कानून वापस ले ही लिए। भाजपा बताए सैकड़ों किसानों की मौत के दोषियों को सजा कब मिलेगी।

केंद्रीय कैबिनेट ने तीनों नए कृषि कानूनों की वापसी के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 दिन पहले यानी 19 नवंबर को कानूनों को वापस लेने का ऐलान किया था। कैबिनेट की मंजूरी के बाद कानून वापसी के प्रस्ताव को संसद के शीतकालीन सत्र में दोनों सदनों में पारित करवाया जाएगा। इसके बाद किसान आंदोलन की वजह बने तीनों कृषि कानून खत्म हो जाएंगे। केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल की मां कृष्णा पटेल ने बुधवार को अखिलेश यादव से मुलाकात की। अनुप्रिया पटले और कृष्णा पटेल में विवाद के बाद दोनों ने अलग अलग राह चुन ली है। मां-बेटी को अलग अलग दल का नाम और अलग सिंबल भी मिल चुका है।

गौतम अडानी बने एशिया के सबसे रईस अरबपति, मुकेश अंबानी से छिना ताज

नई दिल्ली। अडानी समूह के मुखिया गौतम अडानी अब एशिया के सबसे दौलतमंद अरबपति बन गए हैं। गौतम अडानी को पहली बार ये सफलता मिली है। दिलचस्प बात ये है कि गौतम अडानी ने भारत के ही मुकेश अंबानी को पछाड़ कर ये उपलब्धि हासिल की है। आपको बता दें कि लंबे समय से मुकेश अंबानी शीर्ष अरबपति बने हुए थे। किसकी कितनी दौलतः ईटी नाउ की रिपोर्ट के मुताबिक ग्रुप मार्केट कैप के आधार पर गौतम अडानी ने मुकेश अंबानी को पछाड़ते हुए एशिया के सबसे अमीर व्यक्ति का खिताब हासिल किया है। आपको यहां बता दें कि मुकेश अंबानी की एक कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज शेयर बाजार में लिस्टेड है। वहीं, गौतम अडानी की कुल छह कंपनियां शेयर बाजार में लिस्टेड हैं।

हालांकि, दौलत आंकने वाली वेबसाइट ब्लूमबर्ग बिलेनियर इंडेक्स ने अरबपतियों की रैंकिंग को अपडेट नहीं किया है। वेबसाइट पर अब भी मुकेश अंबानी एशिया के सबसे दौलतमंद अरबपति बने हुए हैं। मुकेश अंबानी की दौलत 91 बिलियन डॉलर है और वह फिलहाल दुनिया के 12वें सबसे रईस अरबपति हैं। वहीं, गौतम अडानी की दौलत 88.8 बिलियन डॉलर के स्तर पर है। गौतम अडानी की रैंकिंग 13वीं है। ये संभव है कि अगले 24 घंटे में वेबसाइट पर रैंकिंग अपडेट हो जाए। क्यों गिरी अंबानी की दौलतः दरअसल, मुकेश अंबानी की रिलायंस के स्टॉक में लगातार गिरावट आ रही है। बीते तीन कारोबारी दिन में रिलायंस का शेयर भाव 6 फीसदी तक टूट गया है। मुकेश अंबानी की रिलायंस और सऊदी अरामको के बीच डील कैंसिल होने की वजह से स्टॉक में गिरावट देखने को मिल रही है। अब इस डील पर नए सिरे से मंथन होगा। करीब तीन साल के प्रयास के बाद डील कैंसिल होने से निवेशकों का सेंटिमेंट बिगड़ा है। वहीं, इस दौरान अडानी ग्रुप की लिस्टेड कुछ कंपनियों के शेयर भाव में तेजी आई है। किस कंपनी का क्या हालः रिलायंस इंडस्ट्रीज का शेयर भाव- 2350.90 रुपए (1.48 फीसदी नुकसान) है। वहीं, मार्केट कैपिटल 14 लाख 91 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा है। वहीं, गौतम अडानी की कंपनियों का शेयर भाव कुछ इस तरह है।

- अडानी एंटरप्राइजेजः शेयर भाव- 1754.65 रुपए (2.76 फीसदी बढ़त), मार्केट कैपिटल- 1,92,978 करोड़ रुपए
- अडानी टोटलः शेयर भाव-1648.35 रुपए (1.58 फीसदी नुकसान), मार्केट कैपिटल-1,81,287 करोड़ रुपए
- अडानी ग्रीन एनर्जीः शेयर भाव- 1387.70 रुपए (1.37 फीसदी नुकसान), मार्केट कैपिटल- 2,17,038 करोड़ रुपए
- अडानी पोर्टः शेयर भाव-762.75 रुपए (4.59 फीसदी बढ़त), मार्केट कैपिटल- 1,55,734 करोड़ रुपए
- अडानी पावरः शेयर भाव- 105.95 रुपए (0.05 फीसदी बढ़त), मार्केट कैपिटल-40,864 करोड़ रुपए
- अडानी ट्रांसमिशनः शेयर भाव-1924.45 रुपए (0.85 नुकसान), मार्केट कैपिटल- 2,11,652 करोड़ रुपए

कश्मीर रखना चाहते हैं तो अनुच्छेद 370 बहाल करें, बोलीं महबूबा मुफ्ती-

ब्याज के साथ वापस करें नाम और पहचान

नई दिल्ली। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) प्रमुख महबूबा मुफ्ती ने बुधवार को केंद्र से कहा कि यदि वह 'कश्मीर रखना' चाहती है तो अनुच्छेद 370 बहाल करे और कश्मीर मुद्दे का हल करे। उन्होंने कहा कि लोग 'अपनी पहचान एवं सम्मान' वापस चाहते हैं और वह भी ब्याज के साथ। बनिहाल के नील गांव में एक जनसभा को संबोधित करते हुए महबूबा ने यह भी कहा कि जम्मू कश्मीर के लोगों ने "हमारी किस्मत का फैसला महात्मा गांधी के भारत के साथ किया था, जिसने हमें अनुच्छेद 370 दिया, हमारा अपना संविधान और ध्वज दिया" तथा (नाथूराम) गोडसे के साथ नहीं रह सकतें। महबूबा ने लोगों से एकजुट होने और "संविधान द्वारा प्रदत्त विशेष दर्जा बहाल करने के समर्थन में उनके संघर्ष तथा लोगों की पहचान एवं सम्मान की सुरक्षा" के लिए अपनी आवाज मुखर करने को कहा। पीडीपी प्रमुख ने कहा, "हमने महात्मा गांधी के भारत के साथ अपनी किस्मत का फैसला किया, जिसने हमें अनुच्छेद 370, हमारा संविधान और ध्वज दिया। यदि वे हमारी हर चीज छीन लेंगे तो हम भी अपना फैसला वापस ले लेंगे। उन्हें सोचना होगा कि यदि वे अपने साथ जम्मू कश्मीर को रखना चाहते हैं तो उन्हें अनुच्छेद 370 बहाल करना होगा और कश्मीर मुद्दे का हल करना होगा।

महबूबा ने कहा, "जम्मू कश्मीर के लोग गोडसे के भारत के साथ नहीं रह सकते। हम महात्मा गांधी का भारत चाहते हैं, भारतीय संविधान से हमें मिली हमारी पहचान और सम्मान वापस चाहते हैं तथा मैं आश्वस्त हूं कि उन्हें ब्याज के साथ इसे लौटाना पड़ेगा। "उन्होंने कहा इतिहास गवाह है कि किसी भी शक्तिशाली राष्ट्र ने बंदूक के दम पर लोगों पर शासन नहीं किया है। उन्होंने कहा, "आप कश्मीर को लाठी या बंदूक के दम पर नहीं रख सकते...महाशक्ति

अमेरिका अपनी ताकत के बल पर अफगानिस्तान में शासन करने में नाकाम रहा और उसे वहां से जाना पड़ा।"

उन्होंने भारतीय जनता पार्टी का नाम लिये बगैर कहा, "हमारे खुद के कुछ लोग उस वक्त नाराज हो जाते हैं जब मैं जम्मू कश्मीर में शांति और (कश्मीर) मुद्दे के हल के लिए पाकिस्तान से वार्ता करने की मांग करती हूं। वे मुझे देशद्रोही और राष्ट्र विरोधी करार देते हैं।" उन्होंने कहा, "आज वे लोग तालिबान और चीन के साथ भी बातचीत कर रहे हैं, जिसने (चीन ने) लद्दाख में हमारी जमीन हथिया ली है और अरूणाचल प्रदेश में एक गांव भी बसा दिया है। उन्होंने 15 नवंबर को श्रीनगर के हैदरपोरा में एक विवादास्पद मुठभेड़ में मारे गये आम लोगों के परिवार के सदस्यों के प्रदर्शन का जिक्र करते हुए कहा, "आज चुनाव नहीं है और मैं आपका वोट नहीं मांग रही। जब चुनाव का समय आएगा, जिसे मन हो उसे आप वोट दें।

जम्मू-कश्मीर में 25 हाईवे प्रोजेक्ट्स की शुरूआत करेंगे नितिन गडकरी, सेनाओं की मूवमेंट होगी आसान

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी बुधवार को जम्मू में 11,721 करोड़ रुपये के निवेश से कुल 257 किलोमीटर लंबी 25 राष्ट्रीय राजमार्ग परिय जनाओं की आधारशिला रखेंगे। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान के मुताबिक, ये परियोजनाएं जम्मू और कश्मीर घाटी के बीच हर मौसम में संपर्क प्रदान करेंगी। मंत्रालय ने कहा कि ये क्षेत्र की कृषि, औद्योगिक और सामाजिक-आर्थिक प्रगति के साथ-साथ रक्षा बलों की तेज आवाजाही के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। इसने आगे कहा कि परियोजनाएं विभिन्न जिला मुख्यालयों की ओर जाने वाली सभी प्रमुख सड़कों को जोड़े गी और रोजगार और स्वरोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करेंगी। मंत्रालय ने कहा, ₹परियोजनाओं में कुछ खंडों का पुनर्वास और उन्नयन, पुल और सुरंग का निर्माण और ब्लैक स्पॉट का सुधार शामिल होगा।

राज ठाकरे के नए घर पहुंचे देवेंद्र फडणवीस ने किया लंच, बीएमसी चुनाव के लिए मनसे से गठबंधन की अटकलें तेज

मुंबई। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री और बीजेपी नेता देवेंद्र फडणवीस ने बुधवार को महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख राज ठाकरे से मुलाकात किया। दोनों नेताओं के बीच में हुई मुलाकात के बाद राजनीति भी गर्म हो गई है। राजनीतिक गलियारों में अगले साल की शुरूआत में महत्वपूर्ण बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) चुनावों से पहले दोनों दलों के बीच संभावित गठजोड़ की अटकलें भी तेज हो गई हैं।

राज ठाकरे के घर पहुंचे फडणवीस करीब डेढ़ घंटे तक रहे और लंच भी किया। फडणवीस और उनकी पत्नी अमृता ने मध्य मुंबई के दादर में राज ठाकरे, उनकी पत्नी शर्मिला के नए आवास 'शिवतीर्थ' में मुलाकात की। इन चारों को मनसे अध्यक्ष के घर की बालकनी में बातें करते देखा गया। दोनों नेताओं के बीच हुई मुलाकात को बीजेपी के पदाधिकारियों ने एक सौहार्दपूर्ण और पारिवारिक मीटिंग बताया है, वहीं, राजनीतिक

विश्लेषकों का मानना है कि मुंबई निकाय चुनाव को देखते हुए यह महत्वपूर्ण बैठक हो सकती है।

बता दें कि 2014 और 2019 के बीच महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, फडणवीस ने राज ठाकरे के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध बनाए रखा था। 2017 के बीएमसी चुनावों में, बीजेपी ने मुंबई में शिवसेना गढ़ में 82 सीटों पर जीत हासिल की थी। हालांकि, शिवसेना ने 84 सीटें जीतकर सत्ता बरकरार रखी थी। भाजपा अब शिवसेना पर स्पष्ट बढ़त हासिल करना चाहती है, जो पिछले तीन दशकों से नगर निकाय पर कब्जा जमाए हुई है। पिछले बीएमसी चुनाव में कांग्रेस 31 सीटों के साथ तीसरे स्थान पर खिसक गई थी, जबकि एनसीपी और एमएनएस को क्रमशः 9 और 7 सीटें मिली थीं। एक साल बाद मनसे के सात में से छह पार्षद शिवसेना में शामिल हो गए, जिससे पार्टी को बीजेपी पर बढ़त मिल गई। राज ठाकरे 6 नवंबर को अपने जिस नए घर में शिफ्ट किए हैं वो उनके पुराने घर 'कृष्ण कुंज' के ठीक बगल में है।

खबर संक्षेप

अपर मुख्य सचिव बेसिक व निदेशक बेसिक शिक्षा को जमानती वारंट

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने प्रयागराज में बेसिक शिक्षा के निदेशक, सर्वेन्द्र विक्रम बहादुर सिंह और अपर मुख्य सचिव दीपक कुमार के खिलाफ जमानती वारंट जारी किया है। कोर्ट ने दोनों को 20 दिसंबर को हाजिर होने का निर्देश दिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अब्दुल मोईन ने रेखा सिंह की अवमानना याचिका पर दिया है।

कोर्ट ने 8 नवंबर को 21 सितंबर को जारी आदेश का पालन करने का आदेश दिया था। कहा था कि आदेश का पालन नहीं किया गया तो दोनों अधिकारी हाजिर हो। विपक्षी अधिवक्ता निशीथ यादव का नाम काज लिस्ट में छपा है। फिर भी वे विपक्षियों की तरफ से कोर्ट में नहीं आए। कोर्ट ने मृतक आश्रित कोटे में नियुक्ति की अर्जी दाखिल करने में हुई देरी की माफी पर निर्णय लेने का आदेश दिया था। बीएसए ने 24 अगस्त को निदेशक को संस्तुति भेजी थी। कोर्ट ने आदेश पालन का मौका दिया था। फिर भी कोई जानकारी नहीं दी गई और न ही अधिकारियों की तरफ से कोई हाजिर हुआ।

सड़क हादसे में जीजा साली की हुई मौत, घर में मचा कोहराम

एक बाइक में अधिक लोगों के बैठने से हुआ हादसा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। बुधवार को हुए सड़क हादसे में जीजा और साली की मौके पर ही मौत हो गई। बताया जा रहा है कि एक शख्स ने अपनी बाइक पर टंकी के पास दो बच्चे बैठाए हुए थे। सामने से कार आने पर वह हैंडल नहीं मोड़ पाया। ऐसे में बाइक कार से जा भिड़ी। मौके पर पहुंची पुलिस ने तीन लोगों को गंभीर हालत में स्वरूपरानी अस्पताल में भर्ती कराया गया है,वहीं कार चालक फरार हो गया ' जानकारी के अनुसार फाफामऊ थाना क्षेत्र के रुदापुर गांव निवासी 33 वर्षीय तस्लीम के बच्चे का मंगलवार को जन्मदिन था। इस कार्यक्रम में शामिल होने के लिए तस्लीम के ससुराल से रिश्तेदार आए थे। बुधवार सुबह वह अपनी बाइक पर अपनी साली 9 वर्षीय बुशरा, 10 वर्षीय सानिया, 12 वर्षीय निकहत और समीर को बैठाकर करैली अपने ससुराल आ रहा था। तभी सामने से आ रही एक कार ने टक्कर मार दी, इससे तस्लीम व बुशरा की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि

हादसे के बाद घटना स्थल का दृश्य

तस्लीम ने अपनी बाइक पर ही 5 लोगों को बिठाया था। बाइक पर नियंत्रण नहीं हो पाने से ही यह हादसा हुआ। हादसे से वहां अफरा-तफरी मच गई। पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल ले गई जहां डाक्टरों ने तस्लीम और बुसरा को मृत घोषित कर दिया। थाना खुल्दाबाद इंस्पेक्टर अमित सिंह का कहना है कि कार व बाइक में भिड़त हुई है। बाइक पर कितने लोग बैठे थे यह कह पाना अभी मुश्किल है। दो लोगों की मौत हो गई वहीं तीन गंभीर रूप से घायल है, चालक कार छोड़कर भाग गया है,जांच की जा रही है।

प्राथमिक विद्यालय चनैनी में निःशुल्क नेत्र शिविर आज

करछना। तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत चनैनी गांव में प्राथमिक विद्यालय पर गुरूवर को नेत्र शिविर का आयोजन किया गया है, जिसमें नेत्र रोगियों के आँखों की निःशुल्क जाँच कुशल चिकित्सको के द्वारा कराई जाएगी। जिसमें आखों के पीडितो को जांच के बाद निःशुल्क चस्मा व लेन्स एवं दवाऐ दी जाएगी उक्त आशय की जानकारी गांव के प्रधान धीतेश तिवारी महा मंत्री प्रधान संघ करछना ने लोगों से अपील की है कि नेत्रों से पीड़ित लोग शिविर में शिरकत कर लाभ उठाऐ।

जगह न होने के कारण आंगनवाड़ी केंद्र बंद

सहसों। बहादुरपुर विकासखंड क्षेत्र के सिंगरामऊ गांव के प्राथमिक विद्यालय में विगत कई वर्षों से चल रहे आंगनबाड़ी केंद्र प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्या द्वारा बंद करा दिया गया। प्राथमिक विद्यालय सिंगरामऊ के प्रधानाचार्या का कहना है कि विद्यालय में जगह की दिक्कत है उपयुक्त जगह नहीं है इसलिए यहां आंगनवाड़ी केंद्र का संचालन नहीं हो सकता। इसकी सूचना आंगनवाड़ी कार्यकत्री उषा द्विवेदी ने अपने सुपरवाइजर को दिया तो सुपरवाइजर ने कार्यकत्री उषा द्विवेदी को निर्देशित किया कि पंचायत भवन में आंगनवाड़ी केंद्र चलाइए परंतु जब इस संदर्भ में ग्राम पंचायत सिंगरामऊ के ग्राम पंचायत अधिकारी एवं ग्राम प्रधान से बात हुआ तो दोनों पदस्थ ने पंचायत भवन में आंगनवाड़ी केंद्र चलाए जाने से साफ इनकार कर दिया। इस स्थिति में आंगनवाड़ी कार्यकत्री के सामने विकट समस्या उत्पन्न हो गई है कि आंगनवाड़ी केंद्र कहां चलाया जाए।

विभिन्न मांगों को लेकर प्रदर्शनरत बिजली कर्मियों ने सौंपा ज्ञापन

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश बिजली कर्मचारी संघ के बैनर तले प्रदर्शनरत बिजली कर्मियों ने ज्ञापनकर प्रदर्शन समाप्त करने का निर्णय लिया है। बिजली कर्मियों ने संविदा कर्मियों को स्थाई करने, मीटर रीडरों की समस्याओं सहित अन्य मांगों पर तत्काल निर्णय लिए जाने की मांग की है। मुख्य अभियंता कार्यालय पर आयोजित धरना-प्रदर्शन में बिजली कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष जवाहर लाल विश्वकर्मा ने कहा कि आउटसोर्स पर भूतपूर्व सैनिकों से काम लेने पर 28 हजार का वेतन और उसी काम के लिए संविदा कर्मियों के लिए आठ-नौ हजार का वेतन दिया जा रहा है, यह स्वीकार नहीं किया जाएगा। मीटर रीडर कर्मियों की वेतन संबंधी समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उत्तर प्रदेश बिजली कर्मचारी संघ के प्रांत व्यापी आह्वान पर आयोजित प्रदर्शन की अध्यक्षता क्षेत्रीय अध्यक्ष उत्तर प्रदेश बिजली कर्मचारी संघ मानवेंद्र सिंह और संयोजन क्षेत्रीय मंत्री हेमंत नंदन ओझा ने किया। सभा को प्रांतीय मंत्री प्रांतीय मंत्री चंद्रभान राय, अखिलेश्वर श्रीवास्तव, जुबेर अहमद, राजकुमार, शिव नारायण तिवारी, प्रकाशचंद यादव, कमाल अहमद नौसे, अजय कुमार सिंह, शिवमणि त्रिपाठी, संदीप मिश्र, डेविट राजपूत, रामसूरत, मोतीलाल, लतीफ अहमद, कमलेश कुमार, अर्जुन सिंह प्रतापगढ़, मीटर रीडर कर्मी नेता शैलेंद्र यादव, अरुणेश पाल, अजीत यादव,अभिषेक मिश्रा आदि ने संबोधित किया। अंत में पावर कारपोरेशन के अध्यक्ष को संबोधित ज्ञापन मुख्य अभियंता कार्यालय पर सौंपा गया। अभियंता (प्रशासन) जय शंकर राय ने उक्त मामलों पर उचित कार्यवाही किएजाने का भरोसा दिलाया। इस प्रदर्शन में गैर जनपदों से आए कर्मचारी भी शामिल हुए।

मांगे पूरी होने तक चलेगा आमरण अनशन : राजू चौबे

कोरांव में किसानों का अनिश्चित कालीन धरना

अखंड भारत संदेश

कोरांव। सोसाइटी पर डीएपी खाद की किल्लत बहराइचा बघोल बजरंग बली घाट पर पुल निर्माण सभी क्रय केंद्रों के खोले जाने के संबंध में ग्राम सभा बेरी समेत अन्य गांवों में जिला पंचायत एवम अन्य सरकारी जमीनों पर भूमाफियाओं द्वारा अवैध ढंग से कब्जा किए जाने और पूर्व में दिए गए किसान समस्याओ को लेकर ज्ञापन के निस्तारण के मांग को लेकर निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार किसान नेता राजू चौबे जिलाध्यक्ष भारतीय किसान यूनियन भानू के नेतृत्व में किसानों के द्वारा दिन बुधवार सुबह 10 से तिरंगा झंडा लगाकर तहसील परिसर में सत्याग्रह शुरू किया गया। इस मौके पर किसान नेता ने उपस्थित किसानों को संबोधित करते हुए कहा विगत कई माह से यूनियन के लोग सक्षम अधिकारियो से किसानों के समस्याओं को लेकर मौखिक और लिखित रूप से अवगत कराया जा रहा था लेकिन अफसरों के उदासीनता से यह प्रतीत होता है की वह किसानों के समस्याओं लेकर सजग नही है जिसके कारण भाकियू भानू के लोगो द्वारा सत्याग्रह किया जा रहा है और उस पर भी अगर मांगे नहीं मानते है तो सत्याग्रह दिन बृहस्पतिवार 10 बजे से आमरण अनशन में बदल जायेगा। चर्चित किसान नेता राजेश पांडे ने बताया की

मांगों को लेकर किसान यूनियन के नेता धरने पर बैठे

जिस प्रकार दिन भर चले आंदोलन में सक्षम अधिकारियो के द्वारा अनदेखी किया गया इससे यह सिद्ध होता है की भ्रष्टाचार में लिप्त क्रय केंद्र प्रभारियों तथा जिम्मेदार अफसरों में आपसी सामंजस्य स्थापित हो चुका है। किसान नेता प्रकाश सिंह पटेल ने कहा की जिस तरह से किसानों में धान की किल्लत देखी जा रही है इससे यह स्पष्ट होता ही की खाद की कालाबाजारी जोरो पर है और वह आम किसानों के पहुंच से दूर है। अनशन में मुख्य रूप से पिंटू चौबे जिला पंचायत सदस्य एवम जिला अध्यक्ष युवा पुष्पराज शुक्ला रविंद्र जैसल प्रधान प्रमोद मिश्र पयासी अनुज दुबे दिनेश पटेल शिवदास सिंह इंद्रराज सिंह पुष्कर सिंह चंद्रेश कुमार पांडे कामता प्रसाद यादव विनय तिवारी आदि लोग उपस्थित रहे।

संविधान दिवस पर करछना ब्लाक में हास्य कवि सम्मेलन 26 को

अखंड भारत संदेस

करछना। विकासखंड के प्रांगण में संविधान दिवस के अवसर पर अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन शुक्रवार को किया गया है जिस के मुख्य अतिथि करछना विधायक उज्जवल रमण होंगे विशिष्ट अतिथि अमृता सिंह उप जिलाधिकारी करछना राधारमण मिश्रा जिला अधिवक्ता संघ अध्यक्ष,कमलेश द्विवेदी ब्लाक प्रमुख, विजय राज सिंह पूर्व ब्लाक प्रमुख कमल मिश्रा मंडल अध्यक्ष प्रधान संघ ,सुबोध सिंह भाजपा नेता राजकुमार यादव ब्लॉक प्रमुख ,चाका ,आशीष कुमार मिश्रा ,मुन्ना भैया भाजपा अरविंद कुमार शुक्ला बसपा नेता ,ज्ञान सिंह पटेल,कार्यक्रम के संरक्षक रामविलास राय खंड विकास अधिकारी करछना व्यवस्थापक प्रधान संघ करछना की ओर से 26 नवंबर दिन शुक्रवार समय 11:00 ब्लॉक करछना के परिषद में अखिल भारतीय हास्य कवि सम्मेलन आयोजित किया जाएगा उक्त आशय

की जानकारी प्रधान संघ करछना के अध्यक्ष अवतार किशन सिंह एडवोकेट में समस्त प्रधानों क्षेत्र पंचायत सदस्यो वह गणमान्य लोगों को उक्त कार्यक्रम में भाग लेने की अपील की है कवि मंच पर डॉ विष्णु सक्सेना दिल्ली से ,अखिलेश द्विवेदी हास्य कवि प्रयागराज डॉ सुरेश गौतम सरस प्रयागराज ,रवि चतुर्वेदी सतना मध्य प्रदेश बिहारी लाल अंबर प्रमोद पंकज बाराबंकी ,सांक्षी तिवारी प्रतापगढ़ रत्नाकर तन्हा करछना वंदना शुक्ला अजय प्रेमी आदि हास्य कवि शिरकत करेंगे।

न्यूज झरोखा

श्री मदभागवत की कथा सुनने से आत्मीय ज्ञान का लाभ मिलेगा : आचार्य विश्व नाथ जी महराज

करछना। तहसील क्षेत्र के गांव लखरावा में मॉ काली माता के मंदिर प्रांगण में चल रही नव दिवसीय संगीतमय श्रीमद् भागवत कथा के पांचवे दिन आचार्य विश्व नाथ महाराज एवं आचार्य हर्ष वर्धन महाराज की संगीत मय कथा राजा बलि के द्वार पर वामन भगवान का का वर्णन एवं भगवान तीन पग में सभी कुछ नाप लिए की कथा का विस्तार से वर्णन किया। गांव की महिलाओं एवं पुरुषों ने भागवत कथा में बढ़-चढ़कर कथा का रशावादन किया। कार्यक्रम के महेंद्र कुमार यादव अध्यक्ष रोजगार संघ विकासखंड करछना के सौजन्य से संचालित कथा में वृंदावन से पधारे हर्षवर्धन महाराज श्री आचार्य विश्वनाथ यस जी महाराज की संगीत मय कथा से भक्ति भाव वर्णन कर ज्ञान संदर्भित किया। रवि यादव आशीष पाण्डेय श्रीमद् भागवत कथा में सहयोग दिया। इस मौके पर आशीष पांडेय प्रधान लखरावा महेंद्र यादव अमृतलाल अशोक भारतीय, अमृत लाल, रोहिणी प्रसाद पांडेय, नंद केशव, विमित पाण्डेय, सत्य प्रकाश पान्ड आदि रहे।

कथा सुनने से दूर होती है मानव की सारी व्यथा : मुरारी जी महाराज

करछना। क्षेत्र के कबरा गांव में जन कल्याण हेतु चल रही संगीतमय सात दिवसीय श्रीमद्भागवत ज्ञान कथा में कथा सुनने के लिए भक्त श्रोता जनों की भीड़ जुट रही है । कथा वाचक के रूप में व्यासपीठ पर विराजमान कथा व्यास मर्मज्ञ स्वामी मुरारी जी महाराज ने कथा के तीसरे दिन बुधवार को अपने अमृत मयी वाड़ी की धारा प्रवाह कथा में अजामिल का वर्णन तथा जड़ भरत चरित्र एवं भक्त प्रहलाद के चरित्र का वर्णन किया। मुख्य श्रोता यजमान पंडित शिव प्रकाश तिवारी व विद्यावती देवी ने कथा व्यास सहित आचार्य व पुरोहितों का माल्यार्पण कर पूजन अर्चन किया। वही संगीतज्ञ श्याम नारायण तिवारी हरी नारायण आलोक राजेंद्र ने अपने भक्ति गीतों से भक्त श्रोता जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। आयोजक विवेक तिवारी व संयोजक विनय तिवारी ने सभी के प्रति आभार जताया। इस मौके पर आचार्य पंडित सुरेश चंद्र शुक्ल प्रधानाचार्य कृष्ण प्रकाश तिवारी पंडित ब्रह्मदेव तिवारी शेषमणि मिश्र राजनारायण मिश्र राज प्रताप सिंह महेंद्र नारायण तिवारी चंद्र प्रकाश तिवारी विद्याधर मिश्र रवींद्र मिश्र अमित तिवारी विजय तिवारी राम सजीवन यादव आदि भक्त लोग मौजूद रहे।

कलश यात्रा के साथ श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

लालापुर। लालापुर में बृजेश तिवारी यहां सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ बुधवार से शुरू हुआ। कथा से पूर्व ग्रामीण महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों ने भव्य कलश यात्रा निकालकर गांव की परिक्रमा की, कलश यात्रा बोडेश्वर मंदिर से शुरू हुई। कलश यात्रा गांव की चतुर्दिक परिक्रमा करते हुए कथा स्थल पर समाप्त हुई। कथा वाचक आचार्य सुरेश चतुर्वेदी ने कलश जल से अभिसंचित कर कथा का शुभारंभ किया। श्रीमद्भागवत पुराण की महत्ता का वर्णन करते हुए कहा कि कलयुग में भागवत कथा श्रवण से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है। कलयुग के प्रवेश करते ही राजा परीक्षित की बुद्धि का हरण हुआ और उन्होंने अज्ञानता वश तपस्या में लीन ऋषि के गले में सर्प डाल दिया। इस पाप से मुक्ति पाने को राजा परीक्षित ने सात दिनों तक श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण किया। कथा श्रवण से ही उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हुई। बताया कि सनातन धर्म में मनुष्य को पाप कर्म और असामाजिक कृत्यों को करने से रोकने के लिए पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में अनेक प्रसंग दिए गए हैं। इन प्रसंगों के श्रवण से जीवन में सात्विकता आती है। सात्विक जीवन ही व्यक्ति को पुण्य की ओर ले जाता है और जो व्यक्ति पुण्य कर्म करता है। वह मोक्ष की प्राप्ति करता है। कलयुग में केवल कथा ही मनुष्य की व्यथा दूर कर सकती है।इस दौरान ग्राम प्रधान लालापुर शंकर लाल पाण्डेय,शैलेंद्र पाण्डेय, रमाशंकर तिवारी, बबलू पाण्डेय,गोलू पाण्डेय,देवेंद्र शुक्ला, महेंद्र पाण्डेय, शैलेष तिवारी सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

बरसवल व हल्दी गांव में लगाएं गयें कोविड का टीका

करछना। तहसील के अंतर्गत ग्राम सभा हल्दी के आंगनबाड़ी केंद्र में टीकाकरण का अभियान लगाया गया 40 लोगों आंगनबाड़ी केंद्र में टीका लगाया गया इस मौके पर एनम, सविता और उनकी टीम ,अनुराग पांडे प्रियम श्रीवास्तव, तौसीफ फातमा आंगनबाड़ी हल्दी कला मंगारी, अवधेश विश्वकर्मा, मोहम्मद नईम, सुल्तान महबूब, शाइस्ता सिद्दीकी सहनुर बेगम,आदि ग्रामसभा के लोग मौजूद रहे तहसील के अंतर्गत ग्राम पंचायत बरसवल में वैक्सीन का कैंप लगाया गया 40 लोगों को वैक्सीन लगाया गया और यह जो कैंप लगाया गया दूसरा डोज का कैंप लगाया इस मौके पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि मंगला भारतीया और एनम प्रेम शिला, आशा सरोज देवी, आशा कॉसिता पांडे, आशा सरोज देवी, टीचर नीतू देवी आदि ग्रामसभा के लोग मौजूद रहे।

कंबल वितरित करती पहल संस्था के अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय विधायक।

पहल संस्था ने जरूरत मंदों को बांटे कंबल

सहसों। कोई व्यक्ति जिस भी लायक है उसे अपने सामर्थ्य के अनुसार समाज सेवा जरूर करनी चाहिए. और अपने कमाई का एक हिस्सा जरूरत मंदों की मदद में खर्च करना चाहिए। इससे पुनीत कार्य और कुछ नहीं हो सकता उपरोक्त विचार फूलपुर के विधायक प्रवीण पटेल ने पहल जनकल्याण समिति एवं सेवा संस्थान द्वारा आयोजित कंबल वितरण कार्यक्रम में कही। भारद्वाज गुरूकुलम विद्यालय देवनहरी में आयोजित कंबल वितरण कार्यक्रम में 100 पात्र जरूरत मंद लोगों को कंबल वितरित किया गया। संस्था के संरक्षक व भाजपा के राष्ट्रीय प्रशिक्षण अभियान उत्तर प्रदेश के सहसंयोजक डां.शैलेश कुमार पांडेय ने कहा कि प्रतिवर्ष संस्था हजारों जरूरत मंद परिवारों को कंबल,स्वेटर और ऊनी कपड़े आदि का वितरण करती है जिससे भीषण ठंड में लोग बचाव कर पायें। इसके अतिरिक्त संस्था महिलाओं के सिलाई कड़ाई प्रशिक्षण, गरीब बच्चों की शिक्षा,रक्त दान,बृक्षारोपण, महिला सशक्तिकरण आदि के क्षेत्र में समर्पित होकर कार्य कर रही है। भाजपा के जिला उपाध्यक्ष गंगा पार अनिरुद्ध पटेल ने संस्था के कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रतिवर्ष संस्था जरूरत मंदों के लिए इस तरह के कार्य करती रहती है। इस अवसर पर संस्था की अध्यक्ष वंदना सिंह ने कहा संस्था आपसी जनसहयोग से हर वर्ष जरूरत मंदों तक यह मदद पहुंचा पाने में सफल रही है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अमलेन्द त्रिपाठी, विनय उपाध्याय,टीएन सिंह, रजनीश पांडेय, मनोज उपाध्याय, सुभाष विश्वकर्मा आदि लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन संस्था के शुभेच्छु भारतेन्द्र त्रिपाठी ने किया।

सपा के घोषणा पत्र 2022 का वित्तविहीन शिक्षकों ने किया स्वागत

अखंड भारत संदेस

करछना। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ वित्तविहीन गुट प्रयागराज ने समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय अखिलेश यादव द्वारा पार्टी के 2022 के घोषणा पत्र में वित्तविहीन शिक्षकों को सरकार बनने पर मानदेय दिए जाने का जोरदार स्वागत किया है। उल्लेखनीय है कि संघ के प्रदेश अध्यक्ष/शिक्षक विधायक मा० लाल बिहारी यादव के अनवरत संघर्ष तथा चिंतन पर समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से अनुरोध कर शिक्षकों को मानदेय दिलाने का पुरजोर प्रयास किया गया था। वर्ष 2004 से लगातार किए गए संघर्ष से गत 2015 में 2 अरब रुपए शिक्षकों के खाते में डाला गया था , जिसका वित्तविहीन शिक्षक आज भी ऋणी है। संघ की जनपद इकाई प्रयागराज की आकस्मिक बैठक रामनारायण लाल इंटर कॉलेज हिंदूपुर करछना में जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू के अध्यक्षता में संपन्न हुई। जिसमें सपा मुखिया द्वारा वर्ष 2022 में सपा

समाजवादी पार्टी घोषणा पत्र का वित्तविहीन शिक्षकों ने किया स्वागत

सरकार बनने पर पुनः सम्मानजनक मानदेय देने की वचनबद्धता पर बधाई दी गयी जनपद के समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों प्रबंधकों एवं प्रधानाचार्य से समाजवादी पार्टी को बहुमत से जिता कर सरकार बनाने की अपील की गयी जिलाध्यक्ष ने समस्त वित्तविहीन विद्यालय के प्रबंधक, प्रधानाचार्य शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों से समाजवादी पार्टी के 2022 के घोषणापत्र का अध्ययन कर पार्टी को भारी बहुमत से विजय दिलाने का आग्रह किया। ज्ञात हो कि गत 22 अक्टूबर को लखनऊ में माध्यमिक शिक्षा निदेशक को ज्ञापन देने के पश्चात समाजवादी पार्टी कार्यालय में प्रदेश अध्यक्ष नरेश उत्तम पटेल द्वारा राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की मानदेय संबंधित प्रतिबद्धता दोहराई थी, जो आज घोषणा पत्र में साकार हुई है।इस आशय की सूचना संघ के जिला मीडिया प्रभारी जे०पी यादव ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में दी है।बैठक में जिलाध्यक्ष के अतिरिक्त मंडल अध्यक्ष अभय राज सिंह,फूलचंद कनौजिया ,गोविंद प्रसाद भूतिया ,बालेन्दु गौतम, बुधराम यादव, अमर बहादुर यादव,सीतासरन सिंह यादव ,जे०पी यादव, मान सिंह पटेल, नवीन शुक्ला महेंद्र द्विवेदी कमल चंद शैलेंद्र कुमारी मौर्य अवधेश श्रीवास्तव, प्रेमचंद यादव कविता यादव,रवि करन सिंह कमला शंकर यादव ,अखिलेश मुलायम रमेश पाल धर्मेंद्र कुमार अरविंद, शिव मोहन पटेल , शिव मूरत पटेल,आदि लोग बैठक में उपस्थित रहे।

पुरानी पेंशन बहाली : भारी संख्या में लखनऊ जायेंगे कर्मी

अखंड भारत संदेस

करछना। कर्मचारी शिक्षक अधिकारी पेंशनर अधिकार मंच के आवाहन पर दिनांक 30 नवंबर को लखनऊ इको गार्डेन में पहुंचने के लिए जनपद प्रयागराज से भारी संख्या में कर्मचारी शिक्षक अधिकारी पेंशनर्स को ले जाने के लिए अभियान चलाकर मंच के संयोजक राग विराग के नेतृत्व में 24नवम्बर को माननीय उच्च न्यायालय प्रयागराज के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष देवेंद्र पाल सिंह उनके मंत्री राशिद संयुक्त मंत्री राम दुलार पाल जनपद महासचिव विनोद कुमार पांडे के साथ गामीण सफाई कर्मचारी संघ प्रयागराज के अध्यक्ष दयाशंकर यादव के साथ माननीय उच्च न्यायालय के गेट पर आंदोलन में लखनऊ पहुंचने की अपील की गई माननीय उच्च न्यायालय चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ के अध्यक्ष जी ने आश्वासन दिया कि हम अपने संगठन से सैकड़ों की संख्या में कर्मचारी लखनऊ चलेंगे उन्होंने यह भी विश्वास दिलाया कि हमारे संगठन के अतिरिक्त हमारा एक महासंघ बना हुआ है जिनमें जनपद न्यायालय के चतुर्थ श्रेणी

संघ के पदाधिकारियों ने रैली में पहुचने की रणनीति तय करते

कर्मचारी सगठन भी सम्मिलित हैं ने आश्वासन दिया कि हम जनपद न्यायालय के अपने सम वर्गीय साथियों को भी दिनांक 30 नवंबर को लखनऊ पहुंचने की अपील करेंगे और कोशिश करेंगे कि वह भी लखनऊ पहुंचे। इसके बाद परिषद कार्यालय आकर राज्य कर्मचारी संयुक्त परिषद के जनपद अध्यक्ष अजय कुमार भारती की अध्यक्षता में एक बैठक की गई बैठक का संचालन जिला मंत्री विनोद कुमार पांडे ने किया जिसमें कई विभागों के पदाधिकारियों ने अपने अपने विचार व्यक्त करते हुए अधिक से अधिक संख्या में लखनऊ चलने की बात कही गई। बैठक को संबोधित करने वालों में पमुख रुप से श्याम सूरत पांडे अरुण पांडे ओपी सिंह इं0वीके पांडे राजेन्द्र तप़िाठी रमेश श्री वास्तव धुव्रनारायण ,, रामसुमेर आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

भूमाफियाओं ने रातों रात सरकारी नाला पाट बना ली पुलिया, आक्रोश

एसडीएम बारा ने लगा दी थी रोक

घूरपुर। सरकार भूमाफियाओं को नेस्तानाबूद करने में लगी है। प्रशासन भी सख्त है। बावजूद कुछ भूमाफिया अपने हरकत से बाज नहीं आ रहे हैं। इलाके के एक गांव में एसडीएम के रोक के बावजूद भूमाफिया ने रातो रात सरकारी नाला पाट कर पुलिया बना लिया। जिससे ग्रामीणों में आक्रोश है। घूरपुर के सेमरा कल्बना और गौहनिया के बार्डर स्थित सरकारी नाला से दो दर्जन से अधिक गांवो का बारिश का पानी होकर सीधे यमुना नदी में जाता है। और आम दिनों इसी नाले से नहर का पानी छोड़कर किसान अपनी फसल सींचता है। विगत एक सप्ताह पूर्व एक माफिया ने अवैध रूप से नाले को पाट पुलिया बनाने लगा। ग्रामीणों के शिकायत पर एसडीएम बारा सौम्या गुरुरानी ने लेखपाल परमात्मा पांडेय व पुलिस भेज निर्माण कार्य रुकवा दिया था। मंगलवार रात को भूमाफियों ने उक्त नाले को पाट अवैध रूप से पुलिया निर्माण कर लिया। जिससे ग्रामीण आक्रोशित हो उठे। ग्रामीणों का कहना है नाला पाट पुलिया निर्माण किए जाने से वारिश का पानी अवरुद्ध हो फसल क्षतिग्रस्त हो जायेगे और आम दिनों हो रही खेतो की सिंचाई भी बाधित हो जाएगी। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि उक्त नाला हाईवे से सटा हुआ है। आसपास की ग्राम सभा की सरकारी जमीन पर कब्जा जमा भूमाफिया उसे प्लाटिंग कर बेचने की फिराक में है। उस संबन्ध मे सम्बन्धित लेखपाल परमात्मा पांडेय ने बताया कि उक्त नाला पर पुलिया निर्माण को एस डी एम के आदेश पर रोक दिया गया था बावजूद भूमाफिया ने रात को चुपके से बना लिया है । उनके विरूद्ध मुकदमा दर्ज कर अवैध रूप से बनी पुलिया को ध्वस्त कराया जाएगा।

खबर संक्षेप

रेलवे ट्रैक पर छत विक्षत मिला अज्ञात महिला का शव

मेजा रोड। मेजा थाना क्षेत्र के दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग के कठौली गांव के समीप रेलवे पटरी पर अज्ञात महिला का क्षत-विक्षत शव मिलने से हड़कंप मच गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बुधवार दोपहर दिल्ली हावड़ा रेल मार्ग के डाउन लाइन रेलवे पटरी के खंभा नंबर 789/2 पर अज्ञात महिला उम्र लगभग 40 वर्ष के आसपास क्षत-विक्षत शव मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंचे मेजारोड चौकी के उप निरीक्षक सूर्य प्रकाश सिंह शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त करवाने में जुटे रहे। लेकिन पहचान नहीं हो सकी जिसे पोस्टमार्टम हेतु प्रयागराज भेज दिया गया।

युवती से छीना मोबाइल

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के डांडी बाजार में बदमाशों ने सरेशाम ऑटो में सवार एक युवती के हाथ से मोबाइल छीनकर फरार हो गए। जानकारी के मुताबिक क्षेत्र की रहने वाली रेखा नामक युवती शहर किसी कार हेतु गई हुई थी। वह बुधवार शाम लगभग 5:45 बजे ऑटो पर सवार होकर डांडी बाजार की ओर से गुजर रही थी। तभी बाइक पर सवार दो बदमाश उक्त चलती ऑटो के समीप पहुंचे और युवती के हाथ से हजारों रुपए कीमत के मोबाइल छीन कर फरार हो गए। अचानक घटित वारदात होने से वहां पर हड़कंप मच गया और वह युवती रोने लगी। जिससे वहां पर लोगों की भीड़ जुट गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल की खानापूर्ति करते हुए वापस बैरंग लौट गई।

जनसंपर्क कार्यालय के साथ ही आ.क्सीजन प्लांट का उद्घाटन करते व संयंत्र का भ्रमण करते निदेशक डा०उदय शंकर अवस्थी

प्रबंध निदेशक ने किया इफको संयंत्र का भ्रमण

अखंड भारत संदेश

जनसंपर्क कार्यालय के साथ ही आक्सीजन प्लांट का किया उद्घाटन

फूलपुर। ब्यक्ति को अपने कर्तव्यों को बिना किसी भय के निभाते रहना चाहिए। क्योंकि कुछ ऐसी चीजें भी होती है जो इन्सान के हाथ में नहीं होती। उक्त बातें इफको के प्रबंध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी ने फूलपुर इकाई के तीन दिवसीय भ्रमण के दौरान बुधवार को नवनिर्मित जन सम्पर्क कार्यालय का उद्घाटन करने के बाद संक्षिप्त प्रेसवार्ता में कहीं। मंगलवार की सांय इफको में सपत्नीक पहुंचे प्रंबध निदेशक डॉ. उदय शंकर अवस्थी का इफको परिवार ने भव्य स्वागत किया। इफको फूलपुर के कार्यकारी निदेशक संजय कुदेसिया के साथ ही वरिष्ठ अधिकारियों के साथ प्रबंध निदेशक संयंत्र भ्रमण पर निकले जिसमें उन्होंने सुरक्षा निर्देशन कक्ष एंव विशेषतः ऑक्सीजन प्लांट का उद्घाटन किया। संयंत्र भ्रमण पर उन्होंने अमोनिया1, अमोनिया 2 एंव शक्ति संयत्र के नियंत्रण कक्ष की जानकारी ली। रेखा अवस्थी ने भी महिला चेतना क्लब के सदस्यों के साथ संयंत्र स्थित गोल्डन जुबली पार्क में वार्ता की। इसके पहले प्रबंध निदेशक सपत्नीक मंदिर में विधि विधान से पूजा अर्चना की। कार्यकारी निदेशक संजय कुदेसिया एंव जन सम्पर्क अधिकारी संजय कुमार मिश्र ने प्रबंध निदेशक का भव्य स्वागत करते हुए आगामी कार्यक्रमों के लिए उनके साथ बने रहे। मौके पर एंग्लाइज यूनियन के अध्यक्ष पंकज पांडे, विनय कुमार यादव, स्वयं प्रकाश, दान वीर सिंह, महाप्रबंधक अनुरक्षण, गिरिधर मिश्र, संयुक्त महाप्रबंधक संजय वैश्य, संयुक्त महाप्रबंधक प्रोसेस एम.डी. मिश्र, संयुक्त महा प्रंबधक के. मोहन राव, संयुक्त महाप्रबंधक उपकरण, ए. पी. राजेन्द्रन, उप महाप्रबंधक आई.टी. एवं उपाध्यक्ष ओम कल्याण समिति संतोष कुमार शुक्ल, उप महाप्रबंधक वित्त एंव लेखा एस.के. सिंह,उप महाप्रबंधक अमोनिया, संजय भंडारी, अनीता मिश्र, पुतन लाल, जी.एस. पाण्डेय, वी. के.मिश्र, ए. के. श्रीवास्तव,सतीश कुमार, आर.पी.यादव, पी.के.सिंह, अमरेन्द्र नाथ ओझा, अरुण कुमार, ए.के. श्रीवास्तव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

इलाहाबाद हाईकोर्ट : बेंच विभाजन के मुद्दे पर मुख्य न्यायाधीश राजेश बिंदल से मिलेंगे वकील

प्रयागराज। आगरा में हाईकोर्ट की खंडपीठ बनाने के संबंध में केंद्रीय कानून मंत्री किरण रिजिजू के बयान के विरोध में इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ता मुख्य न्यायमूर्ति राजेश बिंदल से मुलाकात करेंगे। तय किया गया है कि वार्ता के लिए मुख्य न्यायाधीश और प्रयागराज के सांसद से समय लिया जाएगा और वकीलों का प्रतिनिधिमंडल शीघ्र ही उनसे मुलाकात कर अपना पक्ष रखेगा। बुधवार को हाईकोर्ट में आम सभा की बैठक हुई जिसमें निवर्तमान कार्यकारिणी के सदस्यों के साथ ही बड़ी संख्या में अधिवक्ताओं ने हिस्सा लिया। बैठक में सर्वसम्मति से कहा गया कि हाईकोर्ट की एक और खंडपीठ के गठन का प्रयास असंविधानिक है। उत्तराखंड राज्य का गठन हो जाने के बाद जसवंत सिंह आयोग की रिपोर्ट निरर्थक हो गई है। बैठक में मौजूदा कार्यकारिणी सदस्यों को इस मामले में कार्ययोजना बनाने के लिए अधिकृत किया गया। ताकि मुख्य न्यायाधीश और स्थानीय सांसद से मिलकर वार्ता की जा सके। आम सभा की बैठक 26 नवंबर को फिर से बुलाई गई है। बैठक में वर्तमान एल्डर कमेटी के चेयरमैन का कार्य हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के हितों के विरुद्ध है इसलिए उनको चेयरमैन के पद से विमुक्त हो जाना चाहिए। बैठक में निवर्तमान अध्यक्ष अमरेंद्रनाथ सिंह और महासचिव प्रभाशंकर मिश्र के अलावा आईके चतुर्वेदी, राधाकांत ओझा, एसी तिवारी, एसडी सिंह जादौन, विक्रांत पांडेय, अविनाश शर्मा, अच्युतानंद पांडेय, अनुराधा सुंदरम, , अतुल कुमार पांडेय, शशि प्रकाश सिंह, एलडी राजभर, सुरेंद्र नाथ मिश्र तथा बार कार्यकारिणी के सदस्य व बड़ी संख्या में अधिवक्ता रहे।

एसबीआई की टाइनी शाखा के संचालक से साढ़े सात लाख रुपये की लूट

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। एसबीआई की टाइनी शाखा के संचालक से साढ़े सात लाख रुपये लूटने के मामले में तीन अज्ञात लुटेरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। एसपी यमुनापार ने घटना स्थल का निरीक्षण कर पीड़ित से पूछताछ की।

मंगलवार दोपहर बाद मांडा थाना क्षेत्र के हाटा बाजार में तीन नकाबपोश बाइक सवार बदमाशों ने तमंचा सटाकर एसबीआई कोरांव से अनुबंधित टाइनी शाखा संचालक सुशील सिंह पटेल का साढ़े सात लाख रुपये सहित बैग में रखा लैपटॉप, मोबाइल व अन्य कागजात लूट लिया था। यह लूट तब हुई, जब मंगलवार दोपहर बाद सुशील कोरांव एसबीआई से साढ़े सात लाख रुपये लेकर अपनी बाइक से हाटा बाजार स्थित अपनी टाइनी शाखा लौट रहे थे। हाटा दोहथा मोड़ मार्ग के मध्य दोहथा गांव के समीप पियरी गांव की नहर के सूनसान स्थान पर यह लूट हुई थी। लूट के बाद बाइक सवार तीनों बदमाश तमंचा लहराते वापस कोरांव की ओर चले गये थे। घटना से कुछ दूर पर पीड़ित का मोबाइल बदमाशों ने फेंक दिया था, जिसे एक ग्रामीण ने पुलिस को सौंपा। घटना के बाद इंस्पेक्टर मांडा अवन कुमार दीक्षित, सीओ मेजा अमिता सिंह और एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित ने मंगलवार शाम को घटनास्थल का निरीक्षण कर पीड़ित से पूछताछ की। कोरांव एसबीआई बैंक से भी पुलिस कर्मियों ने जानकारी जुटाई। मंगलवार रात पीड़ित की तहरीर पर तीन अज्ञात लुटेरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया। बुधवार दोपहर भी एसपी यमुनापार सौरभ दीक्षित ने घटनास्थल पर पीड़ित को बुलवाकर पूछताछ की। घटना के दूसरे दिन भी पुलिस ने टीमें गठित कर मामले के पदार्फाश का प्रयास किया, लेकिन पुलिस को सफलता नहीं मिल पायी। इंस्पेक्टर मांडा अवन कुमार दीक्षित ने जानकारी दी कि कुछ बदमाशों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। उन्होंने यह भी कहा कि घटना के दौरान पीड़ित ने बाइक गिरने की बात बतायी, परंतु बाइक या पीड़ित के शरीर पर खरोंच तक नहीं है, जिससे मामला संदिग्ध लग रहा है और पुलिस इस एंगल पर भी जांच कर रही है। फिलहाल दिनदहाड़े हुई साढ़े सात लाख रुपये की लूट के मामले में लोगों में तरह तरह की चर्चा व्याप्त है तथा मांडा कोरांव व हाटा कोरांव के जंगली मार्ग से गुजरने वाले व्यापारियों और आम नागरिकों में भय भी व्याप्त है।

नैनी में चोरों ने लाखों रुपए के जेवरात उड़ाए

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के यमुनोत्री नगर, डांडी में बीती रात चोरों ने एक बंद मकान को निशाना बनाते हुए नकदी समेत लाखों रुपए के जेवरात पर हाथ साफ कर फरार हो गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची जांच पड़ताल की खानापूर्ति करते हुए बैरंग वापस लौट आई। भुक्तभोगी ने रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए नैनी कोतवाली में तहरीर दी है। जानकारी के मुताबिक नैनी कोतवाली क्षेत्र के यमुनोत्री नगर, डांडी की रहने वाली सुधा राय पत्नी संजय कुमार राय बीते कुछ दिन पूर्व अपने मकान में ताला बंद कर पड़ोसी पीयूष चतुर्वेदी पुत्र स्वर्गीय अरविंद चतुर्वेदी को चाभी सौंप कर गाजीपुर स्थित रिश्तेदार के यहां चली गई। बुधवार सुबह जब पड़ोसियों की नींद खुली तो सुधा राय के मकान के मेन गेट खुला देख सभी दंग रह गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल करते हुए बैरंग वापस लौट गई। वहीं घटित वारदात की जानकारी मिलने पर भुक्तभोगी परिवार गाजीपुर से नैनी स्थित निवास पर पहुंचा और कमरों की हालत देख उनके होश उड़ गए। भुक्तभोगी के मुताबिक चोर बंद मकान में दाखिल हो गए और कमरों का ताला तोड़कर आलमारी के लाकर को तोड़कर लाखों रुपए के सोने व चांदी से निर्मित जेवरात सहित दस हजार रुपए नकदी चोरी कर फरार हो गए। भुक्तभोगी ने पीयूष चतुर्वेदी पर शक जताते हुए नैनी कोतवाली में तहरीर दी है।

सीबीआई की चार्जशीट में खुलासा, आपत्तिजनक वीडियो के भय से महंत ने लगाई थी फांसी

अखंड भारत संदेश

आपत्तिजनक वीडियो बना महंत के मौत का कारण, आखिर ऐसा कौन सा वीडियो था जिससे महंत ने चुन लिया मौत का रास्ता

प्रयागराज। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के पूर्व अध्यक्ष और संगम स्थित लेटे हनुमान मंदिर व मठ बाघंबरी गद्दी के महंत नरेंद्र गिरि ने समाज में बदनामी के भय से फांसी के फंदे पर झूलकर जान दी है। महंत की हत्या नहीं की गई है, न ही उनका सुसाइड नोट फर्जी है। महंद ने आपत्तिजनक वीडियो जारी होने के भय से फांसी लगाकर जान दी है। यह खुलासा सीबीआई ने सीजेएम कोर्ट में जारी अपनी चार्जशीट में कही है।

अपने पुराने शिष्य आनंद गिरि के द्वारा फोन पर धमकी देने और महिला के साथ कथित आपत्तिजनक वीडियो जारी करने की चेतावनी के बाद महंत नरेंद्र गिरि भारी तनाव में आ गए थे। इसका उल्लेख उन्होंने अपने सुसाइड नोट में भी किया है, जिस सुसाइड नोट को सीबीआई ने महंत नरेंद्र गिरि का ही माना है।फोरेंसिक रिपोर्ट और हैंड राइटिंग एक्सपर्ट की रिपोर्ट के आधार पर सीबीआई ने चार्जशीट में यह दावा किया है कि महंत के कमरे से बरामद 14 पन्नों का सुसाइड नोट महंत के द्वारा ही लिखा गया था। आत्महत्या का कारण आनंद गिरि की धमकी के कारण उठा मानसिक तनाव ही था। सुसाइड नोट में महंत ने लिखा था कि नरेंद्र गिरि किसी महिला के साथ उनका फोटो वायरल कर सकता है। इसके बाद वह कहां-कहां सफाई देते फिरेंगे। उनकी काफी बदनामी होगी। इस बदनामी को झेलने से अच्छा मर जाना ही है। सीबीआई ने 20 नवंबर को आनंद गिरि और मंदिर के मुख्य पुजारी रहे आद्या प्रसाद तिवारी और उसके पुत्र संदीप तिवारी के खिलाफ हत्या के लिए उकसाने का आरोप पत्र कोर्ट में दाखिल किया था। बता दें कि 20 सितंबर को महंत नरेंद्र गिरि का शव अल्लापुर स्थित मठ बाघंबरी गद्दी स्थित उनके कमरे से एक फंदे से लटकता हुआ मिला था।

पद यात्रा निकालते कांग्रेस कार्यकर्ता।

कांग्रेस द्वारा निकाली गई पद यात्रा

सहसों। अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी द्वारा कार्यकताओं ने विधानसभा फूलपुर के सहसों बाजार से पार्टी के पूर्व जिला उपाध्यक्ष अशफाक अहमद के नेतृत्व में भाजपा भगाओ, महंगाई हटाओ पदयात्रा आयोजित की गई। यात्रा सहसों चौराहे से बाजार के बीच होते हुए भोपतपुर, चनई का पूरा, चंदरपुर उर्फ बसमहुआ होते हुए बेरूई में पहुंच कर समाप्त हुई। पदयात्रा कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मकसूद खान रहे। कार्यक्रम में बिजली का बिल हाफ करो, महंगाई कम करो, डीजल पेट्रोल की कीमतें कम करो, सड़कों को गड्ढा मुक्त करो, किसानों को समर्थन मूल्य दो, कुकिंग गैस का दाम कम करो आदि नारे लगाते हुए प्रियंका गांधी जी के प्रतिज्ञाएं, हम वचन निभाएंगे की आवाज को घर घर गांव-गांव पहुंचाते हुए उनके पत्रक को प्रत्येक घर में पहुंचाया गया। अंत में ग्राम सभा बेरूई में पदयात्रा समाप्ति पर कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता मकसूद खान अपने विचार जनता के बीच रखेते हुए कहा कि भाजपा सरकार हर मोर्चे पर विफल है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से एडवोकेट देवराज उपाध्याय, डाक्टर जगत नारायण सिंह , मुन्नू भाई , बृजेश सिंह, मोहनलाल मिश्रा, सलीम टाइगर, कमलाकांत मिश्रा , राम सिंह पाल, मोहम्मद यूसुफ, विनोद कुमार पाल, गोविंद सिंह चंदेल , बब्लू प्रधान समेत सैकड़ों कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सेवानिवृत्त शिक्षक को दी गई भावभीनी विदाई

शंकरगढ़। प्राथमिक विद्यालय पटिवार में शिक्षक संकुल गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन मंगलवार को किया गया। इसमें संकुल लोहरा के समस्त अध्यापकों की उपस्थिति में उपस्थिति रही। समारोह में संकुल लोहरा के पूर्व प्रभारी समरजीत सिंह के सेवानिवृत्त सम्मानित करते हुए सुखद भविष्य की कामना की गई। शिक्षक साथियों ने उनके कार्यकाल की सराहना की। उक्त समारोह में शंकरगढ़ ब्लाक के सभी एआर पी, लोहरा संकुल के समस्त प्रधानाध्यापक एवं इंचार्ज प्रधानाध्यापक ने सेवानिवृत्त पूर्व संकुल प्रभारी समरजीत सिंह (मुख्य अतिथि) और सूर्यकांत शुक्ला (विशिष्ट अतिथि) का स्वागत किया। प्राथमिक विद्यालय पटिवार के प्रधानाध्यापक विनोद सिंह, सहायक अध्यापक दिनेश कुमार सिंह एवं शिक्षक राजेंद्र सिंह ने अतिथि और विशिष्ट अतिथि को गुलदस्ता भेंट किया। शिक्षक साथी कृष्णाकांत मिश्र एवं त्रिवेणीधर दुबे मां सरस्वती की वंदना स्तुति करवाई। शिक्षक मान सिंह की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में पूर्व शिक्षक समरजीत को भावभीनी विदाई देते हुए उन्हे अंगवस्त्र, गीता इत्यादि भेंट कर ईश्वर से खुशहाल भविष्य की कामना की गई। स्वागत से अभिभूत समरजीतने सभी का आभारप्रकट किया। अपने अतीत के दिनों को याद करते हुए बेसिक शिक्षा जगत की कोटि-कोटि सराहना की। कहा कि बेसिक शिक्षा विभाग गांव के भविष्य को एक नई राह पर ले जा रहा है। कार्यक्रम में बीआरसी मुख्यालय से शिक्षक साथी नेपाल सिंह, विजय सिंह, नृपेंद्र सिंह, मनमोहन सिंह भी शामिल हुए। संचालन महेश सिंह हिद और बालेंद्र सिंह ने संयुक्त रूपसे किया।

दुकान का ताला तोड़कर चोरों ने उड़ाए उपकरण

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र के लवायन खुर्द निवासी दिलीप पुत्र संत लाल रेमंड तिराहे के समीप पवन मोबाइल के नाम से दुकान चलाते हैं। वह मंगलवार देर शाम को प्रतिदिन की तरह दुकान पर ताला बंद कर घर वापस लौट आए। बुधवार सुबह जब वह दुकान खोलने के लिए पहुंचे तो शटर टेढ़ा देख दंग रह गए। भुक्तभोगी के मुताबिक चोर मौका पाकर किसी वस्तु से दुकान का शटर टेढ़ा कर अंदर दाखिल हो गए और तीन हजार रुपए नकदी समेत हजारों रुपए के उपकरण चोरी कर फरार हो गए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल की, वहीं भुक्तभोगी ने रिपोर्ट दर्ज कराने के लिए पुलिस को तहरीर दी है।

सफलता का कोई शार्ट कट नही होता, मेहनत के बूते अपने माँ-बाप का नाम करें रोशन: डॉ. चंद्रशेखर सिंह

अखंड भारत संदेश

बारा। गौहनिया स्थित दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्य योजना (डीडीयू-जीकेवाई सेंटर) में प्रशिक्षणरत जीडीए (जनरल ड्यूटी असिस्टेंट) के दूसरे बैच का प्रशिक्षण 19 नवम्बर को पूरा हो गया। 23 नवम्बर को प्रशिक्षित हो चुके प्रशिक्षुओ का विदाई समारोह आयोजित किया गया। इस दौरान जीडीए थर्ड और एमएसटी फर्स्ट एवं सेकेंड बैच के बच्चों ने रुंधे गले से अपने सीनियर्स को भावभीनी विदाई दी। आरके ग्रुप ऑफ फामेर्सी के प्रिंसिपल चंद्रशेखर सिंह ने नव प्रशिक्षुओ से कहा कि सफलता का कोई शार्ट कट नही होता और मेहनत का कोई तोड़ नही होता। जिसके मन मे सेवा का भाव होता है, उसके सफलता की राह अपने आप प्रशस्त होती जाती है। इसलिए सभी को पूरी निष्ठा और ईमानदारी से अपनी ट्रेनिंग पूरी करके अपना कैरियर सवारने पर जोर देना चाहिए। क्योकि जब आप सफलता के मुकाम पर पहुँचते है तो आप को देखकर ही आपको जानने पहचानने वाले बच्चे भी प्रेरित होते है। इस दौरान उन्होंने सभी नव प्रशिक्षुओ को ट्रेनिंग पूरी करने पर प्रमाण पत्र वितरित किया। आखिर में प्रोजेक्ट हेड प्रवीण द्विवेदी ने सभी प्रशिक्षुओ को धैर्य एवं लगन के साथ अपनी सफलता की सीढ़ी तय करने का मंत्र बताया। उसके बाद रिजर्व बस से सभी 30 प्रशिक्षुओ को प्लेसमेंट के लिए दिल्ली रवाना किया गया। जूनियर बच्चो ने अपने सीनियर्स को गिफ्ट देकर विदा किया। इस दौरान स्टेट हेड प्रवीण द्विवेदी, डोमेन ट्रेनर अनुराग कुमार, विनय कुमार, अंजुला वैश्य, एमआईएस शुभम विश्वकर्मा, रति पाल, अनुराग पांडेय, शालिनी शर्मा, ऋषभ दुबे, अंजली मिश्रा, आनन्द विश्वकर्मा, अनामिका आदि उपस्थित थे।

जीडीए सेकेंड बैच के प्रशिक्षुओ को प्लेसमेंट के लिए रिजर्व बस से दिल्ली रवाना करते

कार्यालय ग्राम पंचायत पाण्डर वि. ख. जसरा, प्रयागराज

अल्पकालीन निविदा

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी योजना/राज्य वित्त योजना अन्तर्गत वर्ष 2021–22 में प्रस्तावित निम्नलिखित कार्यों हेतु सामग्री आपूर्ति पंजीकृत एवं अधिकृत विक्रेता से दिनांक 25–11–2021 से 28–11–2021 तक सायं 4:30 बजे तक निविदायें आमंत्रित की जाती है। दिनांक 28–11–2021 को सायंकाल 4: 30पर निविदा ग्राम पंचायत कार्यालय पर निविदादाताओं एवं प्रतिनिधियों के समक्ष खोली जायेगी।

क्र0	कार्य का विवरण	ग्राम पंचायत	योजना/ मद	अनुमानित लागत (लाख में)	निविदा मूल्य रू. में	धरोहर राशि	कार्य की अवधि
1.	स्थायी गोवंश आश्रय स्थल में वर्मी कम्पोस्ट का निर्माण	पाण्डर	मनरेगा	200000	500	4000	1 माह
2.	शंकर लाल के घर से संतलाल कोटार्य के घर तक इंटरलाकिंग	पाण्डर	मनरेगा/ 15वां वित्त	400000	500	8000	1 माह
3.	छविनाथ पाठक के घर से गया प्रसाद के घर तक इंटरलाकिंग	पाण्डर	मनरेगा/ 15वां वित्त	380000	500	8000	1 माह
4.	निब्बूलाल शुक्ला के घर से प्राथमिक विद्यालय तक इंटरलाकिंग	पाण्डर	मनरेगा/ 15वां वित्त	380000	500	7600	1 माह
5.	बुद्ध नारायण के घर से संतोष के घर तक इंटरलाकिंग	पाण्डर	मनरेगा/ 15वां वित्त	380000	500	7600	1 माह

सामान्य शर्तें:– 1. कार्य की सम्पूर्ण जानकारी किसी भी कार्य दिवस में ग्राम विकास अधिकारी कार्यालय से ली जा सकती है। 2. निविदा दाता/कोटेशन दाता को समस्त रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र जीएसटी नम्बर के साथ रजिस्ट्रेशन प्रमाण निविदा कोटेशन के साथ संलग्न करना होगा। 3. निविदा धरोहर धनराशि 2 प्रतिशत जमानत के रूप में एफ.डी.आर./एन.एस.सी. जमा करना होगा।4. निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय दिनांक 28.11.2021 तक पूर्वान्हन 12.00 बजे तक प्राप्त कर सकते हैं। 5. किसी निविदा/कोटेशन को निरस्त करने का सर्वाधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। 6. सभी कार्यो के लिए अलग–अलग निविदा/कोटेशन स्वीकार्य की जायेगी। 7. सशर्त निविदा स्वीकार नही होगी।

नोट–निविदा प्रपत्र ग्राम पंचायत कार्यालय पाण्डर से प्राप्त की जा सकती है एवं ग्राम पंचायत कार्यलय पाण्डर में समस्त निविदाएं भी खोली जायेगी।

सुरेन्द्र सोनकर
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत पाण्डर
वि. ख. जसरा, प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/मनरेगा राज्य वित्त/के.वि.नि./ 2021–22/ दिनांक 24.11.2021

बृजेन्द्र सिंह
ग्राम पंचायत/विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत पाण्डर
वि. ख. जसरा, प्रयागराज।

ग्राम व बस्तियों में हुआ भारत माता पूजन व आरती

अमृत महोत्सव आयोजन समिति द्वारा हुआ कार्यक्रम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अमृत महोत्सव आयोजन समिति द्वारा जिले के विभिन्न ग्राम तथा बस्तियों में भारत माता पूजन और आरती का कार्यक्रम संपन्न किया गया। भारत माता आरती और पूजन में लोग उत्साहित होकर भाग लिये।

स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होने पर मनाए जा रहे अमृत महोत्सव के क्रम में प्रतापगढ़ में समाज के बंधुओं के द्वारा अलग-अलग कार्यक्रमों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में अपना सर्वस्व अर्पित करने वाले वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का स्मरण किया गया। भारत का इतिहास वीर योद्धाओं के त्याग और बलिदान से भरा पड़ा हुआ है। सुनियोजित षड्यंत्र के तहत वामपंथी इतिहासकारों द्वारा भारत के इतिहास को गलत रूप में प्रस्तुत किया गया। स्वतंत्रता में समाज के सभी वर्ग और जन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अमृत महोत्सव देशवासियों के स्वत्व को जगाने का अभियान है। यह स्व के जागरण का अभियान है, हमें अपने देश, अपनी माटी अपनी संस्कृति, सभ्यता के साथ ही भारत मां के सपूत वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर गर्व है। कार्यक्रम में वंदे मातरम का सामूहिक गायन भी संपन्न हुआ। अमृत महोत्सव आयोजन समिति द्वारा जिले के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में संगोष्ठी, तिरंगा यात्रा और सभी गांव, बस्ती में भारत माता पूजन और नुक्कड़ सभा की व्यापक योजना तैयार की गई है। इस अवसर पर अलग-अलग स्थानों पर अनामिका उपाध्याय, लक्ष्मी मिश्रा, रेनू पांडेय, अनीता पांडेय, चिंतामणि द्विवेदी, डॉक्टर पीयूष कांत शर्मा, प्रभा शंकर पांडेय, शिव शंकर सिंह, शिशिर खरे, डॉ रंगनाथ शुक्ला, दिनेश कुमार सिंह, डॉ सौरभ पांडेय, पीयूष कुमार, डॉ चक्रपाणि, प्रभाशंकर पाण्डेय, सुरेंद्र प्रसाद रुद्र, कृष्ण देव सिंह, शेषमणि, कुलभास्कर आदि ने आरती के संयोजन एवं व्यवस्था में विशेष योगदान दिया।

अमृत महोत्सव आयोजन समिति के कार्यक्रम में मौजूद पदाधिकारीगण

रानीगंज में रेलवे स्टेशन दांदूपुर का नाम अब होगा मां बाराही देवी धाम

क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा ने दिया था प्रस्ताव

उत्तर मध्य रेलवे ने जारी किया अधिसूचना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। क्षेत्रीय जन मानस की अपेक्षाओं का सम्मान करते हुए क्षेत्र के विधायक अभय कुमार उर्फ धीरज ओझा जी के प्रस्ताव पर रानीगंज विधानसभा क्षेत्र में अवस्थित रेलवे स्टेशन दांदूपुर का नाम माँ बाराही देवी धाम किये जाने की अधिसूचना उत्तर रेलवे द्वारा जारी कर दिया गया।

ज्ञात हो कि विधायक धीरज ओझा जी ने क्षेत्रीय जनमानस की मांग को दृष्टिगत रखते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व उप- मुख्यमंत्री केशव प्रसाद जी से दांदूपुर रेलवे स्टेशन का नाम आदिशक्ति माँ वाराही देवी के नाम पर माँ बाराही देवी धाम किये जाने की मांग की थी जिस क्रम में माँ वाराही महोत्सव के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग के दौरान केशव प्रसाद मौर्या जी द्वारा की गई घोषणा के क्रम में राज्य सरकार द्वारा प्रेषित प्रस्ताव पर केंद्रीय गृह मंत्रलाय की अनापत्ति के पश्चात महामहिम राज्यपाल महोदय की अधिसूचना के क्रम में उत्तर रेलवे के सीसीएम द्वारा दांदूपुर रेलवे स्टेशन का नाम परिवर्तित कर माँ बाराही देवी धाम किये जाने की के संदर्भ में सूचना जारी किये जाने पर क्षेत्रीय विधायक धीरज ओझा जी ने आदरणीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी, माननीय रेलमंत्री अश्वनी वैष्णव जी, उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी व माननीय उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद जी को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए क्षेत्रवासियों को बधाई दी है। दांदूपुर स्टेशन का माँ वाराही देवी किये जाने की बहु प्रतीक्षित मांग पूरी होने पर क्षेत्रीय लोगों में हर्ष व्याप्त है।

प्रधान ने की शिकायत, लेखपाल फोन नहीं उठाता

अखंड भारत संदेश

किसनी। जनपद मैनपुरी के विकास खण्ड किसनी के ग्रामसभा हुसैनपुर के ग्रामप्रधान अजबसिंह ने एसडीएम जयप्रकाश को प्रार्थनापत्र देकर बताया कि हुसैनपुर में मनरेगा द्वारा चकमार्ग पर कई कार्य कराये जाने हैं। पर स्थानीय लेखपाल अवनीश यादव उक्त स्थानों की पैमाइश ही नहीं करते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि वह कई बार मौखिक व लिखित तौर पर लेखपाल से निवेदन कर चुके हैं पर लेखपाल उनकी सुनते ही नहीं हैं। जब वह फोन करते हैं तो लेखपाल उनका फोन नहीं उठाते हैं।जबकि जनहित में वह चकरोड डलबाना चाह रहे हैं। उन्होंने कहा कि लेखपाल कोई कार्य समय पर नहीं करते हैं इससे आमजन काफी परेशानियो का सामना करना पड रहा है। उन्होंने उक्त लेखपाल को हटाकर किसी दूसरे लेखपाल की नियुक्ति करने की मांग की है।

नकाबपोश बदमाशों ने डाली डकैती, लाखों के आभूषण लेकर फरार

दो बदमाशों को ग्रामीणों ने दौड़ाकर दबोचा

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। गृह स्वामी को गन प्वाइंट पर लेकर नकाबपोश बदमाशों ने लाखों के आभूषण और नगदी लेकर फरार हो गए। ग्रामीणों ने दौडाकर दो बदमाशों को पकड़ लिया। इस दौरान एक बाइक भी बरामद हुई है जानकारी के मुताबिक बाघराय थाना क्षेत्र के गलगली गांव निवासी राजकुमार मिश्रा पुत्र राम सूरत मिश्रा शादी विवाह में लाइटिंग का काम करते हैं। आज भोर तीन बजे के करीब लगभग आधा दर्जन बदमाश तीन बाइक से दरवाजे पर जाकर राजकुमार से कहा कि हम पुलिस वाले हैं। आपके यहां वाहन चोर छिपा है। दरवाजा खोलो। इस पर राजकुमार ने दरवाजा नहीं खोला तो बदमाश सामने लगे प्लाई के दरवाजे को तोड़कर अंदर दाखिल हो गए और राजकुमार को गन प्वाइंट पर ले लिया और कमरे में रखा दो बक्से लेकर फरार हो गए। राजकुमार के मुताबिक बक्सों में लाखों के आभूषण और 10 हजार नकद रुपया था। हल्ला गुहार पर जुटे ग्रमीणों ने दौड़ाकर दो बदमाशों को पकड़ लिया। संजोग से एक बाइक के ब्रेक जाम होने से वह नहीं आगे बढ़ पाई। सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने मौके से एक चाकू पिस्टल का खोखा और बाइक बरामद किया। घर से दो किलोमीटर नागापुर रजबहा के किनारे एक बक्सा खाली हालत में पड़ा मिला। वही थानाध्यक्ष बाघराय अखिलेश कुमार का कहना है कि दो संदिग्ध हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। तहरीर के मुताबिक मुकदमा पंजीकृत कर आगे की कार्यवाही की जा रही है।

कांग्रेस की महंगाई हटाओ प्रतिज्ञा पदयात्रा परसुरामपुर पहुंची

जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं का हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ। राष्ट्रीय महासचिव प्रभारी उत्तर प्रदेश प्रियंका गांधी के निर्देश एवं उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर आज महंगाई हटाओ प्रतिज्ञा पद यात्रा के 11वें दिन 248 प्रतापगढ़ सदर विधानसभा क्षेत्र के सदर विकासखंड के भूपियामऊ न्याय पंचायत के परसुरामपुर ग्रामसभा में कांग्रेस प्रत्याशी डॉ नीरज त्रिपाठी के नेतृत्व में महंगाई हटाओ प्रतिज्ञा पदयात्रा 10 किलोमीटर पूर्ण की गई और जगह-जगह नुक्कड़ सभाओं का आयोजन किया गया।

नुक्कड़ सभा को संबोधित करते हुए कांग्रेस प्रत्याशी डॉ.नीरज त्रिपाठी ने कहा कि महासचिव प्रियंका गांधी ने जो प्रतिज्ञाएं की हैं उन सभी को पूरा करने का संकल्प लेकर हम सभी कांग्रेस जन महंगाई हटाओ प्रतिज्ञा पदयात्रा का आयोजन कर रहे हैं जिसमें प्रियंका गांधी ने प्रतिज्ञा किया है कि 40 प्रतिशत टिकट महिलाओं को दिया जाएगा। 20 लाख बेरोजगारों को सरकारी रोजगार दिया जाएगा। श्री त्रिपाठी ने कहा कि भाजपा सरकार दो करोड़ रोजगार देने का वादा करके जिन को रोजगार मिला था उनसे भी छीनने का काम किया है। जनता अब समझ चुकी है। इस मौके पर जिला कांग्रेस कमेटी के सचिव जावेद खान, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी सदर के अध्यक्ष मनीष सिंह, भूपियामऊ न्याय पंचायत अध्यक्ष सुशांत मिश्रा, करनपुर न्याय पंचायत अध्यक्ष विनोद कुमार रजक, राजगढ़ न्याय पंचायत अध्यक्ष ऋषिकेश मिश्रा, परशुरामपुर ग्रामसभा अध्यक्ष अमर बहादुर सिंह आदि लोग मौजूद रहे।

पदयात्रा में लोगों को पम्पलेट देते डा0 नीरज त्रिपाठी

ग्वालियर बरेली राजमार्ग पर बने मौत के खड्डों में लोग गिर कर हो रहे घायल

चार कार सवारों की वाल वाल बची जान

अखंड भारत संदेश

किशनी। कस्बे से होकर गुजरने बाले ग्वालियर बरेली राजमार्ग पर यात्रा करना बेहद खतरनाक हो गया है।सड़क पर बन चुके गहरे खड्डों में गिरकर अनेकों बाइक,कार व अन्य वाहन सवार घायल हो चुके हैं। रविवार को जनपद फरुर्खाबाद की कोतवाली मोहम्मदाबाद के गांव खटा मौदा निवासी धीरेंद्र यादव पुत्र विनोद यादव अपनी कार संख्या एमएच 12क्यू एम 3614 से इटावा से अपने गांव जा रहे थे। जैसे ही उनकी कार सोहम आश्रम से कुछ मीटर पहले हरनागरपुर रोड के सामने बने गहरे गड्ढे से होकर गुजरी कार अचानक पलट गई।कार दो बार पलटने के बाद इटावा की ओर मुँह करके सीधी खड़ी हो गई।चीखपुकार सुनकर आसपास के लोग दौड़ कर कार के पास आये और लोगों को कार से बाहर निकाला।कार में धीरेंद्र यादव की पत्नी अनुराधा,पुत्र अंतरिक्ष तथा बेटी ध्वनि यादव की मामूली चोटें आई।धीरेंद्र ने बताया कि सभी लोग सीट बेल्ट लगाकर बैठे थे अन्यथा बड़ी दुर्घटना हो सकती थी। घायलों का प्राथमिक उपचार सीएचसी पर किया गया।

मंदबुद्धि अधेड़ ने नहर में कूद कर दी जान

मिर्गी के दौरे के कारण भी नहर में गिरने की जताई आशंका

अखंड भारत संदेश

किशनी। क्षेत्र के लोअर गंग नहर रायहार पुल पर युवक ने नहर में कूदकर आत्महत्या कर ली। युवक को कूदते हुए खेत में काम कर लोगों ने देखा जब तक लोगों ने पुलिस को सूचना दी तब तक युवक का पता नहीं चल सका। कड़ी मशक्कत के बाद पुलिस ने शव को ढूँढ निकाला।पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से युवक की शिनाख्त की। क्षेत्र के रायहार पुल पर रविवार दोपहर घर मे घरेलू विवाद में घर से गुस्सा होकर आये युवक ने नहर में कूदकर आत्महत्या कर ली। खेत मे काम कर रहे लोगो ने युवक को कूदते हुए देखा। ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से नहर में खोजबीन की जहाँ युवक की डेडबॉडी मिल गयी। पुलिस ने युवक की पहिचान ओमपाल पुत्र राजाराम शाक्य उम्र 30 साल निवासी देवपुरा मुड़ोसी थाना किशनी हुई। पुलिस ने पंचनामा भर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

चार आरोपियों के खिलाफ घर मे घुसकर मारपीट का मुकदमा दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने चार आरोपियो के खिलाफ घर मे घुसकर मारपीट तथा तोडफोड व धमकी का केस दर्ज किया है। कोतवाली के बनकटी निवासी राजमोहन तिवारी पुत्र घनश्याम ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बाइस नवंबर को दोपहर ढाई बजे गांव के आनन्द व सुनील पुत्रगण मंसाराम तथा अभिषेक पुत्र अशोक व अजय पुत्र श्यामलाल ने लाठी डण्डे से उसके घर मे घुसकर मारपीट की। आरोपियो ने पीडित तथा परिवार की महिलाओं को भी मारपीट कर चुटहिल कर दिया। शोर मचाने पर आरोपियो ने घर के सामान भी तोडकर नष्ट कर दिये। लोगों के जुटने पर आरोपी गाली देते हुए जानलेवा धमकी देने लगे। तहरीर के आधार पर पुलिस ने मंगलवार की रात आरोपी आनन्द समेत चार के खिलाफ घर मे घुसकर मारपीट समेत कई धाराओं मे केस दर्ज किया है।

जिला कारागार में लगा विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर, बंदियों को दी गई जानकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संजय शंकर पाण्डेय के निर्देशन में नीरज कुमार त्रिपाठी सिविल जज सी0 डी0/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जिला कारागार का निरीक्षण करने के पश्चात सचिव की अध्यक्षता में विधिक साक्षरता एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में सचिव ने बन्दियों से उनकी परेशानियों व विधिक समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त किया एवं उनको उनके अधिकारों के बारे में अवगत कराया जिसका उनके द्वारा लाभ लिया जा सकता है। शिविर में उपस्थित बन्दियों से उनके स्वास्थ्य एवं खान-पान के बारे में जानकारी प्राप्त की गयी। जेल में निरूद्ध बन्दियों को विधिक जानकारी प्रदान की गयी। इस अवसर पर जेल विजिटर विश्वनाथ त्रिपाठी एडवोकेट ने बन्दियों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और बताया कि यदि किसी बन्दी के पास अधिवक्ता की सुविधा उपलब्ध नहीं है तो उसे जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा अपने मुकदमें की पैरवी के लिये निःशुल्क अधिवक्ता की सुविधा प्रदान की जाती है। अधीक्षक को निर्देशित किया गया कि बीमार बन्दियों का नियमानुसार इलाज की समुचित व्यवस्था की जाय और समय समय पर स्वास्थ्य परीक्षण भी कराया जाय। जेल अधीक्षक को यह भी निर्देशित किया गया कि जेल परिसर सहित सभी बैरकों को मच्छरों से बचाव के लिये दवा का छिड़काव नियमित कराया जाय जिससे डेंगू जैसे गम्भीर विमारी से बन्दियों को बचाया जा सके। इस अवसर पर राजेन्द्र प्रसाद चौधरी एवं उप जेलर सुनील कुमार द्विवेदी उपस्थित रहे।

जागरुकता शिविर में जानकारी देते अधिकारीगण

सीओ की फटकार पर दर्ज हुआ लूट व गैरइरादतन हत्या का मुकदमा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सीओ की फटकार पर सांगीपुर पुलिस ने माह भर बाद अज्ञात के खिलाफ लूट व गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज किया है। सांगीपुर थाना क्षेत्र के पूरब देउम चौधरी का पुरवा गांव निवासी चंद्रप्रकाश वर्मा ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीते अठारह अक्टूबर की शाम चार बजे उसके पिता कल्लूराम वर्मा 73 साइकिल से सांगीपुर बाजार से घर जा रहे थे। [illegible] के रास्ते पर बघवा तालाब के पास वह संदिग्ध अवस्था मे बेहोश पाये गये थे। उनके [illegible] रखे करीब दस हजार रुपए भी गायब थे। इलाज के लिए जिला अस्पताल ले जाते समय रास्ते मे उनकी मौत हो गयी। घटना को लेकर जांच के बाद सीओ की फटकार पर पुलिस ने बीते मंगलवार की रात अज्ञात के खिलाफ लूट व गैरइरादतन हत्या का मुकदमा दर्ज किया है।

आज आएंगे विधायक मोना व प्रमोद तिवारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। क्षेत्रीय विधायक आराधना मिश्रा मोना व सीडब्ल्यूसी मेंबर प्रमोद तिवारी आज गुरुवार को रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र के संयुक्त दौरे पर आयेंगे। विधायक मोना व प्रमोद तिवारी पूर्वान्ह ग्यारह बजे रामपुर संग्रामगढ़ के नौढ़िया तथा मध्यान्ह बारह बजे चेरगढ़ मे आयोजित जनसभाओं को संबोधित करेंगे। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने दी है।

भागवत कथा में सांसद ने उतारी भगवान की आरती

अखंड भारत संदेश

कुण्डा, प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय सचिव/कौशांबी सांसद/संसदीय आचार समिति के सभापति एवं त्रिपुरा राज्य के प्रभारी विनोद सोनकर कुंडा क्षेत्र के हीरागंज स्थित रामनिरंजन मिश्रा उर्फ गाना के यहां आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में पहुंच कर कथा श्रवण की। अंतरराष्ट्रीय कथावाचक डॉ श्याम सुंदर पाराशर महाराज द्वारा कही जा रही कथा सुनकर श्रोता भाव विभोर हो गए। इस दौरान महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण जन्मोत्सव मनाया। भगवान श्रीकृष्ण के जन्म के उपलक्ष्य में बधाई गीत व सोहर सुनकर लोग खुशी में ताली बजाकर झूम रहे थे। सांसद विनोद सोनकर व भाजपा नेता शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, सिन्धुजा मिश्रा, सांसद मीडिया प्रभारी भूपेन्द्र पाण्डेय, सांसद प्रतापगढ़ के प्रतिनिधि बबलू मिश्र, भाजपा नेता अभय प्रताप सिंह पप्पन ने भागवत भगवान की आरती की। इसके बाद सांसद विनोद सोनकर महेशगंज थाना क्षेत्र के पूरे हरिकेश गांव पहुंच कर आईएएस अधिकारी राकेश शुक्ल के छोटे भाई अश्वनी शुक्ल की हत्या पर परिजनों से मिलकर शोक संवेदना व्यक्त किया। इस दौरान पूर्व जिला उपाध्यक्ष कमलेश सोनकर, सुधांशु शुक्ल, राम मनोहर मौर्य, महेश शुक्ल सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

भागवत कथा सुनते सांसद विनोद सोनकर

ड़क हादसे में महिला जख्मी

पट्टी, प्रतापगढ़। बाजार जा रही एक महिला को एक टेंपो ने टक्कर मार दी जिससे वह जख्मी हो गई। आसपास के लोग उसे घायल अवस्था में अस्पताल पहुंचाया। कंधई थाना क्षेत्र के बिबियाकरनपुर गांव की रहने वाली शांति देवी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बाबा बेलखरनाथ धाम में आशा के रूप में कार्यरत है। वह मंगलवार को दीवानगंज बाजार जा रही थी। बाजार के समीप बैंक ऑफ बड़ौदा के सामने प्रतापगढ़ की तरफ से आ रहे टेंपो ने उसे जोरदार टक्कर मार दी जिससे वह सड़क पर गिर कर गंभीर रूप से जख्मी हो गई। आसपास के लोगों ने उसे एंबुलेंस बुलवाकर अस्पताल पहुचाया जहा पर उसका इलाज चल रहा था।

दुकानदार को पीटकर किया घायल

पट्टी, प्रतापगढ़। पैसा मांगने पर दुकानदार को गांव के चार लोगों ने उसे जमकर मारा पीटा। दुकान में तोड़फोड़ करने के बाद आरोपियों ने दुकानदार की मां को भी मारा पीटा। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के पूरे भीखा गांव की रहने वाली विमला देवी ने बताया कि उसके बेटे योगेश की किराना की दुकान है। मंगलवार को गांव के चार लोगों ने दुकान से सामान खरीदा। जब उसने पैसा मांगा तो चारों ने लाठी-डंडों से उसके ऊपर हमला बोल दिया और उसकी मां विमला को भी मारा पीटा।

बुलट से घर आ रहे व्यवसायी को रौंदा, मौत

दुर्घटना करने वाला ट्रक पलटा, लगा जाम

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र में चिलबिला ओवरब्रिज के पास एक तेज रफ्तार ट्रक ने बुलट सवार एक युवा व्यवसायी की जान ले ली। घटना की सूचना पाकर घरवाले मेडिकल कालेज पहुंचे और उसकी मौत की जानकारी मिलने पर कोहराम मच गया। बताया जाता है कि नगर के बेगम वार्ड निवासी 30 वर्षीय मेराज बाबू महुली मण्डी में सब्जी का व्यवसाय करता था। मण्डी में अपनी दुकान बंद करके वह बुलट मोटरसाइकिल से अपने घर वापस आ रहा था। रास्ते में अयोध्या-प्रयागराज राजमार्ग पर चिलबिला ओवरब्रिज के पास तेज रफ्तार में आई एक ट्रक ने बुलट सवार मेराज बाबू को टक्कर मार दिया जिससे वह बुरी तरह से घायल हो गया। दुर्घटना करने के बाद ट्रक भी पलट गया जिससे जाम लग गया। घायल मेराज को मेडिकल कालेज ले जाया गया लेकिन तब तक उसकी जान निकल चुकी थी। घटना की सूचना पाकर घरवाले मेडिकल कालेज पहुंचे और उसकी मौत की जानकारी मिलने पर कोहराम मच गया। पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया है। दुर्घटना करने वाली ट्रक हाईवे पर पलट गई थी जिससे आवागमन बुरी तरह से प्रभावित हो रहा था और दूर-दूर तक जाम लग गया था। पुलिस ने पहुंचकर किसी तरह जाम को धीरे-धीरे खुलवाया, तब स्थिति सामान्य हुई।

मेराज बाबू (फाइल फोटो)

बाईपास न बन पाने से आए दिन होती है दुर्घटनाएं

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। पांच वर्षों से अधर में लटका बाईपास अभी तक शुरू नहीं हो पाया है। इससे ट्रकें व अन्य भारी वाहन अयोध्या-प्रयागराज राजमार्ग पर तेज रफ्तार में दौड़ते हैं जिससे आए दिन दोपहिया वाहन इन तेज रफ्तार वाहनों की चपेट में आ जाते हैं। जानकार लोगों का कहना है कि जब तक बाईपास का निर्माण नहीं होगा, तब तक हाईवे पर दोपहिया वाहनों से चलना खतरे से खाली नहीं है।

टाइनी शाखा संचालक पर रुपए निकालने का आरोप

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। एक बैंक ग्राहक ने टाइनी शाखा संचालक पर 36 हजार रुपये निकालने का आरोप लगाया है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के बंधवा बाजार स्थित एक टाइनी शाखा में मझौली गांव के अमरीश खाताधारक है। अमरीश का आरोप है कि टाइनी शाखा संचालक ने उसके खाते से तीन बार में कुल 36 हजार रुपये निकाल लिए। रोजगार के सिलसिले में दिल्ली रहता है इसलिए उसी का फायदा उठाकर टाइनी शाखा संचालक ने उसके साथ धोखाधड़ी करके पैसा निकाल लिया।

खबर संक्षेप

भागीदारी संकल्प मोर्चा की बैठक आज

कौशाम्बी। भागीदारी संकल्प मोर्चा में शामिल भागीदारी पार्टी (पी) के तत्वाधान मे हिस्सेदारी भागीदारी को लेकर वंचित, दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक महासम्मेलन का आयोजन भागीदारी पार्टी (पी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेमचंद प्रजापति की अध्यक्षता में गुरुवार 25 नवंबर को दोपहर नियामतपुर चौराहा बिसारा के पास आयोजित किया गया है उक्त कार्यक्रम में भागीदारी संकल्प मोर्चा के संयोजक ओमप्रकाश राजभर भी शामिल होंगे उक्त जानकारी भूपेंद्र प्रजापति सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी प्रयागराज मंडल कोऑर्डिनेटर एवं एडवोकेट रवी कांत प्रजापति प्रयागराज मंडल अध्यक्ष भागीदारी पार्टी ने संयुक्त रूप से दी है।

दिव्यांग को दिया मोबाइल

कौशाम्बी। सर्व धर्म जनकल्याण सेवा समिति के राष्ट्रीय महासचिव और समाजसेवी ब्राह्मण समाज उत्थान सेवा संस्थान के राष्ट्रीय मंत्री हिमांशु मिश्रा चायल को सराय अकिल के रहने वाले दिव्यांग व्यक्ति मूलचंद्र ने हिमांशु मिश्रा की गाड़ी सराय अकिल में रोक दिया और मूलचंद ने कहा मुझे एक मोबाइल की जरूरत है हिमांशु मिश्रा ने दिव्यांग व्यक्ति मूलचंद्र को एक मोबाइल की व्यवस्था की और जल्द ही एक ट्राई साइकिल देने का आश्वासन दिया हिमांशु मिश्रा ने दिव्यांग व्यक्ति मूलचंद्र से कहा कि अगर आप को किसी चीज की जरूरत पड़ती है तो मुझे तुरंत फोन करना मूलचंद्र ने कहा ऐसे ही व्यक्ति की देश में जरूरत है। हिमांशु मिश्रा को हमेशा स्वास्थ रहने की कामना की है।

जिला योजना समिति की बैठक में 247 करोड़ 45 लाख परिव्यय अनुमोदित

अखंड भारत संदेश

बैठक में प्राचार्य आईटीआई एंव भूमि संरक्षण अधिकारी के अनुपस्थित पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने के दिए निर्देश

जिला योजना की बैठक में उपस्थित प्रभारी मंत्री व अन्य

कौशाम्बी। जनपद के प्रभारी मंत्री राज्यमंत्री लोक निर्माण विभाग उत्तर प्रदेश चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय की अध्यक्षता में जिला योजना समिति की बैठक कलेक्ट्रेट स्थित सम्राट उदयन सभागार में सम्पन्न हुई बैठक में जिला योजना वर्ष 2021-22 हेतु जिले के विकास के लिए 245 करोड़ 45 लाख की योजना खर्च करने के लिए मंजूर की गई है इस योजना में कृषि विभाग के लिये कुल 32 लाख रुपए परिव्यय पशुपालन विभाग के लिये रुपए 161.56 लाख परिव्यय, दुग्ध विकास के लिये 91.76 लाख रुपए परिव्यय सहकारिता के लिये 149.12 लाख रुपए परिव्यय वन विभाग के लिये 819.75 लाख रुपए परिव्यय ग्राम्य विकास के विशेष कार्यक्रम के लिये कुल 82.78 लाख रुपए परिव्यय सिंचाई एवं जल संसाधन के लिये कुल 40 लाख रुपए परिव्यय रोजगार कार्यक्रम के लिए कुल 5365.12 लाख रुपए परिव्यय पंचायती राज के लिए कुल 244.44 लाख रुपए परिव्यय निजी लघु सिंचाई के लिये कुल 2920 लाख रुपए परिव्यय राजकीय लघु सिंचाई के लिये कुल 69.61 लाख रुपए परिव्यय अतिरिक्त उर्जा श्रोत के लिये कुल 135.73 लाख रुपए परिव्यय खादी एवं ग्रामोद्योग के लिये कुल 100 लाख रुपए परिव्यय सड़क एंव पुल के लिये कुल 2071.80 लाख रुपए परिव्यय पर्यावरण के लिये कुल 03 लाख रुपए परिव्यय पर्यटन के लिये कुल 145 लाख रुपए परिव्यय प्राथमिक शिक्षा के लिये कुल 2533.30 लाख रुपए परिव्यय माध्यमिक शिक्षा के लिये कुल 326.37 लाख रुपए परिव्यय प्राविधिक शिक्षा के लिये कुल 200 लाख रुपए परिव्यय प्रादेशिक विकास दल के लिये कुल 47.45 लाख रुपए परिव्यय खेल-कूद के लिये कुल 113.39 लाख रुपए परिव्यय एलोपैथी के लिये कुल 671.94 लाख रुपए परिव्यय परिवार कल्याण के लिये कुल 20 लाख परिव्यय रुपए होम्योपैथी के लिये कुल 19.50 लाख रुपए परिव्यय आयुर्वेद के लिये कुल 60 लाख रुपए परिव्यय यूनानी के लिये कुल 30 लाख रुपए परिव्यय ग्रामीण स्वच्छता के लिये कुल 183.96 लाख रुपए परिव्यय पूल्ड आवास के लिये कुल 325.84 लाख रुपए परिव्यय ग्रामीण आवास के लिये कुल 3135.58 लाख रुपए परिव्यय नगर विकास के लिये कुल 1483.59 लाख रुपए परिव्यय, अनुसूचित जाति कल्याण के लिये कुल 446.46 लाख रुपए परिव्यय पिछड़ी जाति कल्याण के लिये कुल 141 लाख रुपए परिव्यय अल्पसंख्यक कल्याण के लिये कुल 50 लाख रुपए परिव्यय समाज कल्याण (सामान्य जाति) के लिये कुल 253 लाख रुपए परिव्यय सेवायोजन के लिये कुल 23.01 लाख रुपए परिव्यय शिल्पकार प्रशिक्षण के लिये कुल 200 लाख रुपए परिव्यय समाज कल्याण के लिये कुल 454 लाख रुपए परिव्यय दिव्यांगजन सशक्तिकरण के लिये कुल 634.94 लाख रुपए परिव्यय तथा महिला कल्याण के लिये कुल 960 लाख रुपए परिव्यय को अनुमोदित किया गया बैठक में बताया गया कि 178 दुग्ध समितिया पंजीकृत हैं जिसमें से 72 सक्रिय हैं, जिस पर प्रभारी मंत्री ने शेष समितियों को सक्रिय करने के निर्देश दिये बैठक में जिला योजना समिति के सदस्य द्वारा बताया गया कि जनपद में अवैध आरा मशीने संचालित है, जिस पर प्रभारी मंत्री ने डीएफओ को अवैध आरा मशीनों के विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिये बैठक में सदस्यगण द्वारा कमासिन माता मन्दिर भैरव बाबा मन्दिर एवं श्री दुर्गा माता मन्दिर मंझनपुर के सौन्दर्यीरकण किये जाने की अपेक्षा पर प्रभारी मंत्री ने संबंधित अधिकारी को सौन्दर्यीकरण हेतु आवश्यक कार्यवाही करने के निर्देश दिये बैठक में प्राचार्य आईटीआई एंव भूमि संरक्षण अधिकारी के अनुपस्थित होने पर स्पष्टीकरण प्राप्त करने के निर्देश दिये

बैठक में अध्यक्ष जिला पंचायत कल्पना सोनकर विधायकगण शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल एवं संजय कुमार गुप्ता जिला योजना समिति के सदस्यगण जिलाधिकारी सुजीत कुमार तथा मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी सहित अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे

न्यूज झरोखा

खेलकूद से बच्चों का होता है बहुमुखी विकास : प्राचार्य

मंझनपुर विकासखंड परिषदीय विद्यालयों में खेलकूद प्रतियोगिता का समापन

खेलकूद समापन अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करतीं छात्राएं

कौशाम्बी। विकासखंड मंझनपुर के परिषदीय विद्यालयों की ब्लॉक स्तरीय दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का समापन मंगलवार को जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम टेवा में हुआ विकासखंड मंझनपुर के समस्त ग्यारह न्याय पंचायतों के विभिन्न विद्यालयों के छात्र छात्राओं द्वारा दो दिनों में दौड़ ऊंची कूद लंबी कूद कबड्डी खो-खो गोला फेंक चक्का फेंक समेत कई प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया गया मंगलवार को जवाहर नवोदय विद्यालय के प्राचार्य व खंड शिक्षा अधिकारी मुख्यालय श्रीमती रोजी सिंह की उपस्थिति में विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया गया। छात्रों को संबोधित करते हुए नवोदय विद्यालय के प्राचार्य ने कहा कि बचपन निश्छल होता है और इस उम्र में खेलकूद से बच्चो का बहुमुखी विकास होता है खेलकूद प्रतियोगिता में बालिका वर्ग में प्राथमिक विद्यालय पवैया की छात्रा अंजली ने चैंपियनशिप प्राप्त की जबकि उच्च प्राथमिक वर्ग में उच्च प्राथमिक विद्यालय पवैया के छात्र सत्येंद्र कुमार ने चैंपियनशिप हासिल किया कंपोजिट विद्यालय अगियौना के छात्र छात्राओं ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में संयुक्त रूप से जीत हासिल की खंड शिक्षा 5अधिकारी चंद्र मोहन सिंह द्वारा आए हुए अतिथियों का स्वागत व आभार व्यक्त किया गया। सभी विजेता टीमों को व छात्र छात्राओं को पुरस्कार दिया गया। इस मौके पर ओम दत्त त्रिपाठी मायापति त्रिपाठी अनूप कुमार वर्मा कृष्णकांत तिवारी विनोद कुमार श्रीवास्तव रामबाबू दिवाकर शेष कुमार दुबे मो0 शाहिद मो0 हुसैन प्रेमशंकर त्रिपाठी अतुल कुमार प्रजापति राजेंद्र मिश्रा इश्तियाक अहमद भोला नाथ चौधरी ज्ञानेश मिश्रा हीरालाल एम कैथल सोनी केसरवानी शशिकला त्रिपाठी राकेश अग्रहरि सहित ब्लॉक के खेलकूद प्रभारी और कोच मौजूद रहे।

यातायात पुलिस एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संयुक्त तत्वावधान में यातायात गोष्ठी सम्पन्न

यातायात पुलिस एवं एनएसएस के तत्वावधान में यातायात की गोष्ठी में शामिल

कौशाम्बी। महामाया राजकीय महाविद्यालय, कौशांबी में मंगलवार को यातायात पुलिस एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के संयुक्त तत्वावधान के अंतर्गत महाविद्यालय परिसर में यातायात माह 2021 का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत महाविद्यालय के छात्र -छात्राओं द्वारा " सड़क सुरक्षा एवं उपाय" के विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता एवं जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ विनय कुमार सिंह प्राचार्य महामाया राजकीय महाविद्यालय कौशांबी एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रविंद्र त्रिपाठी यातायात प्रभारी द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राधा सिंह, विभा पांडे प्रीति कल्पना विकास शिवम गुंजन उपासना आदि छात्र-छात्राओं द्वारा "सड़क सुरक्षा एवं उपाय " के विषय पर महाविद्यालय परिसर में पोस्टर प्रतियोगिता में सम्मिलित हुए इस प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार गुंजन बी0ए0 द्वितीय वर्ष द्वितीय पुरस्कार शिवम कुमार बी0ए0 तृतीय वर्ष एवं तृतीय पुरस्कार विभा पांडे बी0ए0 द्वितीय वर्ष ने प्राप्त किया। तदुपरांत जन जागरूकता रैली के अंतर्गत कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ विनय कुमार सिंह प्राचार्य महामाया राजकीय महाविद्यालय एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रविंद्र त्रिपाठी यातायात प्रभारी के द्वारा हरी झंडी दिखाकर जन जागरूकता रैली को रवाना किया रैली महाविद्यालय परिसर से प्रारंभ होकर ओसा चौराहा एवं ओसा चौराहे से महाविद्यालय परिसर में समाप्त हुई है। कार्यक्रम अधिकारी अनिल कुमार ने सभी अतिथियों एवं छात्र छात्राओं को धन्यवाद ज्ञापित किया इस अवसर पर यातायात पुलिस आरक्षी अनिल यादव एवं सुश्री शिवानी शर्मा एवं महाविद्यालय के डॉ0 अरविंद कुमार डॉ0 अजय कुमार डॉ0 भावना केसरवानी डॉ0 रीता दयाल डॉ0 पवन कुमार डॉ0 नीरज कुमार डॉ0 रमेश चंद्र डॉ0 अमित शुक्ल डॉ0 संतोष कुमार आदि उपस्थित रहे।

रिक्शा ट्राली चालक को ईट भट्ठे के ट्रैक्टर ने रौंदा मौत

मौके पर जुटी भीड़ ने ट्रैक्टर चालक को पकड़कर पुलिस को सौंपा

वृद्ध की मौत के बाद मौके पर लगी भीड़

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर में गांधीनगर में रिक्सा ट्राली चलाने वाले एक दलित को ईट भट्ठे के ट्रैक्टर चालक ने रौंद दिया है जिससे ट्राली चालक दलित की मौके पर मौत हो गई है सूचना पाकर मौके पर पहुंची कोतवाली पुलिस ने मृतक दलित के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और दुर्घटना करने वाले ईट भट्ठे के ट्रैक्टर ट्राली को अपने कब्जे में लेकर कोतवाली में खड़ा करा दिया है हादसा करने वाले चालक को ग्रामीणों ने मौके पर पकड़ कर थाना पुलिस को सौंप दिया है।

घटनाक्रम में बताया जाता है कि मंझनपुर मुख्यालय के दुर्गा मंदिर रोड गांधी नगर निवासी श्रीराम बहिरा उम्र लगभग 65 वर्ष पुत्र अंधु रैदास रिक्शा ट्राली चलाकर परिवार का जीविकोपार्जन करता था बुधवार को वह रिक्शा ट्राली लेकर कहीं गया था इसी बीच वह नेता नगर दुर्गा मंदिर रोड पर जैसे ही पहुंचा एक भट्ठे से ट्रैक्टर ट्राली में ईटा लादकर जा रहे ट्रैक्टर चालक ने श्रीराम को रौंद दिया है जिससे उसकी मौत हो गई है हादसे में श्रीराम की मौत के बाद मौके पर मौजूद लोगों ने ट्रैक्टर चालक को पकड़ लिया है थाना पुलिस को स्थानीय लोगों ने फोन कर मामले की सूचना दी है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और ग्रामीणों ने चालक को पुलिस के हवाले कर दिया है।

बालक को ट्रक ने रौंदा मौके पर मौत

हादसे के बाद ट्रक ड्राइवर ट्रक छोड़ कर हुआ फरार

बालक की मौत के बाद मौके पर एकत्रित ग्रामीण और पुलिस

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के मलाक भायल हाइवे रोड़ पर सड़क पार कर रहे एक बालक को ट्रक ने रौंद दिया है जिससे बालक की मौके पर मौत हो गई है। हादसे की जानकारी मिलते ही घटनास्थल पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई है ग्रामीणों ने मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दिया है मौके पर पहुंची पुलिस ने बालक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है बालक की मौत के बाद ट्रक से कूदकर चालक फरार हो गया है मौके पर खड़े ट्रक को थाना पुलिस ने कब्जे में ले लिया है। घटनाक्रम के मुताबिक कोखराज थाना क्षेत्र के मलाक भायल ग्राम निवासी त्रियाँशु उम्र लगभग 06 वर्ष पुत्र सतीश सड़क किनारे बकरी चरा रहा था घास चरते चरते बकरी सड़क की ओर भागी सड़क पर बकरी को भागते देख बालक उसे पकड़ने सड़क की ओर दौड़ा इसी बीच सड़क पर आ रही तेज गति ट्रक से बालक टकरा कर ट्रक के नीचे बालक आ गया जिससे मौके पर ही बालक की दर्दनाक मौत हो गयी। अचानक ट्रक आने से बच्चे की मौके पर मौत होने से परिजनों में शोक व्याप्त हैं पुलिस को सूचना मिलते ही घटना स्थल पर पहुंच कर ट्रक को कब्जे में लेकर लाश को पोस्टमार्टम के लिए पुलिस ने भेज दिया।

लकड़ी माफिया दिवान ने काट डाले सागवान के हरे पेड़

आरोपी दीवान की शिकायत के बाद मुकदमा दर्ज कर नहीं किया गया निलंबित

कौशांबी। पुलिस वर्दी की आड़ में अब माफिया बनने की कोशिश पुलिस के जवान कर रहे हैं जिससे आम जनमानस त्रस्त है इसी तरह का एक ताजा मामला सिराथू सर्किल क्षेत्र के कड़ा धाम कोतवाली का सामने आया है कड़ा धाम कोतवाली के दिवान ने रामपुर बढनावा मजरा दुबाना निवासी रवी श्याम पुत्र बाबूलाल दुबे का हरा सागवन का 25 साल पुराना हरा पेड़ बिना उनके सहमत के काट दिया है और उसे मौके से उठा ले जाकर थाने के दिवान ने फरीदा गंज के पप्पू की आरा मशीन में हरी लकड़ी का बोटा पहुंचा दिया है थाने का दिवान विभाग की काली कमाई से अकूत संपत्ति का मालिक बनने के बाद इलाहाबाद में आवास बनवा रहा है और वह किसानों के हरे भरे पेड़ को जबरदस्ती काटकर घर के जंगले दरवाजे आलमारी में खिड़कियां लगाने की नीयत से ले जाना चाहता है बताया जाता है कि फरीदागंज की जिस आरा मशीन में दिवान ने सागवान पेड़ के बोटे को काटने के लिए भेजा है यह आरा मशीन भी दिवान के संरक्षण में अवैध तरीके से कई वर्षों से चल रही है इसके पहले भी पुलिस पर जबरिया पेड़ काटने का आरोप लग चुका है कई दिन बीत जाने के बाद भी आरोपी दिवान पर मुकदमा नहीं दर्ज हो सका है बिना कीमत दिए आम जनता के हरे पेड़ को बलपूर्वक काट कर उठा ले जाने वाले दिवान को निलंबित नहीं किया गया है मामले की शिकायत पुलिस कार्यालय में पीड़ित परिजनों ने की है आला अधिकारियों ने पीड़ित परिजनों को कार्यवाही का भरोसा दिलाया है पीड़ित रवी श्याम ने बताया कि जब उसके हरे सागवान के पेड़ को दिवान द्वारा गलत तरीके से काटे जाने के बाद दिवान से बात की गई तो दिवान आग बबूला हो गया उसका कहना है कि तुम्हारे पूरे परिवार को झूठे मुकदमे में फंसा दूंगा तुम्हें गांव में नहीं रहने दूंगा आम जनमानस के हरे पेड़ों को जबरदस्ती काटने वाला यह दीवान है कि इलाके का दबंग लकड़ी माफिया इस बात की पुलिस अधिकारियों को जांच कराए जाने की सख्त जरूरत है।

दो ट्रकों की जोरदार टक्कर खलासी चालक सहित चार गंभीर

हादसे के बाद लगा सड़क पर लगा लम्बा जाम 6 घंटे बाद मौके पर पहुंची पुलिस, ट्रक हादसे में तड़पते रहे घायल और बेसुध सोते रहे चौकी पुलिस के जवान और इंचार्ज

दुर्घटना के बाद मौके पर मौजूद ग्रामीण

कौशाम्बी। मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के महेवा घाट सड़क पर भरसवा गांव के आश्रम पद्धति विद्यालय के पास बीती रात्रि दो तेज रफ्तार ट्रक में आमने सामने जोरदार टक्कर हो गई है इस हादसे में दोनों ट्रक के ड्राइवर खलासी समेत 4 लोगों से अधिक गंभीर घायल हो गए हैं हादसे के बाद मौके से गुजर रहे अन्य वाहन चालकों ने दुर्घटनाग्रस्त वाहनों में फंसे घायलों को बाहर निकालकर इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया सूचना दिए जाने के बाद भी स्थानीय पुलिस चौकी के इंचार्ज और जवान घटनास्थल पर नहीं पहुंच सके हैं मौके पर पुलिस के जवानों के ना पहुंचने से हादसे के बाद महेवाघाट मुख्य मार्ग पर आवागमन बाधित हो गया घटनास्थल से दोनों तरफ कई किलोमीटर लंबा जाम लग गया सड़क के जाम में सैकड़ों वाहन फंस गए लेकिन फिर भी स्थानीय चौकी पुलिस बेसुध होकर सोती रही रात 3:00 बजे हादसे होने की जानकारी सुबह पुलिस को नौ बजे के बाद लगी जानकारी मिलने के कुछ देर बाद घटनास्थल पर पुलिस पहुंची लेकिन तब तक हादसे में घायल खालसी चालक अस्पताल भेजे जा चुके थे चौकी पुलिस का कहना है कि सड़क हादसे में कोई घायल नहीं हुआ है 9:00 बजे के बाद सड़क से जाम हटाने का प्रयास चौकी पुलिस ने शुरू किया जिस पर डेढ़ घंटे की मेहनत के बाद सड़क पर आवागमन सुचारू हो सका है अब सवाल उठता है कि बेसुध होकर सोने वाली चौकी पुलिस को हादसे की जानकारी नहीं मिल पाती है हादसे में घायलों के नाम नहीं मिल पाते हैं हादसे के मुकदमा विवेचना से चौकी पुलिस पीछा छुड़ा रही है टेवा की चौकी पुलिस पर बालू लदे ओवरलोड वाहनों से वसूली का बार-बार आरोप लग रहा है कई बार चौकी पुलिस का वीडियो वायरल हो चुका है बालू लदे ओवरलोड वाहनों से वसूली में पुलिस इतनी थक जाती है कि वह चौकी वापस आकर बेसुध होकर सो जाती है टेवा चौकी पुलिस क्षेत्र में बीती रात हादसे में चौकी पुलिस की लापरवाही के मामले में आला अधिकारियों को मामला संज्ञान लेकर जांच कराते हुए दोषियों पर कठोर कार्रवाई करनी होगी।

आयुर्वेदिक संस्थान द्वारा आयोजित किया गया निःशुल्क चिकित्सा शिविर

शिविर में मरीजों का इलाज और जांच करते चिकित्सक

अखंड भारत संदेश

चंद्रशेखर सिंह आयुर्वेदिक संस्थान द्वारा हमारा आयुष हमारा स्वास्थ्य के माध्यम से आयोजित किया गया चिकित्सा शिविर

कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के रसूलाबाद कोइलहा स्थित चंद्रशेखर सिंह आयुर्वेदिक संस्थान द्वारा स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर का आयोजन कर मरीजों के स्वास्थ्य परीक्षण और उनके इलाज तथा उन्हें मौसमी बीमारियों से बचाव के तरीके बताए गए हैं कार्यक्रम में तमाम मरीजों ने अपने स्वास्थ्य की जांच कराई और इलाज कराया है। बताते चलें कि आयुष मंत्रालय,भारत सरकार नई दिल्ली के द्वारा संचालित भारत की आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत ₹हमारा आयुष हमारा स्वास्थ्य के माध्यम से संस्था चन्द्रशेखर सिंह आयुर्वेद संस्थान, कोइलहा के द्वारा चिरईया नाला गाँव में ₹निःशुल्क चिकित्सा शिविर₹ का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के योग्य चिकित्सकों डॉ० टी०एस० शुक्ला एवं डॉ उपासना मिश्रा द्वारा कुल 78 मरीजों का निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं कोविड-19 से बचाव व मौसमी बीमारियों से बचाव की जानकारी दी गई। संस्थान द्वारा इस अवसर पर निःशुल्क आयुष काढ़ा एवं आयुर्वेदिक औषधिओं का वितरण भी किया गया संस्थान द्वारा समय-समय पर निशुल्क स्वास्थ्य चिकित्सा शिविर का आयोजन कर आयुर्वेदिक चिकित्सकों द्वारा आयुर्वेद से होने वाले लाभ के बारे में मरीजों और ग्रामीणों को जानकारी दिया जाता है।

लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली में प्रगति करे सुनिश्चित : प्रभारी मंत्री

अखंड भारत संदेश

नगर निकायों में स्थित तालाबों पर हुए अवैध कब्जों को हटाने चिकित्सकों को बर्खास्त करने आरा मशीनों पर कार्यवाही करने सहित विभिन्न निर्देश दे गए प्रभारी मंत्री

राजस्व वसूली की बैठक में मौजूद विभिन्न विभाग के अधिकारी

कौशाम्बी। जनपद के प्रभारी मंत्री राज्यमंत्री लोक निर्माण विभाग उत्तर प्रदेश चन्द्रिका प्रसाद उपाध्याय ने सम्राट उदयन सभागार में कर करेत्तर एवं राजस्व तथा विकास कार्यों की समीक्षा की प्रभारी मंत्री ने कर करेत्तर एवं राजस्व की समीक्षा के दौरान आबकारी स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन खनन विद्युत परिवहन वाणिज्यकर एवं नगर निकाय के अधिकारियों को लक्ष्य के सापेक्ष राजस्व वसूली में प्रगति सुनिश्चित करने के निर्देश दिये बैठक में विकास कार्यों की समीक्षा के दौरान नहरों की सफाई का कार्य अभी तक पूर्ण न होने पर प्रभारी मंत्री ने नाराजगी प्रकट करते हुए अधिशासी अभियंता सिंचाई को सफाई का कार्य शीघ्र पूर्ण कर 01 दिसम्बर 2021 से नहरों को संचालित करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिशासी अभियंता विद्युत को निर्देशित किया कि वे सुनिश्चित करें कि शासन द्वारा निर्धारित अवधि तक विद्युत की आपूर्ति एवं जेई आमजन के फोन को रिसीव कर समस्या का निस्तारण करें उन्होंने पीडब्ल्यूडी द्वारा निमार्णाधीन सड़कों की प्रगति की समीक्षा के दौरान सड़कों का निर्माण कार्य निरन्तर चल रहा है या नहीं इसकी जांच हेतु जिलाधिकारी को सड़कों का सत्यापन कराने के निर्देश दिये उन्होंने गड्ढा मुक्ति के कार्य को 30 नवम्बर 2021 तक हर हालत में पूर्ण करने के निर्देश दिये इसके साथ ही उन्होंने अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग को स्वीकृति सड़कों का शिलान्यास जनप्रतिनिधियों से शीघ्र कराने के निर्देश दिये उन्होंने किसान सम्मान निधि योजना से सभी पात्र किसानों को लाभान्वित किये जाने हेतु विकास खण्डवार कैम्प लगाने एवं पम्पलेट का वितरण कर आमजन को जागरूक करने के निर्देश दिये।

बैठक में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, शाखा में नियुक्त चिकित्सक के प्रतिदिन स्वास्थ्य केन्द्र में नहीं आने की शिकायत पर मुख्य चिकित्साधिकारी ने बताया कि उनके द्वारा चिकित्सक का वेतन रोक दिया गया हैं एवं स्पष्टीकरण मांगा गया है, जिस पर प्रभारी मंत्री ने टर्मिनेट की कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने सीएमओ को आयुष्मान योजना के तहत गोल्डेन कार्ड बनाये जाने के कार्य में प्रगति लाने एवं जननी सुरक्षा योजना के लाभार्थियों का भुगतान समय से किये जाने तथा प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के स्वास्थ्य जांच हेतु कैम्प लगाने के निर्देश दिये उन्होंने डीपीआरओ को निर्देशित किया कि वे सुनिश्चित करें कि किसी भी सामुदायिक शौचालय में ताला बंद होने की शिकायत न आने पाये। उन्होंने ई0ओ0 मंझनपुर को डोर-टू-डोर कूड़ा कलेक्शन कराने के निर्देश दिये। उन्होंने जनपद के नगर निकायों में स्थित तालाबों पर हुए अवैध कब्जों को हटाने के निर्देश दिये। उन्होंने राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत स्वयं सहायता समूहों के गठन में अपेक्षानुसार प्रगति न पाये जाने पर नाराजगी प्रकट करते हुए तेजी से प्रगति लाने के निर्देश दिये। उन्होंने कार्यदायी संस्था आर0ई0एस0 द्वारा स्वीकृत सड़कों का अभी तक टेण्डर जारी न करने पर कड़ी नाराजगी प्रकट करते हुए शीघ्र टेण्डर जारी कराने के निर्देश दिये।

प्रभारी मंत्री ने बैठक में अधिशासी अभियंता जल निगम के अनुपस्थित होने पर स्पष्टीकरण एवं ए0ई0 आर0ई0एस0 के अनुपस्थित होने पर चेतावनी जारी करने के निर्देश दिये। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि विभिन्न योजनाओं के तहत प्राप्त आवेदनों का सत्यापन कार्य शीघ्र पूर्ण करायें तथा विभिन्न योजनाओं के तहत प्राप्त ऋण आवेदनों में पैरवी कर बैंको से ऋण दिलाने के निर्देश दिये। उन्होंने कार्यदायी संस्थाओं को निर्माण कार्यो को तेजी से पूर्ण कराने के भी निर्देश दिये। प्रभारी मंत्री द्वारा कन्या सुमंगला योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, छात्रवृत्ति, पेंशन, प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी एवं ग्रामीण, आपरेशन कायाकल्प एवं कोविड-19 टीकाकरण आदि की प्रगति की भी विस्तृत समीक्षा की गयी बैठक में अध्यक्ष, जिला पंचायत कल्पना सोनकर विधायकगण शीतला प्रसाद उर्फ पप्पू पटेल एवं संजय कुमार गुप्ता, जिलाधिकारी सुजीत कुमार तथा मुख्य विकास अधिकारी शशिकांत त्रिपाठी सहित अन्य अधिकारी संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

जिद छोड़ें किसान नेता

संयुक्त किसान मोर्चा अब चाहे जो भी कहे, इसमें संदेह नहीं कि यह आंदोलन मुख्य रूप से तीनों कृषि बिल पास किए जाने के बाद और उसके विरोध में ही शुरू हुआ था। इन्हें बिना शर्त वापस लेना ही इस आंदोलन की मुख्य मांग थी, जो पूरी हो चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुक्रवार को किए गए तीनों कृषि कानून वापस लेने के एलान के बाद जहां सरकार ने इसकी प्रक्रिया शुरू कर दी है, वहीं संयुक्त किसान मोर्चा ने अपना रुख और कड़ा कर लिया है। सोमवार को लखनऊ में आयोजित महापंचायत में किसान नेताओं ने साफ कह दिया कि उनका आंदोलन पूर्वघोषित कार्यक्रम के अनुसार चलता रहेगा। वे इसे न्यूनतम समर्थन मूल्य की कानूनी गारंटी समेत कई अन्य मांगों से जोड़ रहे हैं। उनकी दलील है कि एक तो यह आंदोलन कृषि कानूनों की वापसी की इकलौती मांग के साथ शुरू नहीं हुआ था, दूसरी बात यह कि कई मसले आंदोलन के दौरान सामने आए।

उदाहरण के लिए आंदोलनकारी किसानों के खिलाफ दर्ज किए गए मामले और लखीमपुर खीरी कांड के दोषियों का सवाल। जहां तक आंदोलन के दौरान उत्पन्न मसलों की बात है तो केस दर्ज होने का मुद्दा प्रायः हर आंदोलन से जुड़ जाता है। अत्यधिक गंभीर किस्म के और आपराधिक मामलों को छोड़कर अक्सर ये मामले सरकार वापस भी ले लेती है। लखीमपुर खीरी मामले में भी हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज की देखरेख में जांच शुरू हो चुकी है। फिर भी, इन सवालों पर सरकार से अलग से बातचीत की जा सकती है, उसके सामने अपना आग्रह भी रखा जा सकता है। इसके लिए आंदोलन को पूर्वघोषित कार्यक्रम के अनुसार जारी रखने की जरूरत नहीं है। संयुक्त किसान मोर्चा अब चाहे जो भी कहे, इसमें संदेह नहीं कि यह आंदोलन मुख्य रूप से तीनों कृषि बिल पास किए जाने के बाद और उसके विरोध में ही शुरू हुआ था। इन्हें बिना शर्त वापस लेना ही इस आंदोलन की मुख्य मांग थी, जो पूरी हो चुकी है। अब इनमें अन्य मांगों को जोड़ने का सीधा मतलब यही है कि संयुक्त किसान मोर्चा को लग रहा है कि सरकार दबाव में आ गई है, सो उससे जितना हो सके अपनी मांगें मनवा ली जाएं। यह नजरिया उचित नहीं है। इन मांगों के साथ समाज के उन हिस्सों के हित जुड़े हुए हैं, जो अपनी मांगों के साथ सड़क पर नहीं उतरे हैं और यह विश्वास बनाए हुए हैं कि उनके वोटों से निर्वाचित सरकार उनके हितों का भी ख्याल रखेगी। आम जनता का यह विश्वास लोकतंत्र का आधार है। इसे कमजोर नहीं होने दिया जा सकता। खासकर, संयुक्त किसान मोर्चा एमएसपी के लिए कानूनी गारंटी की जिस मांग पर सबसे ज्यादा जोर दे रहा है, वह न केवल कृषि क्षेत्र में सुधार की राह रोकने वाली है बल्कि पर्यावरण संबंधी खतरों को कम करने के लिए जरूरी बदलाव लाने में भी बाधा बनेगी। सरकार को समय रहते यह स्पष्ट संदेश देना होगा कि किसी खास मसले पर लचीचापन दिखाने का यह मतलब नहीं है कि वह अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर दृढ़ता का परिचय नहीं दे सकती।

किसान आन्दोलनः अब वो सवाल जो मीडिया और पत्रकारिता पर भी उठने चाहिए

राजीव चौधरी

गुरु पर्व के मौके पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र के नाम संबोधन में राष्ट्र से माफी मांगते हुए तीन कृषि कानून वापिस ले लिए। इसके बाद इससे पहले बिल का समर्थन कर रहे तमाम भाजपा के सोशल मीडिया गुट ने कई चीजें पेश की। कोई लिख रहा था, शेर शिकार के लिए चार कदम पीछे हटता है। एक ने लिखा, कृषि कानून नेहरूजी की सोच थी, यह पता चलते ही मोदीजी ने इसे वापस ले लिया। तो एक ने लिखा, मोदीजी देखना चाहते थे कौन देशभक्त है और कौन गद्दार,कृषि कानून के जरिये वह गद्दारों को पहचान गए हैं। यानि ये कृषि कानून नहीं थे। एक राष्ट्रीय देशभक्ति और गद्दारी की परीक्षा थी। जिसमें एग्जाम लेने के बाद 19 नवम्बर को माफी नहीं बल्कि सरकारी मेरिट लिस्ट थी। दूसरा मोदी जी को एक साल बाद पता चला कि कृषि कानून तो नेहरु जी की सोच थी। तो इस कारण वापिस लिए अगर पंडित दीनदयाल जी की सोच होती तो वापिस नहीं लिए जाते। शायद यही समझाया जा रहा है! बहराल बिल वापिसी को घोषणा हो चुकी है। लेकिन मीडिया एक वर्ग अभी भी खामोश नहीं है। उनका मानना है सरकार जो करती है, वो सही करती है। जो लोग किसी मामले में सरकार को सलाह दे या लोकतंत्र की बात करें उन्हें न्यूज स्टूडियो में बुलाकर फटकार लगाई जानी चाहिए। जैसे अभी टाइम्स नाउ के पत्रकार सुशांत सिंह ने मेघालय के गवर्नर सत्यपाल मालिक उल जुलूल सवाल किये। बाद में उन्हें नीचा दिखाने के लिए उन पर हाथ में पेन लेकर, वाइट बोर्ड पर एक पूरा प्रोग्राम किया। सिर्फ इस कारण क्योंकि उन्होंने सरकार और किसानों के बीच विवाद को सुलझाने का बयान दिया था। पर मेरे सवाल ये नहीं है। मेरे सवाल आन्दोलन के आरम्भ से लेकर अंत तक है और इन्ही हिडन सरकारी पत्रकारों और चैनलों से है। क्योंकि जिस अनूठी पत्रकारिता का नमूना पेश इस दौरान किया गया, शायद उसे देखकर आगे आने वाले कई सालों तक पत्रकारिता शर्मिंदगी का बोझ उठाये।

पहले कहा जाता रहा ये किसान आन्दोलन नहीं है ये तो खालिस्तानी आन्दोलन है। जी न्यूज से लेकर रिपब्लिक तक अनेकों न्यूज चैनल इस बात पर हर रोज ज्ञान का पिटारा खोलते और आन्दोलन में शामिल किसानों को खालिस्तानी बताते हुए कहते कि असली किसान तो खेतों में है ये जो पिज्जा खा रहे है, जींस की पेंट पहने हुए अंग्रेजी बोल रहे है ये किसान नहीं ये तो खालिस्तानी गुट है। दूसरा कुछ दिन बाद कहा गया कि किसान आन्दोलन में पाकिस्तान और चाइना की साजिश है। आई. एस. आई. का षड्यंत्र है और बड़े-बड़े प्रोग्राम बिना जिम्मेदारी लिए खबर बनाकर परोसते नजर आये। फिर कहा गया, ये किसान आन्दोलन तो मात्र कुछ क्षेत्र और जाति विशेष का है। इसमें समूचे देश के किसान शामिल नहीं है। फिर सरकार के किसी मंत्री ने किसान आन्दोलनकारियों मवाली, गुंडे और बागपत से एक बीजेपी नेता की पुत्री ने तो भेड़ियाँ तक की उपाधि दे डाली। इसी दौरान जी न्यूज के पत्रकार ने डीएनए किया और देश को बताया कि ये किसान आन्दोलन नहीं है, बल्कि देशविरोधी आन्दोलन और मोदी को हटाने का षड्यंत्र है। बस यही से अब कुछ सवाल खड़े हो गये। पहला तो ये कि अगर मान लिया जाये कि ये देशव्यापी आन्दोलन के बजाय कुछ किसानों का आन्दोलन था तो फिर वापिस क्यों लिया गया। बताया गया ये उत्तर प्रदेश-पंजाब जैसे राज्यों के चुनाव को ध्यान में रखकर लगाया गया मास्टरस्ट्रोक है, कभी पार्टी को चुनाव में नुकसान न हो जाये। अगर ऐसा है तो फिर इस बात का जवाब कौन देगा कि किसान-हित अधिक प्रिय है या सत्ता की कुर्सी। आखिर क्यों आपने मात्र कुछ किसानों के आगे घुटने टेकते हुए प्रकाश तुल्य और गंगा जल से पवित्र बिल वापिस किया, सिर्फ इस कारण कि पार्टी को सत्ता चाहिए । अगर बिल प्रकाश तुल्य और गंगा जल सा पवित्र था और किसानों के हित का था। तो देशहित किसान हित में आने वाले चुनाव का नफा नुकसान क्यों देखा गया लगा देते दांव पर सत्ता । कह देते कि मेरे लिए देशहित किसानहित सर्वोपरी है ना कि सत्ता।

दूसरा मीडिया के कुछ पत्रकार बंधुओं की ओर से ये कहा गया कि आन्दोलन में खालिस्तान समूह चाइना, पाकिस्तान की मिलीभगत है और वो बार कुछ सबूत भी दिखाते। चलो एक बारगी मान लिया, अब सवाल ये है कि अगर ये षड्यंत्र के सटीक एंगल थे तो इन कथित पत्रकारों द्वारा सरकार को ये सबूत क्यों नहीं सोंपे गये। अगर नहीं थे तो सरकार ने इस झूठी अफवाह पूर्ण पत्रकारिता पर बेन इन्हें चेतावनी या बेन क्यों नहीं किया। तीसरा अगर ये एंगल थे तो सरकारी जाँच एजेंसी कहाँ थी। क्यों इस देशविरोधी एंगल की गहन स्तर पर जाँच नहीं की गयी। आखिर क्यों इसमें शामिल दोषी नेताओं पर मुकदमे दर्ज नहीं किये और उनकी गिरफ्तारी नहीं की गयी। चौथा प्रश्न जी न्यूज की ओर से कहा गया कि ये आन्दोलन नहीं है बल्कि मोदी जी को हटाने की देशविरोधी साजिश है! चलो एक पल को मान लिया, मोदी जी को हटाने के लिए आन्दोलन हो सकता है लेकिन इसमें देश विरोध कहाँ से आ गया। अगर लोकतान्त्रिक तरीके से चुनी गयी किसी सरकार से सवाल पूछना उसकी नीति के विरुद्ध आन्दोलन करना पाप और देश विरोध है, तो इससे पहले इस देश की जिन-जिन सरकारों ने ऐसे सवाल नीतियों के विरुद्ध आन्दोलन किये क्या वो सभी देशविरोधी आन्दोलन थे।

भारतीय राजनीति में गैर कांग्रेसवाद के शिल्पी राम मनोहर लोहिया जो नेहरु की नीति का विरोध किया करते थे। जिनकी वजह से साल 1967 में कई राज्यों में कांग्रेस को हार का सामना करना पड़ा क्या लोहिया जी को देशविरोधी कहा जायेगा या कहा गया था। 5 जून 1974 को जय प्रकाश नारायण ने इंदिरा गांधी के खिलाफ संपूर्ण क्रांति का नारा दिया। विपक्ष को एकजुट किया। सत्ता के खिलाफ आवाज उठाने का फैसला किया। आन्दोलन हुआ, कई छात्र भी पुलिस की गोली से मारे गये। ये इंदिरा की सत्ता को खुली चुनोती थी। तो क्या जेपी का आन्दोलन देशविरोधी साजिश थी। और जेपी देशद्रोही। क्या उस समय जेपी को आतंकी, खालिस्तानी, पाकिस्तानी गुंडा मवाली भेड़ियाँ कहा गया था। मेरा जन्म बाद में हुआ तो पूछ रहा हूँ। इसके बाद राजीव गाँधी सरकार में बोफोर्स तोप दलाली के मुद्दे पर मंत्री पद को लात मार आए वीपी सिंह भारतीय राजनीति के पटल पर नए मसीहा के साथ अवतरित हुए। मंडल कमीशन की सिफारिशों को देश में लागू किया। जिसके खिलाफ देश भर में सवर्ण समुदाय ने आंदोलन किया। बड़ा आन्दोलन हुआ जिसमें कई जाने गयी क्या वो भी देशविरोधी गतिविधि थी। मनमोहन सरकार के खिलाफ बीजेपी ने देश भर में महंगाई का आन्दोलन किया। जगह-जगह प्रदर्शन किये। इसके अलावा दिल्ली के रामलीला मैदान में अन्ना का लोकपाल आन्दोलन कौन भूला होगा। क्या उस दौरान कांग्रेस हटाओ और तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के खिलाफ लगते नारे देश विरोधी साजिश थी। क्या अन्ना जी देशद्रोही थे क्या उनका आन्दोलन करना पाप था। अगर आजादी के बाद देश में विभिन्न सरकारों के कानून, फैसलों, नीतियों के विरोध में हुए तमाम छोटे बड़े आन्दोलन देशविरोधी आन्दोलन नहीं थे तो वर्तमान का किसान आन्दोलन देशविरोधी कैसे। और अगर लोकतान्त्रिक ढांचे में जनता के द्वारा चुने गये जनप्रतिनिधि का विरोध करना देशद्रोह है तो सवाल बनता है कि सितम्बर 2013 में नकली लालकिला बनाकर राष्ट्र को सन्देश देते और तत्कालीन सरकार पर सवाल उठाते आज के वर्तमान प्रधानमंत्री जी क्या कर रहे थे देशविरोध या देशभक्ति। इस सवाल को अपनी आत्मा की गहराई से सोचे, खुद से और उन तमाम तथाकथित पत्रकारों से ये सवाल कीजिये जो देश को 2014 में मिली आजादी के बयान को जस्टिफाई कर रहे है।

यूरोप में कोविड प्रतिबंधों का क्यों हो रहा विरोध

सैयद जैगम मुर्तजा

यूरोप के कई शहर इन दिनों हिंसा की चपेट में हैं। बेल्जियम, हॉलैंड, ऑस्ट्रिया, इटली, फ्रांस और क्रोएशिया के कई शहरों में लोगों ने सड़कों पर विरोध मार्च निकाले हैं। इस बीच दर्जनों लोगों के घायल होने और कई दर्जन अन्य के गिरफ्तार होने की भी खबरें हैं। लेकिन ऐसा क्यों हो रहा है। दरअसल, यूरोप में तमाम देशों ने कोरोना संक्रमण की रोकथाम के लिए ताजा प्रतिबंधों का एलान किया है। बेल्जियम में आंशिक लॉकडाउन और अनिवार्य कोविड टीकाकरण की घोषणा की गई है। बेल्जियम और हॉलैंड समेत कई यूरोपीय देशों में सरकार ने उन लोगों के सार्वजनिक जगहों पर प्रवेश को सीमित कर दिया है जिन्होंने अभी तक कोविड रोधी टीका नहीं लगवाया है। इन प्रतिबंधों के खिलाफ ब्रसेल्स में तकरीबन पैंतीस हजार लोगों ने सरकार के खिलाफ मार्च निकाल कर विरोध जताया। ब्रसेल्स बेल्जियम की राजधानी होने के अलावा यूरोपीय संघ का मुख्यालय भी है। इससे पहले शुक्रवार को रॉटरडैम में और शनिवार को हेग में सरकार विरोधी प्रदर्शन हुए। ग्रोनिंगन और लियोवार्डन में दंगा रोधी पुलिस बल तैनात करने पड़े। एनशीड, लिंज, विएना, और गुआडलूप में भी प्रदर्शन और हिंसा की खबरें हैं। सवाल यह है कि लोगों में आखिर इतना गुस्सा क्यों है। हाल ही में स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े लोगों ने दावा किया है कि यूरोप तेजी से कोविड की पांचवीं लहर की चपेट में आ रहा है। ठंड बढ़ने के साथ ही ऑस्ट्रिया, रूस और जर्मनी में कोविड संक्रमण के ताजा मामले दर्ज किए गए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन यानी डब्ल्यूएचओ के मुताबिक नवंबर के दूसरे हफ्ते में पहले हफ्ते के मुकाबले पांच फीसदी ज्यादा मामले दर्ज हुए। तीसरा हफ्ता आते-आते यह तादाद और बढ़ गई। इसके बाद ऑस्ट्रिया में सोमवार से 10 दिन का लॉकडाउन लगा दिया गया। यह अगले दस दिन और बढ़ाया जा सकता है। जर्मनी में भी फिर से लॉकडाउन लगने की आशंका जताई जा रही है। चेक गणराज्य, ग्रीस और रूस में ताजा कोरोना मामले सामने आने पर आपात प्रतिबंधों की आशंका जताई जा रही है। स्लोवाक गणराज्य में उन लोगों को सार्वजनिक जगहों से प्रतिबंधित किया जा रहा है जिन्होंने अभी तक टीका नहीं लगवाया है। लोगों में इस सबके खिलाफ काफी गुस्सा है। ऐसा इसलिए भी है कि यूरोपीय आबादी के एक बड़े हिस्से का अभी तक टीकाकरण नहीं हो पाया है।

19 नवंबर तक ऑस्ट्रिया में कुल 64 फीसद लोगों को ही टीका लगाया जा सका है। जर्मनी में 32.2 फीसद लोगों को अभी भी टीका लगना बाकी है। स्लोवाकिया में महज 45.3 फीसदी लोग ही टीकाकरण करा पाए हैं। हालांकि आयरलैंड में करीब अस्सी फीसद लोगों को टीका लग चुका है लेकिन कोरोना संक्रमण फैलने का खतरा बरकरार है। इसकी वजहें सिर्फ सरकारी लापरवाही नहीं है। लोगों में प्रतिबंधों के खिलाफ गुस्सा इसलिए भी है कि टीका लगवाने के बावजूद उन्हें दूसरों की गलती का खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। मजे की बात है जहां सरकारें अनिवार्य टीकाकरण का एलान कर रही हैं वहां अब तक टीका न लगवाने वाले विरोध कर रहे हैं लेकिन जहां सरकार अनिवार्य टीकाकरण की घोषणा से बच रही है वहां लोग ऐसा चाहते हैं। कुल मिलाकर टीकाकरण समर्थक और विरोधी दोनों तरह के लोग सरकारों का सिरदर्द बने हुए हैं। इन सबके साथ ही विरोध प्रदर्शनों की एक बड़ी वजह सरकारों का ढुलमुल रवैया और अचानक की जाने वाली घोषणाएं भी हैं। कोविड-19 का पहला मामला 2019 में सामने आया था। जनवरी 2020 में इसे लेकर वैश्विक आशंकाएं जताई गईं। इसके बाद टीका विकसित करने, टीकाकरण के नतीजों और टीके की वैधता को लेकर अलग-अलग दावे किए गए। इतना अरसा गुजर जाने के बाद भी न तो सरकारें और न ही वैश्विक एजेंसियां, कोई साफ-साफ दावा करने की स्थिति में हैं। बार-बार बदलते दावों और इस गंभीर बीमारी के लगातार खतरा बने रहने की वजह से लोगों का धैर्य जवाब देने लगा है। लोग जानना चाहते हैं कि आखिर कोविड संक्रमण से दुनिया को कब पूरी तरह निजात मिलेगी और कब लोग सामान्य जिंदगी जी पाएंगे। लेकिन इसका सही-सही जवाब न सरकारों के पास है और न डब्ल्यूएचओ के पास।

चिंताजनक है महिलाओं के प्रति बढ़ती हिंसा

योगेश कुमार गोयल

अंतरराष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवस पर विशेष

विश्वभर में प्रतिवर्ष 25 नवम्बर को महिलाओं पर होने वाली हिंसा को रोकने के लिए ह्यअंतर्राष्ट्रीय महिला हिंसा उन्मूलन दिवसह्न मनाया जाता है। इस दिन महिलाओं के विरुद्ध हिंसा रोकने के ज्यादा से ज्यादा प्रयास करने की आवश्यकता को रेखांकित करने वाले कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पैट्रिया मर्सिडीज मिराबैल, मारिया अर्जेंटीना मिनेर्वा मिराबैल तथा एंटोनिया मारिया टेरेसा मिराबैल द्वारा डोमिनिक शासक रैफेल ट्रुजिलो की तानाशाही का कड़ा विरोध किए जाने पर उस क्रूर शासक के आदेश पर 25 नवम्बर 1960 को उन तीनों बहनों की हत्या कर दी गई थी। वर्ष 1981 से उस दिन को महिला अधिकारों के समर्थक और कार्यकर्ता उन्हीं तीनों बहनों की मृत्यु की पुण्यतिथि के रूप में मनाते आए हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 17 दिसम्बर 1999 को एकमत से हर साल 25 नवम्बर का दिन ही महिलाओं के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय हिंसा उन्मूलन दिवस के रूप में मनाने के लिए निर्धारित किया गया। सरकारों, निजी क्षेत्र और प्रबुद्ध समाज से यौन हिंसा और महिलाओं के उत्पीड़न के विरुद्ध कड़ा रुख अपनाने का आग्रह करते हुए संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुतारेस का कहना है कि महिलाओं के प्रति हिंसा विश्व में सबसे भयंकर, निरंतर और व्यापक मानवाधिकार उल्लंघनों में शामिल है, जिसका दंश विश्व में हर तीन में से एक महिला को भोगना पड़ता है।

महिलाओं की सुरक्षा और सशक्तिकरण के क्षेत्र में कार्य करने के लिए वर्ष 2010 में संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा ह्यसंयुक्त राष्ट्र महिलाह्न का गठन किया गया था। संयुक्त राष्ट्र महिला के आंकड़ों के अनुसार विश्वभर में 15-19 आयु वर्ग की करीब डेढ़ करोड़ किशोर लड़कियां जीवन में कभी न कभी यौन उत्पीड़न का शिकार होती हैं। करीब 35 फीसदी महिलाओं और लड़कियों को अपने जीवनकाल में शारीरिक एवं यौन हिंसा का सामना करना पड़ता है। हिंसा की शिकार 50 फीसदी से अधिक महिलाओं की हत्या उनके परिजनों द्वारा ही की जाती है। वैश्विक स्तर पर मानव तस्करी के शिकार लोगों में 50 फीसदी व्यस्क महिलाएं हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार प्रतिदिन तीन में से एक महिला किसी न किसी प्रकार की शारीरिक हिंसा का शिकार होती है। भारत के संदर्भ में महिला हिंसा को लेकर आंकड़ों पर नजर डालें तो स्थिति काफी चिंताजनक है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने कुछ दिनों पहले जो आंकड़े जारी किए हैं, उनके मुताबिक वर्ष 2020 में कोरोना महामारी के कारण राष्ट्रीय तालाबंदी के महीनों के रूप में चिह्नित एक वर्ष में महिलाओं और बच्चों के खिलाफ पारंपरिक अपराधों में भले कुछ कमी देखी गई लेकिन देश में अपराध के मामले 28 प्रतिशत बढ़ गए। जबकि लॉकडाउन के बाद महिलाओं और बच्चों के खिलाफ आपराधिक मामलों में तेजी आई है। एनसीआरबी के अनुसार देशभर में 2020 में बलात्कार के प्रतिदिन औसतन 77 मामले दर्ज किए गए और कुल 28046 मामले सामने आए। वर्षभर में पूरे देश में महिलाओं के खिलाफ अपराध के कुल 371503 मामले दर्ज किए गए, जो 2019 में 405326 और 2018 में 378236 थे। एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक वर्ष 2019 में महिलाओं के खिलाफ 405326 मामले सामने आए थे, जिनमें प्रतिदिन औसतन 87 मामले बलात्कार के दर्ज किए गए। रिपोर्ट के अनुसार देशभर में वर्ष 2018 के मुकाबले 2019 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के मामलों में 7.3 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई थी। एनसीआरबी के अनुसार देश की राजधानी दिल्ली में वर्ष 2020 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 10093 मामले दर्ज किए गए। जबकि 2019 में ऐसे 13395 मामले सामने आए थे अर्थात 2019 की तुलना में 2020 में महिलाओं के खिलाफ 24.65 फीसदी अपराध कम हुए। 2019 के मुकाबले दिल्ली में 2020 में भले ही महिलाओं के खिलाफ अपराध करीब 25 प्रतिशत घट गए लेकिन कोविड-19 महामारी और लॉकडाउन के कारण जब देश की अधिकांश आबादी अपने घरों में थी, स्कूल-कॉलेज बंद थे, वर्क फ्रॉम होम चल रहा था, ऐसे में भी 2020 में महिलाओं के खिलाफ अपराध के 10093 मामले सामने आना कम चिंताजनक नहीं है। 2020 में दिल्ली में महिलाओं के अपहरण के 2938, बलात्कार के प्रयास के 9 और बलात्कार या सामूहिक बलात्कार के बाद हत्या का एक मामला दर्ज किया गया। यही नहीं, इस दौरान देशभर में साइबर अपराध 2019 के मुकाबले 11.8 फीसदी बढ़ा है। भारत में 2020 में साइबर अपराध के 50035 मामले दर्ज किए गए जबकि 2019 में साइबर अपराध के 44735 और 2018 में 27248 मामले दर्ज हुए थे।

वर्ष 2012 में दिल्ली में हुए निर्भया कांड के बाद देशभर में सड़कों पर महिलाओं के आत्मसम्मान के प्रति जिस तरह की जन-भावना और युवाओं का तीखा आक्रोश देखा गया था, यौन हिंसा रोकने के लिए जिस प्रकार कानून सख्त किए गए थे, उसके बाद लगने लगा था कि समाज में इससे संवदनशीलता बढ़ेगी और ऐसे कृत्यों में लिप्त असामाजिक तत्वों के हौसले पस्त होंगे किन्तु विडंबना है कि समूचे तंत्र को झकझोर देने वाले निर्भया कांड के बाद भी हालात यह है कि कोई दिन ऐसा नहीं बीतता, जब महिला हिंसा से जुड़े अपराधों के मामले देश के कोने-कोने से सामने न आते हों। होता सिर्फ यही है कि जब भी कोई बड़ा मामला सामने आता है तो हम पुलिस-प्रशासन को कोसते हुए संसद से लेकर सड़क तक कैंडल मार्च निकालकर या अन्य किसी प्रकार से विरोध प्रदर्शन कर रस्म अदायगी करके शांत हो जाते हैं और पुनः तभी जागते हैं, जब ऐसा ही कोई बड़ा मामला पुनः सुर्खियां बनता है, अन्यथा महिला हिंसा की छोटी-बड़ी घटनाएं तो बदस्तूर होती ही रहती हैं। ऐसे अधिकांश मामलों में प्रायः पुलिस-प्रशासन का भी गैरजिम्मेदाराना रवैया ही सामने आता रहा है। अहम प्रश्न यही है कि निर्भया कांड के बाद कानूनों में सख्ती, महिला सुरक्षा के नाम पर कई तरह के कदम उठाने और समाज में आधी दुनिया के आत्मसम्मान को लेकर बढ़ती संवेदनशीलता के बावजूद आखिर ऐसे क्या कारण हैं कि बलात्कार के मामले हों या छेड़छाड़ अथवा मयार्दा हनन या फिर अपहरण अथवा क्रूरता, ह्यआधी दुनियाह्न के प्रति अपराधों का सिलसिला थम नहीं रहा है। इसका एक बड़ा कारण यही है कि कड़े कानूनों के बावजूद असामाजिक तत्वों पर वह कड़ी कार्रवाई नहीं होती, जिसके वे हकदार हैं। इसके अभाव में हम ऐसे अपराधियों के मन में भय पैदा करने में असफल हो रहे हैं। हैदराबाद की बेटी दिशा का मामला हो या उन्नाव पीड़िता का अथवा हाथरस या बुलंदशहर की बेटियों का, लगातार सामने आते इस तरह के तमाम मामलों से स्पष्ट है कि केवल कानून कड़े कर देने से ही महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध थमने वाले नहीं हैं। इसके लिए सबसे जरूरी है कि तमाम सरकारें प्रशासनिक मशीनरी को चुस्त-दुरुस्त करने के साथ ऐसे अपराधों के लिए प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित करें और ऐसे मामलों में कोताही बरतने वाले जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएं।

लोकतंत्र के लिए कैसा है कृषि कानूनों पर फैसला

उमेश चतुर्वेदी

राजनीति विज्ञान में किसी पश्चिमी विचारक का प्रधानमंत्री पद के लिए एक कथन खूब पढ़ाया जाता है। इसके जरिए बताने की कोशिश होती है कि संसदीय लोकतंत्र में प्रधानमंत्री पद की क्या अहमियत होती है। इस कथन के अनुसार, प्रधानमंत्री देश रूपी जहाज का मस्तूल होता है। पानी के जहाज में मस्तूल का वही काम होता है, जो कार-बस में स्टीयरिंग का। इस कथन के संदर्भ में देखें तो तीन कृषि कानूनों की वापसी की प्रधानमंत्री की घोषणा का स्वागत होना चाहिए। लेकिन पिछले साल नवंबर से आंदोलनरत तबके अपना आंदोलन वापस लेने को तैयार ही नहीं। बल्कि, उनकी मांगों की फेहरिस्त लगातार बढ़ती जा रही है।

चूंकि वैचारिकी और राजनीति के लिहाज से मुफीद विचारों का ही समर्थन आज के दौर का चलन है, इस वजह से विरोधी खेमे और वैचारिकी वाले वे लोग भी प्रधानमंत्री के इस कदम का समर्थन नहीं कर पा रहे हैं, जिनकी सोच बदलती नजर आ रही है। बीजेपी विरोधी एक मुखर दल की सरकार के एक मंत्री ने इन पंक्तियों के लेखक से दो दिन पहले एक बातचीत में कहा कि ह्यप्रधानमंत्री ने अपनी छवि के उलट जाकर बड़ी लकीर खींचने की कोशिश की है। देश और लोकतंत्र के हित में इस लकीर का सम्मान किया जाना चाहिए।ह्न यह बात और है कि इस सोच को वह अपनी ही पार्टी में जाहिर नहीं कर पा रहे। सोशल मीडिया के दौर में सबके अपने-अपने नैरेटिव हैं और उसी के अनुरूप अपने-अपने चहेतों और विरोधियों की छवियां हैं। नैरेटिव के हिसाब से सबके अपने दुश्मन हैं और सब उन्हें अपनी तरह से नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। दिलचस्प है कि सारा कुछ देश और लोकतंत्र को बचाने के नाम पर हो रहा है। सच पूछें तो देश और लोकतंत्र की असल चिंता अगर कहीं है, तो वह ह्यऑफ द रेकॉर्डह्न वाले विचारों और ठेठ देसज सोच में ही बची रह गई है। जब प्रधानमंत्री ने कृषि कानूनों की वापसी का ऐलान किया तो देसज सोच और ह्यऑफ द रेकॉर्डह्न वाली वैचारिकी को लगा कि अब प्रधानमंत्री की अपील के मुताबिक किसान अपने घरों और खेतों में लौट जाएंगे। लेकिन जिस तरह का रुख किसान आंदोलन ने दिखाया है, उससे उस आंदोलन का समर्थन कर रहा तबका भी मुतमईन नजर नहीं आ रहा है। उसे भी अब महसूस होने लगा है कि किसानों के नाम पर दरअसल राजनीति हो रही है। प्रधानमंत्री मोदी की छवि उनके विरोधियों की नजर में निरंकुश और अड़ियल शासक की रही है।

हालांकि इस सोच को चुनौती नागरिकता संशोधन विरोधी आंदोलन के साथ ही किसान आंदोलन भी देता रहा है। दोनों आंदोलनों को पुलिस या सेना के दम पर दबाने की सरकार ने कभी कोशिश नहीं की। ऐसा नहीं कि प्रधानमंत्री चाहते तो यह नहीं हो सकता था। राजनीति विज्ञानी मानते ही हैं कि संसदीय लोकतंत्र में बहुमत दल का नेता बहुमत के चलते निरंकुश बन सकता है। लेकिन कम से कम नागरिकता संशोधन कानून विरोधी आंदोलन और किसान आंदोलन को कुचलने की प्रत्यक्ष प्रशासनिक कोशिश नजर नहीं आई। प्रतिपक्षी दल के एक नेता ऑफ द रेकॉर्ड कथन में प्रधानमंत्री की तुलना अशोक से करने लगे हैं। अशोक का राज्याभिषेक ईसा पूर्व 270 में हुआ। तब से लेकर ईसा पूर्व 261 तक उसने लगातार मौर्य साम्राज्य का विस्तार किया। तब तक अशोक बड़ा और प्रतापी रहा। लेकिन कलिंग विजय के बाद जब वह धम्म यानी बौद्ध धर्म की ओर झुका, तब उसकी जिंदगी की नई यात्रा शुरू हुई। इसके बाद ही वह महान माना गया। तलवार के बजाय करुणा के दम पर शुरू हुई विश्व विजय यात्रा ही अशोक को महान बनाती है। इन संदर्भों के लिहाज से देखें तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा भी अशोक की कलिंग विजय से पहले तक की यात्रा जैसी ही रही है। नोटबंदी हो या कश्मीर से संबंधित संविधान के अनुच्छेद 370 का खात्मा, राममंदिर का निर्माण हो या फिर तीन तलाक जैसी दारुण व्यवस्था का समापन- इन तमाम कदमों से प्रधानमंत्री मोदी का कड़क रुख ही जाहिर होता रहा है। कृषि कानूनों की वापसी कलिंग विजय के बाद विचलित अशोक की धम्म यात्रा जैसी है। यह मामूली बात नहीं है कि निरंकुश और अड़ियल समझी जाने वाली शख्सियत अपने मान और अपमान को किनारे रखकर उन कानूनों की वापसी के लिए देश से माफी मांग ले, जिसे वह अब भी खराब नहीं मानती। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री और पूर्व केंद्रीय मंत्री योगेंद्र कुमार अलघ की कभी ना तो संघ परिवार से नजदीकी रही, ना कभी वे नरेंद्र मोदी के करीबी रहे। लेकिन कानून वापसी के अगले ही दिन लिखे अपने लेख में उन्होंने माना है कि इस कानून को अगर कड़ी-दर-कड़ी लागू किया जाता तो नतीजे कुछ और होते। उन्होंने कहा है कि कुछ अपवादों को छोड़ दें तो ये कानून खराब नहीं थे। कृषि कानूनों की वापसी के बाद मांग उठने लगी है कि प्रधानमंत्री इसी तरह नागरिकता संशोधन कानून को भी वापस लें। शासक के सामने हमेशा ये दिक्कत रहती है कि अगर वह अपने एक फैसले के लिए माफी मांगता है तो उसके विरोधी कई दूसरे भी फैसलों की वापसी के लिए कुतर्क पेश करने लगते हैं। प्रधानमंत्री की घोषणा के बाद ऐसा होने लगा है। ऐसी मांगों का कोई अंत नहीं होता। सियासी मैदान में विरोधी को नीचा दिखाने के लिए ऐसे करतब होते रहेंगे। पर लोकतंत्र में बहुमत के साथ ही लचीला रुख अपनाने वाले की भावनाओं का भी सम्मान करना निहित है। आने वाले पांच राज्यों के चुनाव इसका भी फैसला कर देंगे कि अपने देश में मतदाताओं को लचीलापन स्वीकार्य है या अड़ियलपन।

डब्लूबीबीएल में हरमनप्रीत कौर ने रचा इतिहास

ऐसा करने वाली बनीं पहली इंडियन

नई दिल्ली। भारतीय महिला टी20 टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर के लिए महिला बिग बैश लीग का मौजूदा सीजन काफी यादगार रहा है। हरमनप्रीत ने इस सीजन में बैट और बॉल दोनों से कमाल किया है और प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुनी गई हैं। यह पहला मौका है, जब कोई भारतीय खिलाड़ी बीबीएल में प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट बनी है। इस अवॉर्ड को जीतने के बाद हरमनप्रीत ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि जल्द ही महिला इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) भी शुरू हो जाएगा। मेलबर्न रेनेगेड्स के लिए खेलते हुए हरमनप्रीत ने इस टूर्नामेंट में 399 रन बनाए हैं, जबकि 15 विकेट भी अपने नाम किए हैं। इस टूर्नामेंट के दौरान हरमनप्रीत तीन बार प्लेयर ऑफ द मैच भी चुनी गई हैं। 3-2-1 वोटिंग सिस्टम के तहत उन्होंने बेथ मूने और सोफी डिवाइन को प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट की दौड़ में पीछे छोड़ा। महिला बिग बैश लीग में हरमनप्रीत महज तीसरी ओवरसीज खिलाड़ी हैं, जिन्होंने प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट का खिताब जीता है। इससे पहले न्यूजीलैंड की सोफी डिवाइन और एमी सैटरवेट ने यह कारनामा किया है। आज महिला बिग बैश लीग का एलिमिनेटर मैच ब्रिसबेन हीट और एडिलेड स्ट्राइकर्स के बीच खेला जाएगा। फाइनल मैच 27 नवंबर को खेला जाना है। पर्थ स्कॉचर्स पहले ही फाइनल में पहुंच चुकी है। चैलेंजर मैच 25 नवंबर को मेलबर्न रेनेगेड्स और आज का मैच जीतने वाली टीम के बीच खेला जाना है। चैलेंजर मैच जो टीम जीतेगी वह फाइनल में पर्थ स्कॉचर्स से भिड़ेगी।

केन विलियमसन ने बताया, भारत के खिलाफ सीरीज में दो खिलाड़ियों से शानदार प्रदर्शन की उम्मीद

नई दिल्ली। न्यूजीलैंड के कप्तान केन विलियमसन इस बात से अच्छी तरह वाकिफ हैं कि भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज में स्पिनरों की भूमिका अहम होगी। उन्हें उम्मीद है कि उनके बाएं हाथ के स्पिनर अयाज पटेल और ऑफ स्पिनर विलियम सोमरविले परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाकर अंतर पैदा करेंगे। न्यूजीलैंड को 2016 में कानपुर में करारी शिकस्त का सामना करना पड़ा था। तब रविचंद्रन अश्विन ने अहम भूमिका निभाई थी और विलियमसन जानते हैं कि भारतीय मैदानों पर उन्हें किस तरह की पिचों से रुबरु होना पड़ेगा। विलियमसन ने पहले टेस्ट की पूर्व संध्या पर कहा, 'पूरी सीरीज में स्पिन की भूमिका निर्णायक होगी। कई टीम को इस तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है और हमारी उम्मीदें इससे इतर नहीं हैं। स्पिन की भूमिका महत्वपूर्ण होगी।' उन्होंने कहा, 'अयाज और सोमरविले जैसे स्पिनर हमारे गेंदबाजी आक्रमण में अहम भूमिका निभाएंगे। विशेषकर इन परिस्थितियों में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण होगी। तेज गेंदबाजों को रिवर्स स्विंग मिलने की भी उम्मीद है। हम विकेट निकालने के लिए सभी तरीके आजमाएंगे इसलिए तेज गेंदबाजों और स्पिनरों दोनों भूमिका होगी।' विलियमसन ने कहा कि अश्विन और रविंद्र जडेजा के खिलाफ उनके बल्लेबाजों को न सिर्फ विकेट बचाए रखना होगा बल्कि रन बनाने के तरीके भी ढूंढने होंगे। हम भारतीय स्पिन गेंदबाजों की मजबूती को जानते हैं और वे पिछले लंबे समय से अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। कीवी कप्तान ने कहा, 'हमें रन बनाने के तरीके ढूंढने होंगे तथा साझेदारियां निभाने की कोशिश करनी होगी। प्रत्येक खिलाड़ी अलग होता है, इसलिए उसका तरीका भी बाकी से अलग होगा।' उन्होंने कहा कि टीम का प्रत्येक खिलाड़ी अपनी भूमिका जानता है और उन्होंने सभी से सर्वश्रेष्ठ योगदान की उम्मीद की। उन्होंने आगे कहा, 'हर कोई प्रभाव छोड़ने के लिये अलग तरीका अपनाता है। हमें जिन कुछ चुनौतियों का सामना करना है उनके लिए हर संभव तैयार रहना होगा। विलियमसन ने पूछा गया कि क्या विराट कोहली, रोहित शर्मा, ऋषभ पंत, केएल राहुल, जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद शमी की अनुपस्थिति न्यूजीलैंड जीत का प्रबल दावेदार बन जाता है तो उन्होंने न में जवाब दिया। उन्होंने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि हम जीत के प्रबल दावेदार हैं। भारतीय क्रिकेट की मजबूती उसकी गहराई है। अपनी परिस्थितियों का उनका ज्ञान विशिष्ट है और चुनौती बड़ी है।

ग्रीन पार्क के क्यूरेटर ने बताया, पिच को लेकर टीम मैनेजमेंट से नहीं मिले कोई निर्देश

नई दिल्ली। भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेले जाने वाले पहले टेस्ट मैच की मेजबानी करने वाले यहां के ग्रीन पार्क स्टेडियम के स्थानीय क्यूरेटर शिव कुमार का कहना है कि इस मैदान की पिच पर घास नहीं है लेकिन इसके टूटने (ज्यादा दरार पड़ने) की संभावना काफी कम है। पहले कई बार टीम मैनेजमेंट ने कुछ विशिष्ट प्रकार की पिच तैयार करने के निर्देश दिए हैं, लेकिन कुमार ने कहा कि इस बार न तो कोच राहुल द्रविड़ और न ही कप्तान अजिंक्य रहाणे की कोई विशेष मांग थी। पिछले दो दशक से इस मैदान में काम रहे कुमार ने कहा, 'हमें बीसीसीआई से कोई निर्देश नहीं मिला है, न ही टीम मैनेजमेंट से किसी ने मुझसे संपर्क करके पूरी तरह से स्पिनरों की मददगार पिच बनाने की बात कही। मैंने अच्छी पिच को ध्यान में रखते हुए एक पिच तैयार की है।" उन्होंने कहा, ' यह नवंबर का महीना है और दुनिया के इस हिस्से में इस समय पिच में थोड़ी नमी होगी। मैं आपको इस बात के लिए आश्वस्त कर सकता हूं कि यह पिच जल्दी टूटेगी नहीं। कानपुर में 2016 में खेला गया भारत और न्यूजीलैंड का टेस्ट मैच पांचवें दिन तक चला था लेकिन पिछले कुछ समय से ज्यादातर विदेशी टीमें स्पिनरों के अनुकूल पिचों में तीन दिनों में ही घुटने टेक दे रही है। कुमार ने मैचों के तीन दिनों के अंदर खत्म होने के बारे में पूछे जाने पर कहा, ' इसके लिए सिर्फ पिचें ही जिम्मेदार नहीं है। टी20 क्रिकेट के कारण बल्लेबाजों के स्पिनरों को खेलने का तरीका भी एक वजह है।

श्रीलंका गॉल टेस्ट जीतने से 4 विकेट दूर, वेस्टइंडीज की हालत पतली

नई दिल्ली। श्रीलंका की टीम ने गॉल टेस्ट में अपनी पकड़ मजबूत बना ली है। श्रीलंका ने दो टेस्ट मैचों की सीरीज के पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी में बुधवार को चौथे दिन का खेल खत्म होने तक 25.3 ओवर में वेस्टइंडीज के 52 रन पर छह विकेट आउट कर दिए हैं।जीत के लिए 348 रन का पीछा करते हुए वेस्टइंडीज की टीम ने स्पिन गेंदबाजों रमेश मेंडिस और लसिथ इम्बुलदेनिया की फिरकी के आगे घुटने टेक दिए। टीम ने चौथी पारी में 18 रन पर ही छह विकेट गंवा दिए थे लेकिन एनक्रुमाह बोनर (नाबाद 18) और जोशुआ डा सिल्वा (नाबाद 15) ने सातवें विकेट के लिए 34 रन की अटूट साझेदारी कर खराब रोशनी के कारण खेल जल्दी खत्म होने तक टीम को कोई और नुकसान नहीं होने दिया। वेस्टइंडीज को मैच के पांचवें और आखिरी दिन जीत के लिए और 296 रन की जरूरत है जबकि श्रीलंका को सिर्फ चार विकेट की दरकार है। मेंडिस ने 17 रन देकर चार विकेट लिए जबकि बायें हाथ के स्पिनर इम्बुलदेनिया ने 18 रन देकर दो विकेट लिए।

श्रीलंका की पहली पारी में 386 रन के जबाव में वेस्टइंडीज की टीम अपने कल के स्कोर में छह रन और जोड़कर 230 रन पर ऑल आउट हो गई। श्रीलंका ने पहली पारी में 156 रन की बढ़त लेने के बाद दूसरी पारी में आक्रामक बल्लेबाजी करते हुए 40.5 ओवर में चार विकेट पर 191 रन बनाकर पारी घोषित कर दी। पहली पारी में 147 बनाने वाले दिमुथ करुणारत्ने ने दूसरी पारी में 83 रन बनाये जबकि अनुभवी एंजेलो मैथ्यूज ने दो छक्के और चार चौको की मदद से नाबाद 69 रन की पारी खेली।

नस्लीय टिप्पणी कांड में इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन पर गिरी गाज, बीबीसी ने लिया सख्त एक्शन

नई दिल्ली। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेट कप्तान माइकल वॉन को बुधवार को बीबीसी ने अपनी अपने कमेंट्री पैनल से हटा दिया है। वॉन पर ये कार्रवाई नस्लीय टिप्पणी करने के आरोप में की गई है। वॉन अगले महीने ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच होने वाली एशेज सीरीज में कमेंट्री करने वाले पैनल का हिस्सा थे। लेकिन अब वो इस सीरीज में कमेंट्री नहीं कर पाएंगे। माइकल वॉन पर आरोप है कि साल 2009 में उन्होंने एक मैच के दौरान यॉर्कशर के पूर्व कप्तान अजीम रफीक पर नस्लीय टिप्पणी की थी। वॉन ने खुद पर लगे आरोपों को निराधार बताया और कहा कि उनकी प्रतिष्ठा को गलत तरीके से खराब करने की कोशिश की जा रही है। ये सबसे बुरी चीज है जो मैंने जीवन में अनुभव की है। बीबीसी ने कहा कि माइकल वॉन क्रिकेट में एक अलग स्टोरी में जुड़े हुए हैं। इसलिए उनके लिए ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ऐशज सीरीज के कवरेज के लिए जुड़ने का ये वर्तमान में उचित समय नहीं है। गौरतलब है कि पाकिस्तान के पूर्व तेज गेंदबाज नावेद उल हसन राणा ने भी बताया था कि उन्होंने माइकल वॉन को नस्लीय टिप्पणी करते हुए सुना था। माइकल वॉन इंग्लैंड के सफलतम कप्तानों में से एक हैं। साल 2004 में उनकी कप्तानी में इंग्लैंड ने 18 साल बाद एशेज सीरीज जीती थी। वॉन ने 82 टेस्ट मैचों में 41.44 की औसत से 5719 रन बनाए।

मतदाता जागरुकता को जिलाधिकारी ने दिया निर्देश

भदोही। मतदाता जागरुकता अभियान को गति प्रदान करने के निमित्त जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कैंडल मार्च निकालने का आदेश दिया है। साथ ही यह भी ताकीद किया है कि मार्च निकालने के उपरांत उसकी फोटो ग्रुप पर शेयर की जाए। जिलाधिकारी ने 25 नवंबर को डीघ, ज्ञानपुर व औराई ब्लॉक के सभी ग्रामों में और 27 नवंबर को भदोही, सुरियावां व अभोली ब्लॉक के सभी ग्रामों में कैंडल मार्च निकालने का आदेश दिया है। इसके अलावा 26 नवंबर को साढ़े चार बजे वीएन जीआईसी में सभी ग्राम प्रधान, पंचायत सहायक, स्वक्षाग्रही, सचिव रोजगार सेवकों की मौजूदगी में विशाल मशाल जुलूस निकाला जाएगा। मतदाता जागरुकता को लेकर आयोजित मशाल जुलूस की अध्यक्षता जिलाधिकारी करेंगी। जिलाधिकारी ने सभी सचिव को निर्देशित किया कि सभी ग्राम पंचायतों में कैंडल जुलूस का आयोजन कर फोटो भेजें।

रोहित शर्मा-विराट कोहली के न होने पर पहले टेस्ट में ऐसी हो सकती है भारत की प्लेइंग टीम

नई दिल्ली। टी-20 सीरीज में सफाया करने के बाद टीम इंडिया अब न्यूजीलैंड को हराकर वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप का बदला लेने उतरेगी।

कानपुर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में होने वाला पहला टेस्ट विराट कोहली, रोहित शर्मा, ऋषभ पंत, जसप्रीत बुमराह ,मोहम्मद शमी और लोकेश राहुल जैसे खिलाड़ियों की गैरमौजूदगी में भी रोमांचक होने की उम्मीद है। इन सभी खिलाड़ियों के न होने पर इस टेस्ट में नए कॉम्बिनेशन आजमाए जा सकते हैं। राहुल और रोहित की गैरमौजूदगी में मयंक अग्रवाल और शुभमन गिल के पारी की शुरूआत करने की उम्मीद है। राहुल जांघ की मांसपेशियों में खिंचाव के कारण टेस्ट सीरीज से बाहर हो गए और उनकी जगह टीम में सूर्यकुमार यादव को शामिल किया गया है। अपना स्थान गंवाने का दबाव झेल रहे रहाणे, विराट की अनु?पस्थिति में टीम के कप्तान होंगे, तो एक स्थान तो पक्का हो गया। उन्होंने मैच से एक दिन श्रेयस अय्यर के खेलने की पुष्टि कर दी है, जो कि विराट की जगह नंबर चार पर खेल सकते हैं। नंबर तीन पर पहले की ही तरह चेतेश्वर पुजारा खेलेंगे। छठे नंबर पर अक्सर विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत खेलते हैं, लेकिन उनके न होने पर ऋद्धिमान साहा को मौका मिलना तय है। रविचंद्रन अश्विन और रविंद्र जडेजा भारत के दो प्रमुख स्पिनर होंगे और भारत इसी के साथ दो तेज गेंदबाजों को खिलाएगा, जिसमें इशांत शर्मा, उमेश यादव या मोहम्मद सिराज में से किसी एक को बाहर बैठना होगा। 11वें नंबर का खिलाड़ी छठा बल्लेबाज, तीसरा स्पिनर या तीसरा तेज गेंदबाज हो सकता है। उम्मीद है कि अक्षर पटेल ही तीसरे स्पिनर होंगे, लेकिन यह फैसला परिस्थितियों को देखकर लिया जाएगा।

बांग्लादेश के टी-20 कप्तान महमूदुल्लाह ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास का ऐलान किया

नई दिल्ली। बांग्लादेश के टी-20 कप्तान महमूदुल्लाह ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने का ऐलान किया है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने बुधवार को इसकी पुष्टि की। महमूदुल्लाह ने इस साल जिम्बाब्वे के खिलाफ टेस्ट में वापसी की थी। महमूदुल्लाह ने इस टेस्ट मैच में पहली पारी में 150 रन की शानदार पारी खेली थी। ये उनके टेस्ट करियर का बेस्ट स्कोर था। उन्होंने अपने साथियों को पहले ही अपने संन्यास के बारे में जानकारी दे दी थी। महमूदुल्लाह ने ये साफ कर दिया है कि वो वनडे और टी-20 इंटरनेशनल खेलना जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि जिस फॉर्मेट का मैं इतने लंबे समय से हिस्सा रहा हूं, उसे छोड़ना आसान नहीं है। उन्होंने कहा,' मैंने हमेशा ऊंचाई पर जाने के बारे में सोचा था और मेरा मानना है कि यह मेरे टेस्ट करियर को खत्म करने का सही समय है। जब मैं टेस्ट टीम में लौटा तो तब मेरा समर्थन करने के लिए मैं बीसीबी अध्यक्ष का आभार व्यक्त करना चाहता हूं। मैं अपने साथियों और सहयोगी स्टाफ को हमेशा मुझे प्रोत्साहित करने और मेरी क्षमता पर विश्वास करने के लिए धन्यवाद देता हूं। बांग्लादेश के लिए टेस्ट क्रिकेट खेलना एक बड़े सम्मान और सौभाग्य की बात है और मैं कई यादों को संजो कर रखूंगा।

उन्होंने आगे कहा कि हालांकि मैं टेस्ट क्रिकेट से रिटायर हो रहा हूं लेकिन वनडे और टी-20 इंटरनेशनल मैच खेलना जारी रखूंगा। व्हाइट बॉल क्रिकेट में अपने देश के लिए बेस्ट देना जारी रखूंगा। 2009 में वेस्टइंडीज के खिलाफ डेब्यू करने करने वाले महमूदुल्लाह ने 33.49 की औसत से लगभग 3000 रन बनाए। उन्होंने टेस्ट में पांच सेंचुरी लगाई है।

4.23 लाख लोगों को खिलाई गई फाइलेरिया की दवा

अखंड भारत संदेश

दवा खाने के बाद उल्टी एक सामान्य लक्षण : सीएमओ

भदोही। फाइलेरिया से लोगों को बचाने के लिए चलाए जा रहे अभियान के तहत अब तक चार लाख से अधिक लोगों को फाइलेरिया की दवा खिलाई गई। जिले में 22 नवंबर से शुरू हुआ मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) राउंड में अब तक 4,23,123 लाभार्थियों ने फाइलेरिया की दवा खाई है। खास बात यह है कि यह अभियान कोविड-19 के दिशा-निर्देशों के अनुसार शारीरिक दूरी दो गज की दूरी, मास्क और हाथों की साफ-सफाई का अनुपालन करते हुए चलाया जा रहा है।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा. संतोष कुमार चक ने बताया कि प्रशिक्षित स्वास्थ्य कार्यकर्ता ने बुधवार को डीईसी और अल्बंडाजोल (पेट के कीड़े मारने की दवा) की निर्धारित खुराक अपने सामने खिलाई। इस दौरान बच्चे की आयु और लंबाई का विशेष ध्यान रखा जा रहा है। सीएमओ ने बताया कि दवा खिलाने के कुछ देर बाद बच्चे को उल्टी होने लगी, ऐसा होने पर यह मान लेना चाहिए कि शरीर में फाइलेरिया के ज्यादा कृमि मौजूद हैं। उन्होंने बताया कि स्वास्थ्य कार्यकर्ता सभी वर्गों के लाभार्थियों को घर-घर जाकर फाइलेरिया से सुरक्षित रखने के लिए निर्धारित खुराक अपने सामने मुफ्त में खिला रहे हैं। किसी भी स्थिति में दवा का वितरण नहीं किया जा रहा है। जिला मलेरिया अधिकारी राम आसरे पाल ने बताया कि फाइलेरिया रोधी दवाएं पूरी तरह सुरक्षित हैं और रक्तचाप, शुगर, अर्थराइटिस या अन्य सामान्य रोगों से ग्रसित व्यक्तियों को भी ये दवाएं खानी हैं। सामान्य लोगों को इन दवाओं के खाने से किसी भी प्रकार के दुष्प्रभाव नहीं होते हैं और अगर किसी को दवा खाने के बाद उल्टी, चक्कर, खुजली या जी मिचलाने जैसे लक्षण होते हैं तो यह इस बात का प्रतीक है कि उस व्यक्ति के शरीर में फाइलेरिया के कृमि मौजूद हैं, दवा खाने के बाद से ऐसे लक्षण उत्पन्न होते हैं। सामान्यतः ये लक्षण स्वतः समाप्त हो जाते है। परंतु ऐसी किसी भी परिस्थिति के लिए प्रशिक्षित रैपिड रिस्पॉस टीम तैनात है और उन्हे तुरंत उपचार के लिए तुरंत बुलाया जा सकता है।

लाला नगर मे अभियान चला कर बनाया गया सदस्य

गोपीगंज। बुधवार को विकास खंड औराई के लाला नगर में भाजपा अल्प संख्यक मोर्चा के जिला अध्यक्ष सिराज अख्तर के नेतृत्व में सदस्यता अभियान के तहत शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के मुख्य अतिथि रहे भाजपा जिला अध्यक्ष विनय कुमार श्रीवास्तव की मौजूदगी में गांव के सैकड़ों अल्पसंख्यक समुदाय के लोग पार्टी की सदस्यता ग्रहण की और पार्टी में शामिल हुए। जिला अध्यक्ष के साथ सुनील मिश्र ने पार्टी की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए कहा कि केंद्र व प्रदेश सरकार बिना किसी भेदभाव के हर वर्ग के विकास के लिए काम कर रही है। अल्पसंख्यक मोर्चा के जिला अध्यक्ष सिराज अख्तर ने कहा कि अल्पसंख्यक समाज का हित भाजपा मे ही सुरक्षित है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने की निर्वाचक नामावलियों की समीक्षा

अखंड भारत संदेश

भदोही। मुख्य निर्वाचन अधिकारी अजय कुमार शुक्ल की अध्यक्षता में विधानसभा क्षेत्रों की निर्वाचक नामावलियों की समीक्षा की गई। वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिए हुई समीक्षा के दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी/ जिलाधिकारी ने सूची का सत्यापन, फीडिंग, अपडेशन, पोलिंग स्टेशनों की स्थिति, रैंप, शौचालय, फर्नीचर, पेयजल, बिजली आदि की विस्तार से जानकारी दी। मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने निर्देशित किया कि प्राप्त फार्मों में बहुत ही कमियां प्रकाश में आ रही हैं। इस पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। प्रत्येक नए मतदाता के फार्मों को एआरओ सही चेकिंग कर अपडेट कराएं। उन्होंने कहा कि इस कार्य में और तेजी लाने की जरूरत है। क्रास चेकिंग/ सुपर चेकिंग समय-समय पर की जाए, ताकि मतदाता सूची में किसी प्रकार की गड़बड़ी न हो सके।

आन लाइन समीक्षा बैठक में मौजूद डीएम, एसपी

वीडियो कांफ्रेंसिंग में जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी आर्यका अखौरी, पुलिस अधीक्षक डा. अनिल कुमार, अपर जिलाधिकारी (प्रशासन)/उप जिला निर्वाचन अधिकारी, सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी मौजूद रहे।

सलमान बट ने बताया, अक्षर पटेल से बेहतर क्यों हैं रविंद्र जडेजा

नई दिल्ली। भारत ने दुनिया को कई दिग्गज स्पिनर दिए हैं। टीम इंडिया का स्पिन विभाग फैंस, क्रिकेटरों और विशेषज्ञों के बीच हमेशा चर्चा का विषय होता है। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान सलमान बट ने भारतीय टीम के मौजूदा स्पिनरों को लेकर अपनी राय व्यक्त की है। उन्होंने टीम इंडिया के सीनियर स्पिनर रविंद्र जडेजा और टीम इंडिया के भविष्य के स्टार अक्षर पटेल के बीच तुलना की है। उनका मानना है कि रविंद्र जडेजा अक्षर पटेल से बेहतर स्पिनर हैं। सलमान बट ने अपने ऑफिशियल यूट्यूब चैनल में अपलोड वीडियो में कहा,'अक्षर पटेल बेहद प्रतिभाशाली हैं, लेकिन रविंद्र जडेजा एक संपूर्ण खिलाड़ी हैं। चाहे वह बल्लेबाजी हो, गेंदबाजी हो या फील्डिंग, वह एक शानदार टीम मैन हैं। तो निश्चित रूप से जब एक खिलाड़ी जाता है।

पीएम नरेंद्र मोदी से मिलीं ममता बनर्जी, कहा- संघीय ढांचे को बेवजह छेड़ना ठीक नहीं है

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी की मुखिया ममता बनर्जी ने बुधवार को दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। पीएम मोदी से मुलाकात के बाद ममता बनर्जी ने कहा कि उनकी यह मुलाकात राज्य से जुड़े कई मुद्दों को लेकर हुई है।

पीएम से मुलाकात के दौरान ममता बनर्जी ने बीएस एफ के अधिकार क्षेत्र को बढ़ाने के मुद्दे पर भी बात की हैं। पीएम मोदी से मुलाकात के बाद दिल्ली में बैठक के बारे में जानकारी देते हुए ममता बनर्जी ने कहा 'मैंने त्रिपुरा के बारे में चर्चा की, त्रिपुरा हमारा दुश्मन नहीं है। मैं सभी एजेंसियों की इज्जत करती हूं लेकिन कानून-व्यवस्था जो राज्य का विषय है इससे उसमें टकराव होता है। मैंने कहा कि संघीय ढांचे को बेवजह छेड़ना ठीक नहीं है, इसके बारे में आप चर्चा करो और त्रिपुरा के कानून को वापस लो। मैंने कहा ?कि राजनीतिक तौर पर आपके साथ हमारे जो भी अंतर हैं वो

रहेंगे क्योंकि आपकी और हमारी पार्टी की विचारधारा अलग है। लेकिन ऐसा न हो कि केंद्र और राज्य के रिश्तों में कोई असर पड़े। राज्य का विकास होने से केंद्र का विकास होता है।'

ममता बनर्जी ने कहा 'मैंने राज्य से जुड़े कई मुद्दों पर आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। हमने बीएसएफ के अधिकार क्षेत्र के विस्तार के मुद्दे पर भी बात की और इस फैसले को वापस लेने की मांग की। बता दें कि केंद्र की ओर से बीएसएफ के अधिकार क्षेत्र को बढ़ाने जाने का बंगाल सरकार विरोध कर रही है। भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने ममता बनर्जी से मुलाकात की है। सुब्रमण्यम स्वामी की गिनती भाजपा के असंतुष्ट नेताओं में होती है। बुधवार को दोनों नेताओं की मुलाकात दिल्ली स्थित साउथ एवेन्यू में हुई थी। सुब्रमण्यम स्वामी यहां ममता बनर्जी से मुलाकात करने पहुंचे थे। बताया जा रहा है कि सुब्रमण्यम स्वामी करीब 20-25 मिनट तक ममता बनर्जी के साथ रहे। ममता बनर्जी से मुलाकात के बाद स्वामी ने टीएमसी में शामिल होने के सवाल पर जवाब देते हुए कहा मैं तो आलरेडी जॉइंड हूं। मैं तो सभी समय उनके साथ हीं....हालांकि, इसके बाद उन्होंने साफ जवाब नहीं दिया।

दिल्ली में विपक्ष को साधने के बाद अब 'दीदी' चलीं महाराष्ट्र, सीएम उद्धव और शरद पवार से मिल बनाएंगी रणनीति

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी लगातार विपक्ष को एकजुट करने में जुटी हुई हैं। नई दिल्ली में कुछ नेताओं को टीएमसी की सदस्यता दिलाने के बाद अब ममता बनर्जी जल्द ही महाराष्ट्र का रूख करेंगी। ममता बनर्जी 30 नवंबर को मुंबई जाएंगी। मुंबई यात्रा के दौरान वो महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के प्रमुख शरद पवार से भी मुलाकात करेंगी।

सीएम योगी ने अपनों में भरा जोश, 52 सीटों पर दिया जीत का गुरुमंत्र

कानपुर। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा और सीएम योगी आदित्यनाथ ने सम्मेलन में अपरोक्ष रूप से कानपुर-बुंदेलखंड के बूथ अध्यक्षों को देवतुल्य या भाग्य विधाता बताकर उनकी पीठ थपथपाई। लोकसभा की तरह विधानसभा चुनाव में यहां क्लीन स्वीप करने का गुरुमंत्र भी दिया। जेपी नड्डा ने बूथ अध्यक्षों की सराहना करते हुए यह कहकर जोश भरा कि ये लोग निष्ठा पहले 2014 फिर वर्ष 2017, फिर वर्ष 2019 में साबित कर चुके हैं। धूप और उत्साह से सामने दिख रहे बूथ अध्यक्ष एक बार फिर वर्ष 2022 में भी कानपुर-बुंदेलखंड क्षेत्र में जीत का नया रिकार्ड बनाएंगे। वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में क्षेत्र की दसों सीटों पर भाजपा ने जीत कायम की थी। कानपुर-बुंदेलखंड क्षेत्र की 52 में से 47 विधानसभा सीटों पर भाजपा का कब्जा है। अबकी बार 52 में 52 पर कमल खिलाना है, वह आपके उत्साह से सच साबित होने वाला है। पार्टी के देवतुल्य कार्यकर्ताओं के चेहरों पर टपक रहा नूर साफ संकेत दे रहा है कि कानपुर-बुंदेलखंड की धरती पर किसी

विपक्षी का खाता नहीं खुलने देंगे। योगी ने भी बूथ अध्यक्षों की जमकर तारीफ की। कहा कि कोरोना काल में जहां विपक्षी और सेवादार कहलाने वाले घरों में क्वारंटीन थे, तभी सामने बैठे बूथ अध्यक्ष जान जोखिम में डाल सेवा ही संगठन नारे को सार्थक करके मानवता की सेवा की। अब यही लोग घर-घर जाकर हर एक सदस्य से संक्रमण काल की सेवाओं को जाकर बताएंगे तो अगले साल होने वाले चुनाव में फिर कमल का राज होगा। योगी ने भी बूथ अध्यक्षों में यह कहकर उत्साह भरा कि विपक्षियों में तो परिवारवाद ही होता है पर भाजपा में सामने बैठे बूथ अध्यक्ष पता नहीं कब मंच पर बैठ जाएं। गैलरी से मंच पर बैठने का सपना केवल भाजपा में ही साकार होता है। नड्डा ने निरालानगर के सम्मेलन में अपने 33 मिनट के भाषण में 13 बार बूथ अध्यक्षों का नाम लिया। कहा कि बूथ अध्यक्ष संगठन की निचली इकाई नहीं बल्कि सरकार बनाने के विधाता हैं। यह भी कहा कि बूथ अध्यक्षों को तो पीएम मोदी वैसे ही देवतुल्य बताते हैं। कहा कि बूथ अध्यक्ष अपनी बातों को जनता तक पहुंचाएं। भाजपा अध्यक्ष ने अपने उदबोधन की शुरूआत रानी लक्ष्मीबाई का नाम लेकर उनकी वीरता को कानपुर बुंदेलखंड की धरती से जोड़ा।

सत्यपाल मलिक कब और किसके कहने पर राज्यपाल पद से देंगे इस्तीफा? दिया यह जवाब

नई दिल्ली। किसान आंदोलन पर अपने बयानों से मोदी सरकार को असहज करने वाले मेघालय के राज्यपाल सत्यपाल मलिक इन दिनों फिर सुर्खियों में हैं। उन्होंने कहा है कि किसानों की सभी मांगें नहीं मानी गई हैं। एमएसपी उनकी मूल मांग है। सरकार को इस मांग को स्वीकार कर एक कमेटी बनानी चाहिए। अगर वे ऐसा करते हैं तो किसान अपना विरोध वापस ले लेंगे। एक टीवी इंटरव्यू में सत्यपाल मलिक से उनके इस्तीफे के बारे में पूछा गया था। आज न्यूज एजेंसी एएनआई को दिए इंटरव्यू में भी उनसे यह सवाल पूछा गया था। इसके जवाब में उन्होंने कहा, "जिन लोगों ने मुझे नियुक्त किया है। उनसे इस आशय का कोई संकेत मिलते ही मैं राज्यपाल के पद से इस्तीफा दे दूंगा। राज्यपाल मलिक ने कहा, "मैं किसानों से एमएसपी और अन्य मुद्दों के समाधान के लिए गठित समितियों पर आश्वासन प्राप्त करने और घर जाने का आग्रह करूंगा। मैं उन्हें सलाह दूंगा कि वे इसे (विरोध) अनावश्यक रूप से न बढ़ाएं। एमएसपी उनकी मूल मांग है और मैं इस मुद्दे पर उनके साथ हूं। मलिक ने कहा, "मैंने समाधान खोजने की दिशा में आगे बढ़ने और कृषि कानूनों को निरस्त कर एक बड़ा दिल दिखाने के लिए पीएम को बधाई दी है। यह एक अच्छा कदम है।

कांग्रेस को बीजेपी ने दिया झटका

सोनिया गांधी के गढ़ रायबरेली से विधायक अदिति सिंह भाजपा शामिल

लखनऊ। प्रदेश में जनाधार वापसी के प्रयास में जुटी कांग्रेस को भाजपा ने बुधवार को एक और झटका दे दिया। रायबरेली सदर से पार्टी की फायर ब्रांड विधायक अदिति सिंह ने भाजपा का दामन थाम लिया। उनके साथ भाजपा की सदस्यता लेने वालों में आजमगढ़ की सगड़ी सीट से बसपा विधायक वंदना सिंह भी शामिल हैं। दोनों विधायकों को प्रदेश भाजपा मुख्यालय में प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह ने सदस्यता दिलाई। उन्होंने कहा कि इन दो मजबूत महिला विधायकों में से एक रायबरेली में सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी को टक्कर देंगी तो दूसरी आजमगढ़ में अखिलेश यादव को घेरेंगी। कभी प्रियंका गांधी की प्रशंसक रहीं अदिति के तेवर पिछले काफी दिनों से बगावती थे। वो अपने तल्ख तेवरों के चलते काफी दिनों से चर्चा में

हैं। इस कारण वो पार्टी आलाकमान को भी असहज कर रही थीं। अदिति को राजनीति विरासत में अपने पिता अखिलेश सिंह से मिली, जो कद्दावर नेता माने जाते थे। वे रायबरेली से कांग्रेस और पांच बार निर्दलीय विधायक रहे हैं।

अदिति सिंह के भाजपा में जाने की अटकलें काफी पहले से लगाई जा रही थीं। बीते कुछ समय में वे कई मौकों पर मोदी सरकार की तारीफ करती रही हैं। कश्मीर से धारा-370 हटाए जाने पर जब उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का समर्थन किया तो कांग्रेस आलाकमान से उनके रिश्ते और तल्ख हो गए थे। हाल में तीन कृषि कानून वापस लेने पर प्रियंका गांधी की प्रतिक्रिया पर भी उन्होंने पलटवार किया था कि बिल लाए गए तब भी उन्हें तकलीफ थी, वापस हुए तो भी वो परेशान हैं। आखिर वे चाहती क्या हैं। भाजपा में शामिल होने वाली आजमगढ़ की सगड़ी से बसपा विधायक वंदना सिंह के पति स्व. सर्वेश सिंह सीपू भी विधायक रहे हैं। उनके ससुर स्व. रामप्यारे सिंह भी कैबिनेट मंत्री रह चुके हैं। राज्यसभा चुनाव के वक्त बसपा से बगावत करने वाले आठ विधायकों में वंदना भी शामिल थीं। तब बसपा ने इन सभी को निष्कासित कर दिया था। इस मौके पर स्वतंत्रदेव सिंह ने कहा कि भाजपा द्वारा महिला सशक्तीकरण की दिशा में उठाए गए अभूतपूर्व कदमों से प्रभावित होकर कांग्रेस विधायक अदिति सिंह और बसपा विधायक वंदना सिंह ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की है। इस मौके पर पार्टी की ज्वाइनिंग कमेटी के अध्यक्ष लक्ष्मीकांत बाजपेयी, प्रदेश उपाध्यक्ष दयाशंकर सिंह मौजूद रहे।

अब सिंगल डोज वाली वैक्सीन से कोरोना के खिलाफ जंग, दिसंबर तक होगी स्पुतनिक लाइट की लॉन्चिंग

नई दिल्ली। कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में भारत को इस साल के अंत तक स्पुतनिक-लाइट वैक्सीन के रूप में एक और बड़ा हथियार मिलने जा रहा है। बुधवार को रशियन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट फंड (आरडीआईएफ) के सीईओ किरिल दिमित्रीव ने बताया कि दिसंबर तक भारत में स्पुतनिक लाइट वैक्सीन लॉन्च हो जाएगी। स्पुतनिक लाइट एक सिंगल डोज वैक्सीन है। स्पुतनिक लाइट में भी वही कंपोनेंट है, जो स्पुतनिक-वी में है। स्पुतनिक वी को भारत और अन्य जगहों पर इमरजेंसी उपयोग के लिए अधिकृत किया गया है। लाइट टीके को कई देशों में मंजूरी भी मिल चुकी है लेकिन भारतीय विशेषज्ञ इस बात का पता लगाने में जुटे हुए है क्या भारतीय पर यह वैक्सीन अच्छा काम कर रही है या नहीं। स्पुतनिक लाइट वैक्सीन को भारतीय आबादी पर तीसरे चरण की ब्रिजिंग परीक्षण करने के लिए ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इंडिया (डीसीजीआई) की पहले ही मंजूरी मिल चुकी है। डॉ रेड्डीज लैबोरेट्रीज ने भारत में स्पुतनिक वी वैक्सीन के तीसरे चरण का परीक्षण करने के लिए पिछले साल रूसी प्रत्यक्ष निवेश कोष (आरडीआईएफ) के साथ भागीदारी की थी। द लैंसेट में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया था कि स्पुतनिक लाइट ने कोविड-19 के खिलाफ 78.6 से 83.7 प्रतिशत प्रभावकारिता दिखाई, जो कि अधिकांश दो-शॉट टीकों की तुलना में काफी अधिक है। अध्ययन अर्जेंटीना में कम से कम 40,000 बुजुर्गों पर आयोजित किया गया था।

अमित शाह की रणनीति का मुकाबला कर पाएंगे अखिलेश-जयंत? जाटलैंड में बीजेपी के लिए रणनीति बनाएंगे 'चाणक्य'

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनावों का ऐलान भले ही अभी नहीं हुआ है लेकिन सभी राजनीतिक दलों ने कमर कस ली है और मैदान में कूद गए हैं। कहा जाता है कि उत्तर प्रदेश में सरकार बनाने का फैसला पश्चिमी उत्तर प्रदेश करता है, क्योंकि इस हिस्से में राज्य की करीब एक तिहाई विधानसभा सीटें हैं। पिछली बार भाजपा ने यहां जाट-मुस्लिम गठजोड़ को तोड़ने में कामयाबी हासिल कर ली थी और ज्यादातर जाट वोट उसके हिस्से में आये थे। शायद यही वजह है कि भाजपा ने अपने सबसे दमदार रणनीतिकार केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह को इस इलाके की चुनावी जिम्मेदारी सौंपी है। अब देखना यह है कि अमित शाह की रणनीति का मुकाबला सपा प्रमुख अखिलेश यादव और रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी की जोड़ी कर पाएगी। साल 2014 के चुनाव से पहले अमित

शाह को राष्ट्रीय महासचिव के तौर पर उत्तर प्रदेश की जिम्मेदारी मिली थी और उनकी रणनीति से भाजपा यहां करीब 70 लोकसभा सीटें हासिल करने में कामयाब हुई थी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गन्ना किसानों को उनका चीनी मिलों पर बकाया चुकाने में भी काफी कामयाबी हासिल की है। इस इलाके में एक जमाने तक पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह का काफी प्रभाव माना जाता था और राष्ट्रीय लोकदल यहां अब भी अपने असर को बनाए रखने की कोशिश कर रहा है। पार्टी के नेता जयंत चौधरी आगामी चुनावों के लिए, समाजवादी पार्टी (सपा) के साथ समझौता करने के लिए तैयार हो गए हैं और बताया जाता है कि सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव उन्हें 30 से ज्यादा सीटें देने को तैयार हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 23 जिले और 136 विधानसभा सीटें हैं। पिछले विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने यहां 103 सीटें जीती थीं।करीब एक साल से चल रहे किसान आंदोलन की वजह से यह प्रदेश ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है।

मालेगांव ब्लास्ट मामले में आज विशेष कोर्ट में पेश हुई बीजेपी सांसद प्रज्ञा ठाकुर

नई दिल्ली। साल 2008 के मालेगांव ब्लास्ट मामले में आरोपी बीजेपी सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर आज मुंबई के एक विशेष एनआईए ट्रायल कोर्ट में पेश हुई हैं। बता दें कि मालेगांव विस्फोट से जुड़े मामले में मुंबई की स्पेशल एनआईए ट्रायल कोर्ट ने बीजेपी सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर से कहा कि जब भी कोर्ट उन्हें इस मामले में समन करे तो उन्हें कोर्ट में पेश होना होगा। महाराष्ट्र के मालेगांव विस्फोट मामले में आरोपी, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की भोपाल से सांसद प्रज्ञा सिंह ठाकुर बुधवार को यहां राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण की विशेष अदालत में पेश हुईं।

मिशन 2022: 15 दिन का सदस्यता अभियान चलायेगी कांग्रेस, एक करोड़ को जोड़ने का लक्ष्य

लखनऊ। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जोर-शोर से जुटी कांग्रेस 26 नवंबर से दस दिसम्बर के बीच 15 दिन का सदस्यता अभियान चलायेगी। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू ने बुधवार को पत्रकारों से बातचीत में कहा कि संविधान दिवस के मौके पर शुरू किये जा रहे अभियान में 'एक परिवार, नये सदस्य चार' के नारे के तहत 15 दिन में कांग्रेस के एक करोड़ नये सदस्य बनाये जायेंगे। इस अभियान के तहत हर विधानसभा में न्याय पंचायतों या वार्डों के आधार पर पांच सदस्यीय टीमों का गठन होगा। हर टीम का एक प्रभारी होगा। प्रदेश में लगभग 23000 सदस्यता प्रभारी बनाये जायेंगे। उन्होने बताया कि मोबाइल नम्बर 8230005000 पर मस्डि काल कर कांग्रेस का सदस्य बना जा सकेगा। इस दिन गांव, बस्तियों, वार्डों में 'भीम चर्चा' और रात्रि भोज का आयोजन होगा। प्रत्येक जिला/शहर/नगर, जिले के सभी ब्लाक, शहर/नगर के सभी वार्ड, सभी न्याय पंचायत एवं ग्राम सभा स्तर पर सदस्यता अभियान चलाया जायेगा।

झुका पाकिस्तान, अब अफगानिस्तान के लोगों की मदद करेगा भारत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान ने कहा है कि अफगानिस्तान के लिए मानवीय आधार पर भेजी जा रही 50,000 मीट्रिक टन गेहूं और जीवन रक्षक दवाओं की खेप उसकी सीमा से ले जाने की मंजूरी दिए जाने के बारे में भारत को आधिकारिक तौर पर सूचित कर दिया गया है। पाकिस्तान ने इसे मानवता के मकसद से अपवाद के तौर पर दी गई इजाजत बताया है। पाकिस्तान के पीएम इमरान खान ने 22 नवंबर को घोषणा की थी कि उनकी सरकार भारत को पारगमन के तौर-तरीकों को अंतिम रूप देने के बाद अपने क्षेत्र के माध्यम से अफगानिस्तान में गेहूं की खेप भेजने की इजाजत देगी। पाकिस्तान विदेश ने बताया है कि इस संबंध में पाकिस्तान सरकार के फैसले से औपचारिक रूप से विदेश मंत्रालय में भारत मामलों के प्रभारी को अवगत करा दिया गया है। कहा कि पाकिस्तान ने अफगान लोगों के प्रति सद्भावना के रूप में भारत से 50,000 मीट्रिक टन गेहूं और जीवन रक्षक दवाओं की खेप ले

जाने की अनुमति देने का फैसला किया है। मौजूदा वक्त में, पाकिस्तान केवल अफगानिस्तान को भारत को माल निर्यात करने की अनुमति देता है, लेकिन सीमा पार से किसी दोतरफा व्यापार की अनुमति नहीं देता है। विदेश कार्यालय ने कहा है कि अफगानिस्तान में गेहूं और दवाओं को 'मानवीय उद्देश्यों के लिए अपवाद के आधार पर वाघा सीमा' से प्रवेश करने की अनुमति दी जाएगी। पिछले महीने भारत ने मानवीय सहायता के रूप में अफगानिस्तान को 50,000 मीट्रिक टन गेहूं भेजने की घोषणा की थी और पाकिस्तान से वाघा सीमा के माध्यम से खाद्यान्न भेजने का अनुरोध किया था। अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी ने भी प्रधानमंत्री इमरान खान से अनुरोध किया था कि वह भारत को पाकिस्तान के रास्ते गेहूं परिवहन करने की अनुमति दें। उन्होंने सुझाव दिया था कि तालिबान सरकार भारत से मानवीय सहायता स्वीकार करने को तैयार है। भारत ने अफगानवासियों की मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति में योगदान किया है और इसके तहत पिछले एक दशक में अफगानिस्तान को 10 लाख मीट्रिक टन से अधिक गेहूं उपलब्ध कराया गया है।

लोकतंत्र पर चर्चा को लेकर अमेरिका ने ताइवान को बुलाया तो भड़का चीन, कहा यूएस को होगा भारी नुकसान

बीजिंग। समिट फॉर डेमोक्रेसी इवेंट में अमेरिका ने कई देशों को बुलाया है। लेकिन रूस, पाकिस्तान और चीन जैसे देशों को बाहर रखा है। इस समिट में अमेरिका ने ताइवान को भी बुलाया है। ताइवान ने जो बाइडेन सरकार के इस कदम का स्वागत किया है। लेकिन अमेरिका के इस कदम से चीन एक बार फिर भड़क गया है। चीन ने कहा है कि ताइपे को ग्लोबल मंच देने से अमेरिका को चोट पहुंचेगी। चीन ने इस आयोजन का मकसद अमेरिकी जियोपॉलिटिकल गेम को आगे बढ़ाना बताया है। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लिजियन ने मीडिया से बात करते हुए कहा है कि चीन ताइवान को लोकतंत्र के शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए अमेरिकी अधिकारियों द्वारा ताइवान के निमंत्रण का कड़ा विरोध करता है। दुनिया में सिर्फ एक चीन है और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की सरकार चीन का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र कानूनी सरकार है। झाओ ने आगे कहा कि ताइवान चीन का एक अविभाज्य हिस्सा है और वन चाइना पॉलिसी अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त मानदंड है। ताइवान को चीन का हिस्सा होने के अलावा अंतरराष्ट्रीय कानून में कोई अन्य अंतरराष्ट्रीय दर्जा नहीं है। हम गंभीरता से अमेरिका से वन चाइना पॉलिसी का पालन करने का आग्रह करते हैं।

भारत और फ्रांस की नौसेना ने किया एक साथ ड्रिल

नईदिल्ली। भारत और फ्रांस ने भारतीय तट पर दो दिनी नौसेना अभ्यास की शुरुआत की है। फ्रांसीसी एफएनएस शेवेलियर पॉल और आईएनएस कोलकाता के बीच दो दिनी नौसैनिक अभ्यास ने वायु रक्षा, पनडुब्बी रोधी और जहाज-रोधी युद्ध में टॉप लेवल का प्रदर्शन किया है। इस नेवल ड्रिल में भारत में फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनिन ने भी भाग लिया है। लेनिन ने मामले को लेकर एक ट्वीट में कहा कि एक साथ प्रशिक्षण। भारतीय तट पर एफएनएस शेवेलियर पॉल और आईएनएस कोलकाता के बीच दो दिवसीय नौसैनिक अभ्यास ने वायु रक्षा, पनडुब्बी रोधी और जहाज-रोधी युद्ध में टॉप लेवल का प्रदर्शन किया है। उन्होंने आगे बताया कि हमें हमारी दोनों नौ सेनाओं द्वारा 'प्लग एंड फाइट' क्षमता हासिल करने पर गर्व है।

अखंड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।
मुद्रक/प्रकाशक
स्वामी श्री योगी सत्यम
पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.
UPHIN 2001/9025